बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
विजया VIJAYA | देना DENA

अक्षय्यम्

अक्तूबर–दिसंबर 2023 अंक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर और कोटा का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 05 अक्तूबर, 2023 को जयपुर में क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर और क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा की निरीक्षण बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय समिति सदस्यों के साथ जयपुर अंचल प्रमुख श्री के के चौधरी, उप अंचल प्रमुख श्री सुधांशु शेखर खमारी, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, जयपुर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री दीपक कुमार सिंह, कोटा क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख श्री योगेश यादव और सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र उपस्थित रहे।

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में वार्षिक राजभाषा समारोह 2023 का आयोजन

दिनांक 18 दिसंबर, 2023 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में वार्षिक राजभाषा समारोह – 2023 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला ने की। समारोह में मुख्य अतिथि प्रोफेसर भरत मेहता, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, गुजराती विभाग को मुख्य महाप्रबंधक श्री अजय कुमार खोसला और मुख्य महाप्रबंधक श्री मनमोहन गुप्ता द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह द्वारा स्वागत संबोधन दिया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री पुनीत कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) ने किया।

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका '**अक्षय्यम्**' के अक्तूबर-दिसंबर 2023 अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है।

मुझे आपसे यह साझा करते हुए खुशी हो रही है कि शाखा स्तर से लेकर कॉर्पोरेट स्तर तक, प्रत्येक बड़ौदियन के ईमानदार प्रयासों से बैंक के दिसंबर 2023 तिमाही के नतीजे संतोषजनक रहे हैं और हम सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में दूसरे सबसे बड़े बैंक के रूप में उभर रहे हैं। व्यवसाय के पैमाने पर हमने इस वित्तीय वर्ष की तीन तिमाहियों में अच्छी प्रगति दर्ज की है, मगर अब समय आ गया है कि हम अपने लिए दूरगामी लक्ष्य तय करें। अब हम आने वाले -5- वर्षों के दौरान अपनी मौजूदा बैलेन्स शीट को दुगुना करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। मेरा मानना है कि यदि हम हमारे मौजूदा CGAR को 39.9% के आस-पास भी बरकरार रखेंगे, तो भी यह लक्ष्य अर्जित किया जा सकता है। अगर किसी कारणवश किसी एक वर्ष में अपेक्षित वृद्धि अर्जित न भी हो, तो भी हमें सकारात्मक सोच के साथ इस लक्ष्य को अर्जित करने के लिए पुरजोर प्रयास करने होंगे।

हाल के वर्षों में कमोबेश सभी बैंकों का आस्ति पक्ष मजबूत रहा है। हमारा बैंक भी इस क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र के अग्रणी बैंकों में से है। हालांकि हमें अब आने वाले 3 से 5 वर्ष में आस्ति पक्ष के RAM अर्थात् रिटेल, एग्री और एमएसएमई पोर्टफोलियो को 64% तक बढ़ाने तथा कॉर्पोरेट अग्रिम को 36% के आस-पास रखने का लक्ष्य लेकर चलना होगा। इसके साथ-साथ, संवहनीय व्यवसाय वृद्धि के लिए जरूरी है कि हम अपने देयता पक्ष की ओर भी ध्यान दें और इसके लिए हमें न केवल अपने ग्राहक आधार को बनाए रखना होगा अपितु नए ग्राहकों को बैंक से जोड़ने की रणनीति पर काम करना होगा। प्रतिस्पर्धा के दौर में ग्राहकों को अपने बैंक से जोड़ने के लिए जरूरी है कि हम ग्राहकों की जरूरतों के हिसाब से अपने उत्पादों में जरूरी बदलाव लाएं और अन्य बैंकों की तुलना में कुछ विशेष सुविधाओं की पेशकश करें। इसी सोच के साथ हमने हाल ही में बॉब परिवार खाता, बॉब ब्रो खाता, बॉब एसडीपी की शुरुआत की है जो आने वाले समय में रिटेल देयताओं के क्षेत्र में अपेक्षित वृद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं। वहीं, कासा संग्रहण को गति प्रदान करने के उद्देश्य से चालू खाता व्यापारियों के लिए उनकी सुविधाओं के अनुरूप -10- नए चालू खातों की विस्तृत शृंखला की शुरुआत की गई है। बैंक की मौजूदा बाजार हिस्सेदारी को आने वाले -2- वर्षों में 5.5% के स्तर से बढ़ाते हुए 6% तक ले जाने के संकल्प को पूरा करने की दिशा में इन उत्पादों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

मेरा मानना है कि फीस एवं फ्लो आज के दौर में किसी भी बैंकिंग संस्थान की कार्य-संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं। यदि हमारे सभी साथी फीस एवं फ्लो पर लगातार ध्यान दें तो हमारी लाभप्रदता में भी निश्चित रूप से और वृद्धि होगी। जैसा कि मैंने पूर्व में कई अवसरों पर कहा है, बैंक की लाभप्रदता में कॉस्ट टू इंकम एक बड़ा घटक सिद्ध होने वाला है। आने वाले वर्षों में हम यदि 20% के वार्षिक लाभ का लक्ष्य भी लेकर चलते हैं तो इसके लिए हमें कॉस्ट टू इन्कम को वर्तमान के 47.13% के स्तर से 42% के स्तर तक लाने के प्रयास करने होंगे। इसके लिए हम सभी प्रक्रियाओं के ऑटोमेशन की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं।

बैंकिंग सेवा क्षेत्र है और इस क्षेत्र में आपके उत्पाद कितने ही श्रेष्ठ क्यूँ न हों, भले ही कितनी ही सुविधाओं की पेशकश क्यूँ न की जा रही हो, यदि सेवाओं की डिलीवरी संतोषजनक नहीं होगी तो अपेक्षित व्यवसाय वृद्धि प्राप्त करना संभव नहीं है। एक बैंक के रूप में, हम ग्राहक शिकायत के क्षेत्र में, शून्य सहनशीलता की नीति पर काम कर रहे हैं। अतः फ्रंट लाइन में कार्यरत साथियों से मेरी अपील है कि आइये! इस नए साल में हम 'अधिकतम ग्राहक केन्द्रीयता' को ध्येय बनाते हुए बाज़ार में अधिकतम अवसर तलाश करने की नीति पर ध्यान केन्द्रित करें।

आप सभी जानते ही हैं कि इस वर्ष स्थापना दिवस के अवसर पर हमने भारत सरकार की ईएसजी नीति के अनुरूप 'बॉब अर्थ' के नए लोगो को लाँच किया है। बैलेन्स शीट में ईएसजी प्रकटीकरण के साथ ही बैंक इस क्षेत्र में पर्यावरणीय-समाजोन्मुखी पहलें करने वाले सबसे अग्रणी बैंकों में से एक है। नवीकरणीय ऊर्जा से संबंधित फर्मों को वित्तपोषण के अतिरिक्त बैंक ने ईएसजी नीति बनाने और ग्रीन डिपॉज़िट जैसी पहलें भी की हैं। एक जिम्मेदार बड़ौदियन के रूप में, हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपने स्तर पर बिजली की बचत और प्लास्टिक उत्पादों के न्यूनतम इस्तेमाल जैसे छोटे-छोटे प्रयास करें और संवहनीय विकास की इस यात्रा का हिस्सा बनें।

वर्ष 2024 के लिए हमने बैंक के ध्येय वाक्य में परिवर्तन किया है। इस वर्ष हम 'Capture your aspirations vis--vis expectations of the bank' अर्थात् 'अपनी आकांक्षाओं को दें पंख, बैंक की अपेक्षाओं के संग' के ध्येय वाक्य के साथ व्यवसाय संवर्धन हेतु प्रयास करेंगे। यद्यपि, हमने बैंक के लिए इस वित्त वर्ष 2023-24 की अंतिम तिमाही हेतु बहुत बड़े लक्ष्य तय किए हैं, फिर भी, मैं जानता हूँ कि हम बड़ौदियन साथी अगर एक बार ठान लें तो हमारी अदम्य इच्छाशक्ति के आगे कोई लक्ष्य बड़ा नहीं है, कोई भी मंज़िल हमारे लिए दूर नहीं है। बस हमें 'अनुपालन के साथ व्यवसाय' के मंत्र को आत्मसात करते हुए अपने प्रयासों को गति प्रदान करनी है। मैं सभी स्टाफ सदस्यों, उनके परिवारजनों, ग्राहकों सहित सभी हितधारकों को नए कैलेंडर वर्ष 2024 हेतु शुभकामनाएं देता हूँ।

देबदत्त चांद

देबदत्त चांद

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

पिछले तीन महीनों के दौरान संपन्न हुई राजभाषायी गतिविधियों और क्रियाकलापों के सृजनात्मक रूप, हमारी तिमाही पत्रिका **'अक्षय्यम्'** के माध्यम से अपने विचार आप सबके समक्ष रखते हुए अतीव हर्ष की अनुभूति हो रही है। राजभाषा के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों एवं उन नवोन्मेषी कार्यपद्धतियों के प्रभाव को हमारे साथियों के माध्यम से जानना सदैव एक नया अनुभव रहा है। यह पत्रिका हमारे सभी बड़ौदियन साथियों को उनके ज्ञान, रचनाशीलता एवं अनुभवों को मंच प्रदान कर उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है।

हमारा बैंक देश में सार्वजनिक क्षेत्र का दूसरा सबसे बड़ा बैंक है एवं हम यह समझते हैं कि बैंकिंग जगत में हमारा दायरा बढ़ने के साथ ही हमारा देश व समाज के प्रति उत्तरदायित्व भी बढ़ गया है। प्रसन्नता का विषय है कि पिछली तिमाही में हमने श्रेष्ठ परिणाम दर्ज किए हैं। हमारा कुल व्यवसाय बढ़कर रु. 22,94,627 करोड़ हो गया और शुद्ध मुनाफे में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 18.8% की वृद्धि हुई और यह रु.4,579 करोड़ के स्तर तक पहुंच गया। 31 दिसंबर, 2023 को समाप्त नौ महीनों के लिए हमारा शुद्ध मुनाफा रु.12,902 करोड़ रहा। बैंकिंग के विभिन्न मानदंडों पर अच्छा प्रदर्शन करने के साथ-साथ हमनें अपनी आस्ति गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया है। हमारे बैंक का सकल एनपीए 145 bps घटकर 3.08% तथा शुद्ध एनपीए 29 bps से घटकर 0.70% दर्ज किया गया जो हमारे बैंक द्वारा बेहतर आस्ति प्रबंधन को परिलक्षित करता है। इस बेहतरीन प्रदर्शन को हमें वित्त वर्ष'24 की अंतिम तिमाही में भी जारी रखते हुए सर्वोत्तम परिणाम हासिल करने हैं।

देश के समग्र विकास को गति देने में कृषि और एमएसएमई क्षेत्रों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। इस तथ्य पर विशेष ध्यान देते हुए हमारे बैंक ने कृषि एवं एमएसएमई क्षेत्रों की योजनाओं को प्राथमिकता से वित्तपोषण प्रदान कर देश के आर्थिक विकास में योगदान देते हुए अपने ऋण कारोबार में भी वृद्धि हासिल की है। कृषि और एमएसएमई ये दो ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें अनंत संभावनाएं हैं और इन क्षेत्रों को मजबूती प्रदान कर हम देश के कृषकों तथा लघु उद्यमियों के जीवन स्तर में व्यापक सुधार ला सकते हैं।

संवहनीय विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के उद्देश्य से हमारे बैंक ने **बड़ौदा अर्थ, ग्रीन राइड** जैसी पहलें शुरू की हैं। कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत हमारा बैंक आरसेटी के माध्यम से प्रशिक्षण प्रदान करके महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने, विभिन्न उद्यमों को सहायता राशि प्रदान करके उनका सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान सुनिश्चित करने एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों को शिक्षा ऋण प्रदान करके समाज के बहुआयामी विकास में अपना विशेष योगदान दे रहा है।

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के विषय में जागरूकता फैलाने और लाभार्थियों तक उनका लाभ सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार द्वारा दिनांक 15 नवंबर, 2023 से 25 जनवरी, 2024 तक आयोजित **विकसित भारत संकल्प यात्रा** में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते हुए बैंक ने देश के विभिन्न हिस्सों में शिविर आयोजित किए हैं और बैंक स्तर से क्रियान्वित की जा रही सरकार की कल्याणकारी योजनाओं जैसे प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएम जेजेबीवाई), प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) आदि से लाभार्थियों को लाभान्वित किया है। इस यात्रा के दौरान जनधन योजना, किसान क्रेडिट कार्ड आदि से भी ग्रामीण क्षेत्रों को लाभान्वित किया गया है। संकल्प यात्रा के दौरान बैंक ने अखिल भारतीय स्तर पर बेहतर कार्यनिष्पादन कर सरकार की अपेक्षाओं के अनुरूप अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। यात्रा की समाप्ति के उपरांत यात्रा के उद्देश्यों को हमेशा ध्यान में रखते हुए कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

आज समूचा विश्व हमारे देश की विकास यात्रा को आशा भरी दृष्टि से देख रहा है। अतः एक बैंकर के रूप में हमें पूरी कर्तव्यनिष्ठा, लगन एवं समर्पण की भावना से कार्य कर विश्व को आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करते हुए **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के अपने आदर्श को स्थापित करने में अपना योगदान सुनिश्चित करना होगा।

नव वर्ष 2024 की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

अजय के. खुराना

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

आल्हाद का विषय है कि हमारे बैंक की पत्रिका **'अक्षय्यम्'** के नूतन अंक का प्रकाशन हो रहा है। मेरे लिए यह दोहरे हर्ष की बात है कि इस प्रकाशित नूतन अंक के माध्यम से आप सबसे संवाद करने का अवसर मिल रहा है। **'अक्षय्यम्'** पत्रिका, न केवल हमारे बैंक में राजभाषा हिंदी की लोकप्रियता का प्रतिमान है बल्कि यह हमारे बैंक द्वारा किए गए विभिन्न कार्यों का रचनात्मक प्रतिरूप भी है।

हम सब को विदित है कि हमारा देश स्वतंत्रता के अमृत काल में प्रवेश कर चुका है। सुदृढ़ एवं विकसित बनने को तत्पर हमारे देश की अर्थव्यवस्था ने कोविड महामारी से उभरते विश्व के समक्ष अपना उच्च वृद्धि दर वाला स्वरूप दिखाकर सभी के लिए अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। समस्त वैश्विक संस्थाओं जैसे IMF, **विश्व बैंक एवं विश्व आर्थिक मंच** ने एक स्वर में भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति की सराहना की है एवं अगले वर्षों के लिए मजबूत एवं संवहनीय वृद्धि की भविष्यवाणी की है। भारतीय अर्थव्यवस्था की इस वृद्धि में बैंकों का अहम योगदान रहा है।

भारत सरकार एवं कॉर्पोरेट क्षेत्र द्वारा किए गए **पूंजी व्यय** ने विकास की अनेक परियोजनाओं की नींव रखते हुए नकदी प्रवाह में वृद्धि की है जिससे हमारे बैंक के व्यवसाय को बढ़ावा मिला है। हमारी अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने वाले महत्वपूर्ण घटक - कॉर्पोरेट क्षेत्र को ऋण प्रदान करने में हमारा बैंक अग्रणी रहा है। पिछली तिमाही में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर हमारे बैंक द्वारा दिए गए **कॉर्पोरेट अग्रिमों में 10.2% की वृद्धि** हुई है जो यह प्रदर्शित करता है कि मिड एवं लार्ज कॉर्पोरेट से हमारे व्यावसायिक संबंध और अधिक प्रगाढ़ हुए हैं। इस क्रम को बनाए रखते हुए हमारा लक्ष्य यह भी होना चाहिए कि हम कार्पोरेट क्षेत्र के साथ सर्व समावेशी संबंधों का विस्तार करें और वहां कार्यरत कर्मचारियों से व्यक्तिगत जुड़ाव स्थापित करके उनके खाते खोलें, उनको रिटेल ऋण सहित अन्य बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराएं ताकि बैंक के समग्र कारोबार में वृद्धि अर्जित की जा सके। यह दृष्टिकोण बैंक की वृद्धि दर को संवहनीय बनाएगा और हम अग्रिम के साथ-साथ अग्रिम के संसाधन अर्थात् जमाओं की भी व्यवस्था कर पाएंगे। कॉर्पोरेट क्षेत्र के नकदी प्रवाह को भी पूरी तरह बैंक के साथ जोड़कर रखने की दिशा में हमें पूरा प्रयास करना चाहिए।

विदेश में स्थित अपनी अनुषंगी संस्थाओं द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कारोबार में वृद्धि के साथ ही हमारा बैंक देश के विभिन्न भागों में कई परियोजनाओं में सहयोग देते हुए देश के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। अभी हाल ही में बैंक ने भारत सरकार के स्वामित्व वाली कंपनी आरईसी के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते का उद्देश्य ऊर्जा, इंफ्रास्ट्रक्चर एवं लॉजिस्टिक्स संबंधी परियोजनाओं का वित्तपोषण करना है। ऊर्जा, इंफ्रास्ट्रक्चर एवं लॉजिस्टिक्स ये तीन क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें पिछले कुछ वर्षों में काफी काम हुआ है। इन तीनों क्षेत्रों का आउटलुक काफी सकारात्मक एवं संभावनाओं वाला है। बैंक इस समझौते का पूरा लाभ उठाते हुए इन तीनों क्षेत्रों में वित्तपोषण के माध्यम से देश के विकास में अपनी भूमिका के निर्वाह का पूरा प्रयास करेगा और साथ ही बैंक के अग्रिम संविभाग को विस्तारित करेगा।

बैंक के व्यवसाय वृद्धि हेतु अपनी भाषाओं के उपयोग की दिशा में गंभीर प्रयत्न चल रहे हैं। हम आशा करते हैं कि राजभाषा हिंदी का संवर्द्धन करते हुए अपने व्यवसाय में हम हिंदी सहित अन्य सभी भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु प्रतिबद्ध रहेंगे जिससे देश के किसी भी कोने में बैठा व्यक्ति भाषा की जटिलता महसूस किए बिना सरल, सुखद व बाधारहित बैंकिंग का लाभ उठा सके। मैं शाखाओं में कार्यरत हमारे सभी बड़ौदियन साथियों से अपील करता हूं कि ग्राहकों के साथ संवाद व संप्रेषण में स्थानीय भाषा के प्रयोग को प्रधानता दें जिससे कि आत्मीय संबंध के निर्माण के साथ बैंक के ग्राहक आधार को स्थायी बनाया जा सके।

हमारा बैंक व्यवसाय वृद्धि के साथ-साथ बैंकिंग के सभी नियम-कायदों तथा भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा समय-समय पर जारी दिशानिर्देशों का अनुपालन करने की दृष्टि से काफी सतर्क एवं सजग है। अनुपालन के साथ की गई प्रगति स्थायी होती है और इससे संगठन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। अतः इस पक्ष में हमें निरंतर ध्यान देने की आवश्यकता है।

नई ऊर्जा, नए उत्साह एवं नई आकांक्षाओं के साथ हम नव वर्ष 2024 में प्रवेश कर रहे हैं। आप सभी को नए वर्ष की अनंत शुभकामनाएं।

ललित त्यागी

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए एक विशेष अवसर है और इसके माध्यम से अपने विचारों और अनुभवों को आपसे साझा करना मेरे लिए हर्ष का विषय है। यह पत्रिका बैंक के स्टाफ सदस्यों को उनकी रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करने के साथ-साथ बैंक द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में हो रहे नवोन्मेषी कार्यों को प्रोत्साहित करने का एक माध्यम है।

हमारा बैंक प्रगति पथ पर अग्रसर है। दिसंबर, 2023 तिमाही और 31 दिसंबर, 2023 को समाप्त नौ महीनों के बैंक के परिणाम काफी अच्छे रहे हैं। बैंक ने दिसंबर, 2023 तिमाही में रु. 4579 करोड़ एवं 31 दिसंबर, 2023 को नौ महीनों में कुल रु. 12902 करोड़ का शुद्ध मुनाफा कमाया है। कुल व्यवसाय का स्तर बढ़कर रु. 22,94,627 करोड़ के स्तर तक पहुंच गया है। शुद्ध एनपीए घटकर 0.70 % तथा सकल एनपीए घटकर 3.08 % हो गया है। बैंक के परिणामों को बाजार ने भी काफी सकारात्मक रूप में लिया है, फलस्वरूप हमें अपने अंशधारकों के लिए उनकी अंशधारिता के मूल्य वर्धन में काफी सहायता मिली है। यह परिणाम आप सभी की मेहनत का ही फल है। ऐसे परिणाम हासिल कर फिर से नई मंजिल तक पहुंचाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। हमें इस कार्य में निरंतर रूप से तभी सफलता मिलेगी जब हम बैंक के हितों, प्रतिष्ठा का पूरा ध्यान रखते हुए आगे बढ़ेंगे और अपने प्रत्येक कार्य में बैंक के दिशानिर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करेंगे। 'अनुपालन के साथ व्यवसाय' के मूल मंत्र को हमें बैंक के प्रत्येक कार्य को करते हुए ध्यान में रखना होगा।

आज राजभाषा कार्यान्वयन की भूमिका केवल भाषा के विकास तक सीमित नहीं बल्कि बैंकिंग के संपूर्ण व्यवसाय वृद्धि में सहयोग देना भी है। इस संबंध में ग्राहकों को सभी सुविधाएं उनकी अपनी भाषा में उपलब्ध करवाना एक ऐसा कार्य है जो ग्राहकों और बैंक के संबंधों को मजबूत करता है। डिजिटलीकरण के दौर में बैंक अपने ग्राहकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए डिजिटल माध्यम से नए उत्पाद एवं सेवाएं शुरू कर रहा है। हमारे बैंक ने इन सभी तकनीकी सुविधाओं को ग्राहक की अपनी भाषा में उपलब्ध करवाने की दिशा में काफी प्रगति कर ली है। अब इन सुविधाओं के माध्यम से अपने ग्राहक आधार को विस्तार देने की आवश्यकता है।

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में अग्रणी स्थिति बनाए रखने हेतु हमें स्वयं को निरंतर अपडेट रखना भी जरूरी है। हमारी सजगता और सक्रियता हमें अपने समकक्ष बैंकों के बीच अग्रणी स्थिति प्रदान करती है। समय के साथ आगे बढ़ने के लिए बैंक ने अपने स्टाफ सदस्यों के लिए एक सुदृढ़ प्रशिक्षण तंत्र की व्यवस्था की है। हमारी प्रशिक्षण व्यवस्था बैंकिंग सहित समाज एवं जीवन के अन्य महत्त्वपूर्ण पहलुओं यथा - नैतिकता, पर्यावरण संरक्षण, सतर्कता, ईएसजी आदि के संबंध में हमें जागरूक और शिक्षित करने का कार्य कर रही है।

आज के दौर में यह जरूरी है कि हम अपने कार्यालीन दायित्व का निर्वाह करते समय अपने व्यक्तिगत जीवन और स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक रहें। दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करना अत्यंत जरूरी है। इसके साथ ही हमें अपने व्यक्तिगत और पेशेवर लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाना और अपने समय का सदुपयोग करना जरूरी है। मुझे विश्वास है कि हम समन्वित प्रयास, नीतिपरक कार्यप्रणाली और कठिन मेहनत एवं लगन से अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर करेंगे और अपने बैंक की प्रतिष्ठा को और बढ़ाएंगे।

नव वर्ष 2024 की शुभकामनाओं सहित,

लाल सिंह

कार्यपालक निदेशक की डेस्क से

प्रिय साथियो,

बैंक की हिंदी पत्रिका '**अक्षय्यम्**' के नवीनतम अंक के माध्यम से पहली बार अपने विचार आपसे साझा करना मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है। यह पत्रिका न केवल बैंक के स्टाफ सदस्यों की रचनात्मकता, प्रतिभा, कौशल को एक सशक्त मंच प्रदान करती है बल्कि तिमाही के दौरान बैंक स्तर से किए गए नवाचारों को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम भी है जिससे अन्य स्टाफ सदस्यों को प्रेरणा प्राप्त होती है।

हमारा बैंक प्रगति के पथ पर अग्रसर है जिसकी स्पष्ट झलक हमारे बैंक के वित्तीय परिणामों में दिखाई देती है। दिसंबर, 2023 तिमाही और 31 दिसंबर, 2023 को समाप्त नौ महीनों के बैंक के परिणाम काफी सुखद अनुभूति प्रदान करने वाले रहे हैं। यह परिणाम आप सभी की दृढ़ मेहनत और सकारात्मक सोच का प्रतिफल है। हम आगे भी ऐसे श्रेष्ठ परिणाम अर्जित करते रहेंगे तथा सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करते रहेंगे।

भारत ने पिछले कुछ वर्षों में एक सशक्त डिजिटल पेमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) विकसित किया है। इस इंफ्रास्ट्रक्चर के आधार पर देश में डिजिटल भुगतानों में क्वान्टम वृद्धि हो रही है। देश में डीपीआई की इस सफलता को हाल ही में भारत की अध्यक्षता में संपन्न G20 की बैठक में गहरे तौर पर रेखांकित किया गया और 'ग्लोबल डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर रिपॉजिटरी' की स्थापना की घोषणा की गई तथा निम्न और मध्यम आय वाले देशों में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के लिए जरूरी तकनीकी सहायता एवं वित्तीय मदद पहुंचाने हेतु 'वन फ्यूचर अलायंस' की स्थापना भी की गई। ये सारी पहलें डिजिटल क्षेत्र में भविष्य में और भी बड़े परिवर्तनों का संकेत दे रही हैं। हमारा बैंक भी इन सारे परिवर्तनों को काफी संभावनाओं से भरे भविष्य के रूप में देखता है। इस दिशा में हमारा बैंक यूपीआई एवं रुपे को वैश्विक स्तर पर क्रियान्वित करने की दृष्टि में अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहा है। बैंक के सहयोग से हाल ही में मॉरीशस में यूपीआई एवं रुपे प्रणाली का शुभारंभ किया गया है। अन्य देशों में इस तकनीक के विस्तार के संबंध में भी बैंक अपनी भूमिका का सक्रियता से निर्वाह करेगा।

बैंकिंग उद्योग में डिजिटल रूपान्तरण का दौर जारी है। इसके केंद्र में डिजिटल बैंकिंग है जो बैंक के व्यवसाय वृद्धि, ग्राहक अनुभव में सहायक है। हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के विजन के अनुरूप डिजिटल बैंकिंग लागत-आय अनुपात को कम करने, परिचालन लागत में कमी के साथ-साथ प्रक्रियाओं में पारदर्शिता लाएगी। तकनीक न केवल ग्राहकों के लिए बैंकिंग सेवाओं को सहज बनाती है बल्कि बैंक को ऋणों की डिजिटल डिलिवरी के माध्यम से नए व्यवसाय जुटाने में भी सहायक होती है। उत्तम कोटि के ग्राहकों को प्रि-अप्रूव्ड ऋण और उन्हें उनकी डिजिटल डिलिवरी बैंक के रिटेल ऋण पोर्टफोलियो को विस्तारित करने में काफी सहायक बन रही है। परंतु तकनीक का दूसरा पक्ष यह भी है कि यह संभावनाओं के साथ-साथ चुनौतियाँ, साइबर सुरक्षा जैसे खतरे भी लाती है। इसलिए तकनीक का प्रयोग करते समय सजग रहने की नितांत आवश्यकता है। इस दिशा में इसके गलत उपयोग को रोकने हेतु हमारे स्टाफ सदस्यों को स्वयं सजग रहते हुए बैंक के ग्राहकों को जागरूक करने की आवश्यकता है।

उपरोक्त के अलावा डिजिटल बैंकिंग व्यवहारों में हमारी भाषाओं का प्रयोग भी महत्वपूर्ण है। यह हमारे व्यवसाय में वृद्धि तो करती ही है साथ ही ईज के भाषा संबंधी मानदंडों को भी पूरा करने में भी सहायक है। इस दिशा में हमारा बैंक अग्रणी रहा है और 6.5 करोड़ से अधिक ग्राहकों को उनके बैंकिंग लेनदेन संबंधी एसएमएस उनकी भाषा अर्थात् हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करा रहा है। हमारे बैंक के डिजिटल ऐप्लिकेशन यथा बॉबवर्ल्ड मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, डिजिटल लेंडिंग प्लेटफॉर्म आदि ग्राहक की भाषाओं में उपलब्ध है। इसके अलावा ग्राहकों के साथ संवाद के विभिन्न चैनलों चाहे वह शिकायत समाधान से जुड़ा हो या हमारी सेवाओं, उत्पादों से संबंधित जानकारी प्रदान करने से, सभी में ग्राहक की पसंदीदा भाषा का विकल्प उपलब्ध है। आप सभी से अपील है कि आप भी अपने दैनिक बैंकिंग कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और हिंदी के प्रगामी प्रयोग की इस यात्रा को जारी रखें।

मुझे विश्वास है कि सभी स्तरों पर किए जा रहे संगठित प्रयासों के साथ अनुपालन उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए हम अभीष्ट लक्ष्यों को हासिल करने में सफल होंगे और अपनी व्यावसायिक यात्रा को नई ऊर्जा के साथ जारी रखते हुए बैंक को समग्र रूप में सुदृढ़ता प्रदान करने में सफल होंगे।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित,

संजय विनायक मुदालियर

बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

अक्षय्यम्

बैंक ऑफ़ बड़ौदा की हिंदी पत्रिका

वर्ष – 19 * अंक – 76 * अक्तूबर–दिसंबर 2023

–: कार्यकारी संपादक :–

संजय सिंह

प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

–: संपादक :–

पुनीत कुमार मिश्र

सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)

–: सहायक संपादक :–

प्रमोद बर्मन

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

अजित सिंह

प्रबंधक (राजभाषा)

–: संपर्क :–

राजभाषा विभाग

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बड़ौदा भवन, पांचवी मंजिल,
आर सी दत्त रोड, अलकापुरी, बड़ौदा – 390007

फोन : 0265–2316581 / 6587

ईमेल : rajbhasha.ho@bankofbaroda.com
akshayyam@bankofbaroda.com

राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
पांचवी मंजिल, आर सी दत्त रोड, अलकापुरी,
बड़ौदा – 390007 से संपादित एवं प्रकाशित।

रुपांकन एवं मुद्रण

मे. प्रिंट प्लस प्रा.लि.,
212, स्वस्तिक चेंबर्स, एस.टी. रोड,
चेंबूर, मुंबई 400071

प्रकाशन तिथि : 12/02/2024

सूचना :

बैंक के स्टाफ सदस्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु अपनी रचनाएं/ सामग्री ई–मेल: akshayyam@bankofbaroda.com पर भेज सकते हैं।

अनुक्रम

इस अंक में

साक्षात्कार – पद्मश्री डॉ. चंद्र प्रकाश देवल..... 8

जलवायु वित्तपोषण 12

ग्रामीण क्षेत्र में बैंकिंग विपणन 16

जलवायु परिवर्तन और भारतीय कृषि 20

बैंकिंग आपके द्वार पर (डोर स्टेप बैंकिंग) 23

यूपीआई लाइट – एक महत्त्वपूर्ण सुविधा 25

संपर्करहित डिजीटल बैंकिंग..... 26

बिछड़न 29

हरित बैंकिंग..... 32

वर्ष 2030 में भारतीय बैंकिंग 34

एक नई सुबह 39

दिल्ली वाली मां 43

अपने ज्ञान को परखिए 46

बैंकिंग शब्द मंजूषा..... 47

पुस्तक समीक्षा : रामराज्य..... 48

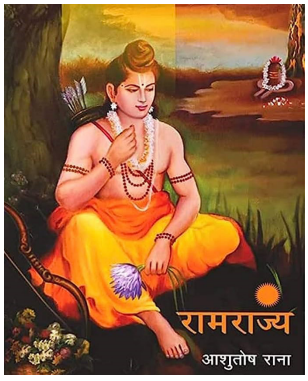

कार्यकारी संपादक की कलम से

'अक्षय्यम्' के इस नवीनतम अंक के माध्यम से आपसे संवाद करना मेरे लिए विशेष अवसर है। सर्वप्रथम आप सभी को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं! बैंकिंग के अर्थ तंत्र में हमने 'भारतीय भाषाओं में बैंकिंग' को एक मंत्र की तरह अपनाया है जिसके माध्यम से हम जन सुलभ बैंकिंग को ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध हुए हैं। उच्च प्रबंधन निरंतर इस बात को रेखांकित करता रहा है कि डिजिटल माध्यम से बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। भारत जैसे विविधता से परिपूर्ण देश में विविध बैंकिंग उत्पादों, सेवाओं को एकल भाषा में पहुंचाना शायद कभी संभव न हो इसलिए बैंक ने विविध भाषाओं के विकल्प के साथ अपने उत्पादों एवं सेवाओं को ग्राहकों तक पहुंचाया है। जिससे सेवा विस्तार के साथ-साथ ग्राहक जुड़ाव एवं विश्वास भी बेहतर हुआ है।

हमारी समृद्ध भाषायी परंपरा और उसमें अंतर्निहित जीवन मूल्य, विश्वास आदि हमारे अंतस में इस प्रकार समाए हुए होते हैं कि उन्हें हमसे भिन्न देख पाना सरल नहीं होता है। अपनी भाषाओं को अपने कारोबार की भाषा बनाकर हम अनचाहे ही उन मूल्यों को कारोबार में भी ले आते हैं और कारोबार प्रगति करता चला जाता है। बैंक हमेशा से ही अनुपालन संस्कृति को प्रोत्साहित करता रहा है। हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने अपने नववर्ष पर दिए संदेश में सभी स्टाफ सदस्यों को '**अनुपालन के साथ कारोबार**' के संकल्प के साथ कार्य करने के लिए अभिप्रेरित किया है। इसका विशेष अर्थ ग्रहण करते हुए हमें यह मानना चाहिए कि हमें अपने मूल्यों से कभी भटकना नहीं है और बुनियादी मूल्यों को सर्वोपरि रखना है। अपने कार्यों में पारदर्शी होने से हम ग्राहक शिकायतों की संभावना को भी किसी हद तक दूर कर देते हैं।

हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में सेवाएं उपलब्ध कराने की बैंक की पहलों की अगली कड़ी में हमने अपने विभिन्न उत्पादों जैसे गृह ऋण, कार ऋण, आदि से संबंधित पीपीटी हिंदी के साथ-साथ संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं में परिचालन इकाइयों को उपलब्ध कराई थी। जिन्हें अब सिर्फ एक **क्यूआर कोड** के स्कैन के माध्यम से एक ही जगह सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। यह पहल स्टाफ सदस्यों को बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान कर ग्राहक आधार बढ़ाने में सहयोग करेगा।

पत्रिका के इस अंक में हमने अनुवाद एवं साहित्य विशेषकर राजस्थानी साहित्य में प्रमुख योगदान देने वाले **पद्मश्री डॉ. चंद्र प्रकाश देवल** का साक्षात्कार प्रकाशित किया है। जलवायु परिवर्तन उसके प्रभाव, निवारण आदि के लिए वित्त पोषण संबंधित आलेख '**जलवायु वित्त पोषण**' भी इस अंक में शामिल है। डिजिटल बैंकिंग का महत्त्वपूर्ण अंग बन चुके यूपीआई के नए संस्करण '**यूपीआई लाइट**' पर एक संक्षिप्त आलेख पाठकों के लिए उपयोगी रहेगा। इस अंक में शामिल संस्मरण '**दिल्ली वाली माँ**', कहानी '**बिछड़न**' और जीवन की उधेड़बुन से उभरती एक स्त्री की कहानी '**एक नई सुबह**' जैसी रचनाएं भी पाठकों को अभिभूत करेंगी। इसके अलावा इस अंक में हमने स्टाफ सदस्यों की भाव एवं विचारपूर्ण कविताओं, अभिव्यक्तियों, अनुभवों, प्रमुख गतिविधियों आदि को भी शामिल किया है। आशा है कि पत्रिका का यह अंक आपको अच्छा लगेगा। पत्रिका के इस अंक के सबंध में हमें आपके अभिमत की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

संजय सिंह
प्रमुख – राजभाषा एवं संसदीय समिति

साक्षात्कार

पद्मश्री डॉ. चंद्र प्रकाश देवल

(एक मुलाकात)

बैंक द्वारा आरंभ की गई 'भाषाई चौपाल' में पद्मश्री डॉ. चंद्र प्रकाश देवल को आमंत्रित किया गया था। आपने भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ साथ अंग्रेजी और रूसी साहित्य का राजस्थानी और हिंदी में अनुवाद किया है। आप 40 वर्षों से साहित्य साधना कर रहे हैं और इस दौरान हिंदी और राजस्थानी में आपके 14 काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं और 13 काव्य संग्रहों का आपने विभिन्न भारतीय भाषाओं, अंग्रेजी और यहां तक की रूसी भाषा से भी राजस्थानी भाषा में अनुवाद किया है । इसके अतिरिक्त आपने पंजाबी और डोगरी भाषा से राजस्थानी शब्दकोष का निर्माण भी किया है। वहीं राजस्थानी, हिंदी और अंग्रेजी में विभिन्न संकलनों का आपने संपादन भी किया है। अक्षय्यम् के इस अंक में हम शिक्षक दिवस के अवसर पर साहित्य और अनुवाद विषय पर उनसे हुई बातचीत के प्रमुख अंश अपने पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं। – संपादक

कृपया आपके आरंभिक जीवन और शिक्षा के विषय में कुछ बताएं।

सबसे पहले मैं इस शिक्षक दिवस के अवसर पर किसी खास गुरु को तो नहीं पर जिन लोगों ने मुझे अनुवाद या काव्य का ज्ञान दिया है, उन सभी को आज के दिन बहुत ही आदर के साथ याद करता हूं और उन्हें प्रणाम करता हूं।

मैं भी एक बहुत सामान्य सा विद्यार्थी था, छोटे से गांव का रहने वाला था, मेरे गांव में स्कूल भी नहीं था और मुझे स्कूल जाने के लिए छह मील दूर जाना पड़ता था। इसलिए मेरे दादा ने वहीं गांव में ही एक स्कूल अध्यापक रखकर हमें घर पर पढ़ाने की व्यवस्था की थी। इसके बाद विद्यापीठ नामक गुरुकुल से मैंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। फिर मैंने उदयपुर नॉवेल्स महाविद्यालय से अपना स्नातक (बी.एससी.) किया। फिर मैंने जोधपुर विश्वविद्यालय से एम.एससी. किया। फिर मैंने मेडिकल बायो केमिस्ट्री में पीएचडी की और मेडिकल कॉलेज, अजमेर में नौकरी शुरू की। मैंने 34 वर्ष तक नौकरी की। हमेशा से साहित्य मेरा पहला प्यार रहा। मैं बचपन से ही साहित्य पढ़ना चाहता था। लेकिन मेरे माता पिता निरक्षर थे तो उन्होंने किसी से राय ली होगी तो वहां सामान्यतः उन दिनों जो ये बात कही जाती थी कि डॉक्टर बनाओ या इंजीनियर बनाओ तो उसे साइंस दिला दो और मुझे साइंस दिलवा दी गई। फिर भी मैं विज्ञान की बजाए साहित्य पढ़ना चाहता था।

ऐसी कौन सी चीजें थीं जिन्होंने आपको साहित्य लेखन की ओर प्रवृत्त किया।

जब मैं महाविद्यालय के दिनों में आया तो वहां हमारे कुछ दोस्त ऐसे थे जो साहित्य मंडली लगाते थे। उन मित्रों की संगत के कारण से मैं हिंदी में कविताएं लिखने लगा। उदयपुर में एक ग्रामीण संस्थान विद्याभवन है। वहां आकाशवाणी ने एक बहुत बड़ा आयोजन किया। यंग टैलेंट सर्च थी वो उसमें सब लोगों ने कविताएं पढ़ीं। मेरे एक दोस्त ने मेरा भी नाम ले लिया। मैंने भी एक छोटी सी कविता वहां पढ़ी और नंद चतुर्वेदी जो उस समय बहुत बड़े हिंदी के कवि थे उदयपुर में। वो इस टैलेंट सर्च के जज थे तो उन्होंने मेरी कविता को पहले दर्जे की रचना माना और यकायक उसी दिन से मैं कवि के रूप में स्थापित हो गया। लेकिन ये मेरी हिंदी भाषा में लिखी गई गद्यनुमा रचना थी।

अपनी मातृभाषा (राजस्थानी) में साहित्य लेखन के लिए प्रति आपका झुकाव किस प्रकार हुआ।

जब मैं पीएचडी कर रह था उन दिनों जोधपुर से करीब 100 किलोमीटर दूर एक गांव है बोरनराय जो मेरी ससुराल भी

है, वहां मैंने दो विभूतियों को देखा, एक विजयदान देथा थे जो पद्मश्री हैं और एक और पद्मश्री बल्कि पद्म भूषण कोमल कोठारी। उनकी अपनी एक संस्था थी जो उन्होंने सन् 1962 से गांव में बना रखी थी। विजय दान देथा जो सिर्फ लोक कथाएं इकट्ठी कर रहे थे। उनका काम था गांव में जाना, वहां लोगों से पूछना, स्त्रियों से पूछना और उसे रिकॉर्ड करना फिर घर आकर लिख लेना और कोमल कोठारी जी लोक गीत और संगीत पर काम कर रहे थे। वे बहुत से ग्रुप से मिलते, उनसे गीत सुना, उनसे पूछा कि क्या गीत है, किस अवसर पर गाते हो? तुम्हारे पास क्या वाद्य यंत्र हैं? कैसे बजाते हो, तुम्हारे यहां जजमानी क्या है? और इस तरह के अन्य विषयों के बारे में जानकारी प्राप्त करना। तो जब उनको ये करते हुए देखा तो एक दिन मैंने विजय दान जी से पूछ ही लिया कि बीसवीं सदी में जब हवाई जहाज और जेट का युग है, आप ये बैलगाड़ी की सवारी करना क्यों पसंद कर रहे हैं? तो वे हंसने लगे और उन्होंने कहा की ये बात अभी इतना आसानी से आपकी समझ में नहीं आएगी जब तक आपकी पूरी शिक्षा नहीं हो जाती। जब तक आप पूरे अच्छे ढंग से पढ़ लिख न लो और गुण न लो तब तक आप इस बात का महत्त्व नहीं समझोगे कि जो हमारी संस्कृति है और हमारी मातृभाषा है, उसका महत्त्व क्या है, उसका मूल्य क्या है? उस दिन विजय दान जी ने मेरे दिमाग में एक बात को ठीक ढंग से बैठा दिया कि हिंदी मेरी अर्नड लैंग्वेज है। हिंदी मैंने सीखी है जिसका आ, ई, भी मुझे नहीं आता था तो इसलिए मुझे उन्होंने ये कहा था कि आप अर्नड लैंग्वेज में जो आपकी सीखी हुई भाषा है उसमें आप निबंध लिख सकते हैं। आप और कोई काम कर सकते हैं, लेकिन आप कविताएं नहीं लिख सकते। कविताएं तो मात्र मातृभाषा में ही संभव है। तो उस दिन से मैंने ये सोचा की मैं मातृभाषा में ही अपनी इस बात को पूरा करुंगा, अपनी ललक को पूरा करूंगा।

आपकी 'पागी' रचना के लिए आपको अस्सी के दशक में राष्ट्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। इसके पहले और बाद की साहित्यिक यात्रा में आए बदलाव के बारे में कुछ बताएं।

हिंदी में मैंने बहुत काम किया है। जब सन् 1977 में मेरा पहला कविता संग्रह 'पागी' तैयार हुआ तो उस समय भी मेरे सामने ये समस्या थी की राजस्थानी के जो पाठक हैं वो उसको इस ढंग से समझ नहीं पाएंगे। मेवाड़ राजस्थान का केंद्र है। मुझे मीरा जी याद आती हैं। आज से 600 साल पहले मीरा बाई वाहिद एक ऐसी साहित्यकार मुझे समझ में आती हैं जिन्होंने अपनी मातृभाषा में बोलचाल की जबान में अपनी रचनाएं कीं। उन्होंने सारे पद अपनी भाषा में लिखे हैं। **''म्हारे सिर पे सांवरिया रो हाथ राणा जी म्हारो कांई करसी''** ये इतनी सरल भाषा में, बोल चाल की भाषा में है। उन्होंने इतनी सरल भाषा में कविता करना संभव किया क्योंकि इससे पहले पूरी की पूरी राजस्थानी में डिंगल और पिंगल की परंपरा आ रही है जिसमें वो इतनी क्लिष्ट भाषा है कि वो सिवाय राज दरबारों और क्लासिकल ग्रंथों के और कहीं प्रयोग में नहीं आई। मैं अपनी मातृभाषा मेवाड़ी को इस अंदाज़ में देखता हूं कि एक तो ये भाषा इस रूप से शुद्ध है कि इसके ऊपर कोई पड़ोसी भाषा का दबाव नहीं है। वह शुद्ध राजस्थानी भाषा है। इस तरह मैंने केंद्रीय भाषा का स्थल चुना और अपनी अभिव्यक्ति के लिए केंद्रीय अभिव्यक्ति के लिए हिंदी को छोड़कर फिर मैंने राजस्थानी को चुना और मेरी 30 साल की अवस्था में मुझे जब पहला राष्ट्रीय पुरस्कार मिल गया। तब तलक मैंने दिल्ली भी नहीं देखी थी जब मुझे केंद्रीय साहित्य अकादमी का यह पुरस्कार मिला और मैं वहां लेने के लिए गया, वहां भारतीय भाषाओं के अन्य लेखकों से मिला और तब हमारा क्षितिज बड़ा हुआ। अब हमारी दृष्टि थोड़ी बड़ी हुई और इस बड़ी दृष्टि के कारण हमारे अनुभव भी बड़े होने लगते हैं और उन अनुभवों के चलते काम चलता रहा। मैं अपना साहित्य भी लिखता रहा, नौकरी भी करता रहा।

हिंदी की विकास यात्रा के साथ साथ बाकी की जो क्षेत्रीय भाषाएं हैं वो भी इसकी सहोदरी बनकर उभरी हैं उन्होंने भी बहुत रास्ता तय किया है। इनमें आप साहित्य और अनुवाद कर्म को कैसे देखते हैं

ये बड़ा ऐतिहासिक मसला है कि जब मैं साहित्य अकादमी में भाषा की परामर्श समिति का सदस्य बन कर गया तो विजय दान देथा जी उस समय उसके संयोजक थे। और वे राजस्थानी देख रहे थे। 1974 में साहित्य अकादमी ने राजस्थानी को मान्यता दे दी। उसके बाद से लगातार प्रत्येक वर्ष राजस्थानी में पुरस्कार मिलने लगे और पहला पुरस्कार मेरे आचार्य विजय दान देथा को मिला। जब मैं साहित्य अकादमी में गया और अपनी राजस्थानी भाषा का संयोजक बना, तो

अकादमी ने अनुवाद की विधा में काम की शुरूआत की। सचिव प्रोफेसर इंद्रनाथ चौधरी जो बंगाल के थे। उन्होंने सारी भारतीय भाषाओं में अनुवाद के पुरस्कार भी रखे। पुरस्कार के लिए नियम बनाए गए। सारी भारतीय भाषाओं से चार चार किताबें कम से कम हर भाषा से एक कृतियां मंगाई और उनके ऊपर हम पुरस्कार देने की चेष्टा करें। इसके अंतर्गत भारतीय भाषाओं के युवा कवियों को एक साथ मिलने का मौका मिला। अपनी कविताएं सुनने का अवसर मिला। तब हमें ये पता लगा कि तमिलनाडु में बैठा हुआ व्यक्ति क्या सोचता है, राजस्थान के एक मरुस्थल क्षेत्र में बैठा हुआ क्या सोचता है? बंगाल का आदमी क्या सोच रहा है? केरल का आदमी क्या सोच रहा है। इसी दौरान प्रो. इंद्रनाथ चौधरी ने मुझे अपने चेम्बर में बुला कर ताना देते हुए कहा कि देवल जी आप अपनी भाषा के चार अच्छे अनुवादों का नाम बताइए? और आप भी ताज्जुब करेंगे। मेरे लिए तो ताज्जुब में डूबने का ही समय था। लगभग में एक आधी किताब का नाम याद करते करते, बहुत देर के बाद भी नहीं बता सका। इंद्रनाथ चौधरी ने कहा की ये क्या भाषा है जिसमें चार अनुवाद भी नहीं हैं और यह बात मुझे चुभ गई। उसके बाद मैंने अपना सब मौलिक लेखन बंद किया और मैं एकदम से अनुवाद के कार्य में लग गया।

आपने हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री केदारनाथ सिंह के 'अकाल में सारस' का राजस्थानी भाषा में 'काळ में कुरजां' शीर्षक से अनुवाद किया है। भाषा से बोली के इस अनुवाद से जुड़े अनुभव के विषय में आप क्या कहना चाहेंगे।

राजस्थानी को हिंदी कि बोली कहा जाता है लेकिन राजस्थानी हिंदी से अलग है यह सोचकर मैंने हिंदी के दो कविता संकलनों को अनुवाद के लिए चुना। एक अशोक वाजपेयी के 'कहीं नहीं वहीं' और दूसरा केदारनाथ सिंह 'अकाल में सारस' ये दोनों साहित्य अकादमी से पुरस्कृत संकलन थे। इनके साथ मुझे एक सुविधा थी कि वो लोग हिंदी समझते थे क्योंकि हिंदी में लिख रहे हैं तो मैं हर बार अजमेर से छुट्टी लेकर वहां जाता और उनको अनुवाद सुनाता और उनसे कहता है आप एक हिंदी की कविता पढ़ें।

एक अच्छा लेखक और अनुवादक बनने के लिए क्या आवश्यक है या उसके सामने क्या चुनौतियां होती हैं?

वैसे तो लेखक और अनुवादक ये दोनों अलग अलग विधाओं से संबंधित हैं। जब आप अनुवाद करना चाहते हैं तो आपको दूसरे प्रकार का अध्ययन चाहिए और जब आप रचनाकार बनना चाहते हैं तो उसके लिए अलग तरह का अध्ययन। लेकिन कुछ चीजें ऐसी होती हैं कि भाषा को अच्छी तरह से जानना दोनों क्षेत्रों में बहुत ज्यादा जरूरी होता है और इसके लिए सबसे ज्यादा जरूरी होता है सर्वाधिक पढ़ना। मेरे आचार्य एक बात कहते थे कि 'एक मन पढ़ो और एक कण लिखो? अधिक अनुपात में आप पढ़ेंगे और उससे कम अनुपात में आप लिखेंगे तो आप रचनाकार बन सकते हैं और इसलिए ये जरूरी है कि एक तो अभ्यास बहुत ज्यादा चाहिए, भाषा पर अधिकार चाहिए। आपको इतनी व्युत्पन्नमति चाहिए कि आप तुरंत एक शब्द सुनते ही उसका जो सम्मानार्थी शब्द है, वो आपकी स्मृति में आ जाए।

क्या ऐसा कहा जा सकता है कि भारत जैसे देश में कोई भी कृति केवल एक ही भाषा में लिखे जाने पर और उसका अनुवाद उपलब्ध न होने पर उतना प्रसिद्ध नहीं हो सकती जितना एक अन्य कृति होगी जिसका कई भाषाओं में अनुवाद उपलब्ध है?

बिल्कुल और उसका एक उदाहरण बताता हूं। महाश्वेता देवी बांग्ला की बहुत बड़ी लेखिका थी। उनके उपन्यास बांग्ला में छपने से पहले उसका हिंदी अनुवाद छप जाता था। मूल छापने से पहले हिंदी का अनुवाद बाजार में आ जाता था, इसलिए वो हिंदुस्तान भर में चर्चित रचनाकार बनीं। अनुवाद का तो बहुत महत्त्व है। भारत जैसे विशाल देश में तो बहुत ज्यादा जरूरी है। तो सवाल ये है कि जब मैं अपनी भाषा को लेकर अपने करीबी जिले में नहीं जा सकता, करीबी प्रांत में नहीं जा सकता, मैं पंजाब में नहीं जा सकता, मैं गुजरात में नहीं जा सकता, तो फिर मैं लिखूंगा तो वह सीमित हो जाएगा। अनुवाद का क्षेत्र तो आपके लिखने के लिए विस्तार खोलता है, उसे बड़ा करता है। इसलिए अनुवाद का काम तो महत्त्वपूर्ण है।

सर, एक सवाल यदि अनुवादक मूल पर ध्यान केंद्रित करता है, तो अनुवाद कठिन हो जाता है। और अपनी सृजनात्मकता का इस्तेमाल करता है तो वह मूल से दूर हो जाता है। इस धर्म संकट से कैसे निपटा जाए?

यह एक बहुत पुरानी बहस है जो अनुवाद को लेकर है कि

सुंदर अनुवाद विश्वसनीय नहीं होता और विश्वसनीय अनुवाद सुंदर नहीं होता। जो अनुवाद मूल से दूर होगा वो सुंदर तो हो सकता है लेकिन वो विश्वसनीय नहीं होगा। मूल के साथ वो धोखा करेगा और मूल से बेवफाई हो जाएगी। मैं इसका एक बहुत सुंदर उदाहरण देता हूं। आपने फिज्रॉल्ट का नाम सुना होगा, जिसने उमर ख्य्याम की रूबाइयों का अंग्रेजी में अनुवाद किया तो उसने जब अनुवाद किया तो इतना शानदार अनुवाद किया कि लोग उसकी मूल कृति को भूल गए। लेकिन उसके बाद उसने खुद भी और बाकी लोगों ने भी देखा कि इसमें कई चीजों को छोड़ दिया है जो मूल में थीं। तो उससे जब ये बात कही गई की भाई तुमने ये क्या किया? जब लोगों ने उसे बताया कि मूल कृति की बहुत सी चीजें छूट गई? ये उसे पता था लेकिन जब लोगों ने इंगित किया तो उसका एक प्रसिद्ध कथन था। वो कथन ये है कि मृत बाज से जीवित चिड़िया अच्छी। चिड़िया उड़ने वाली अच्छी होती है। मरे हुए सिंह से एक जीवित कुत्ता अच्छा होता है तो उनका ये कहने का मतलब है कि मैंने जितना भी अंश अनुवाद किया है उसमें समस्या क्या थी। पूर्व और पश्चिम दो अलग अलग ध्रुव हैं। उमर ख्य्याम जो पूर्वी संस्कृति है, उसका प्रतीक है और वो फिज्रॉल्ट जो अनुवाद कर रहा है वो पाश्चात्य जगत में कर रहा है तो उसके यहां पर वो प्रतीक और मूल्य नहीं हैं। वहां जो नहीं है वह उनका अनुवाद कैसे करेगा? तो उसने क्या किया कि जो अंग्रेजी के अंदर सुंदर भाव या अभिव्यक्तियां थीं, वो उसने उसमें डाल दिया और बाकी की चीजों को छोड़ दिया। इसलिए लोगों ने कहा कि ये पूर्ण नहीं है। अगर अनुवादक इससे डर जाए तो कभी कोई अनुवाद किया ही नहीं जाएगा। इसकी अनुपस्थिति में हमारी दुनिया कितनी अंधेरी दुनिया होगी। मैं जब 14 वर्ष का था तब मैंने मेरे गांव में सबसे पहली बार मैक्सिम गोर्की के उपन्यास 'माँ' का हिंदी अनुवाद एक छोटे से 22 घरों के गांव में पढ़ लिया था।

कई बार तकनीकी अनुवाद के संबंध में लोग दुरूहता का आरोप लगाते हैं कि तकनीकी अनुवाद जो होता है वो थोड़ा दुरूह होता है। वो सुझाव देते हैं कि बोल चाल के शब्दों का प्रयोग किया जाए।

अनुवादक के समक्ष एक समस्या यह आती है कि हर एक तकनीकी शब्द से मिलते जुलते बोल-चाल के शब्द उपलब्ध नहीं हैं। इस समस्या से कैसे निपटा जाए? ये समस्या तो बहुत भारी है। इससे वैसे तो निपटा नहीं जा सकता जब तक कि हमारी पूरी शिक्षा प्रणाली और जो हमारे ज्ञान की प्रणाली है, जब तक हम उसे नहीं बदलेंगे तब तक हम इससे पार नहीं पा सकते। देखिए भाषा का अनुवाद कौन करता है। एक बहुत छोटी-सी बात याद आ गई भाषा बनाता कौन है? आम आदमी बनाता या साहित्यकार? वास्तव में भाषा वह बनाता है जो उसको प्रयोग करता है। जैसे हमारे यहां गांव में जब 'ट्रैक्टर' आया तो जो किसान थे, जो अनपढ़ थे, उन्होंने उसका नाम कर दिया 'टैक्टर' जो मूल नाम से अलग था। आप देखते हैं ट्रैक्टर के बरक्स बोल-चाल में टैक्टर ज्यादा प्रचलित है। पहले हमने पेन को कलम किया, फिर हमने इसे रोक दिया कि नहीं कलम तो उसको कहते हैं जो सरकंडे की होती है और उससे लिखा जाता है। इस पेन को तो पेन ही कहना पड़ता है। इस तरह के तर्क भी दिए गए। तो कुछ लोग ये भी तर्क देंगे कि चलो साहब इसको कलम कहेंगे तो बॉल पेन को क्या कहेंगे? तो सवाल ये है कि वो ऐसे-ऐसे तर्क लाएंगे आपके सामने कि आप उसका कुछ नहीं कर सकते।

अनुवाद के विषय में एक बात कहता हूं कि यह सरल होने के साथ-साथ एक कठिन कार्य भी है। मैं एक दृष्टांत से अपनी बात रखता हूं, अनुवादक क्या करता है? एक राजगीर होता है जो दीवार बनाता है तो उसके सामने आप कैसे भी पत्थर डाल दो, वह कैसे भी काटछांट कर उसे गुणिया में करके उसे सही कर देगा। थोड़ी सी जगह खाली होगी तो उसमें एक करनी सीमेंट भर देगा और दूसरा पत्थर ऊपर रख देगा। अब दीवार तैयार हो गई। ये तो हो गया मूल। अब इसको बिखेरो। इसको खंडित करो और सारी सामग्री अलग करके अनुवादक से कहो कि अब आप दीवार खड़ी करें। कैसे करेगा? जहां-जहां गैप थे, पहली बार अनुवादक ही ढूंढ़ेगा। मूल वाले को तो पता ही नहीं लगेगा कि उसने कहां-कहां गैप छोड़ दिए, कहां स्पेस छोड़ दिए, कहां अपनी बात को पूरा नहीं किया। ये सिर्फ एक अनुवादक है जोकि एक जागरूक पाठक होता है इसलिए वो पकड़ सकता है कि इसमें ये कमी रह गई है। अतः अनुवादक का काम बहुत दुरूह है, दोयम दर्जे का नहीं है। वो बीस गुना मुश्किल काम है चूंकि वापस उसी सामग्री से वैसी की वैसी दीवार बना देना एक चमत्कार से कम नहीं होता।

***

जलवायु वित्तपोषण

रुपेश मोहन लाढे
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, नाशिक

'जलवायु वित्त' एक बहुआयामी अवधारणा है। यह आम तौर पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने या अनुकूलित करने के उद्देश्य से गतिविधियों के लिए वित्त को संदर्भित करती है। हालांकि, इसे कभी-कभी हरित वित्त, संवहनीय वित्त और कम कार्बन वित्त की संबंधित और अतिव्यापी अवधारणाओं के साथ जोड़ दिया जाता है।

हालांकि जलवायु वित्त की कोई एक परिभाषा नहीं हैं, संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यूएनएफसीसीसी) की वित्त संबंधी स्थायी समिति एक आधिकारिक संस्करण के सबसे करीब है:

''जलवायु वित्त का उद्देश्य उत्सर्जन को कम करना और ग्रीनहाउस गैसों के संचय को बढ़ाना हैं और इसका उद्देश्य नकारात्मक जलवायु परिवर्तन प्रभावों के प्रति मानव और पारिस्थितिक प्रणालियों की संवेदनशीलता को कम करना, बनाए रखना और लचीलापन बढ़ाना हैं।''

जलवायु वित्त की यह परिभाषा जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद करने के उद्देश्य से सभी गतिविधियों, कार्यक्रमों या परियोजनाओं के लिए धन के प्रवाह से संबंधित है ।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस परिभाषा में केवल परिसंपत्तियों और गतिविधियों में सीधे प्रवाहित होने वाला वित्त शामिल है और वित्तीय बाजार गतिविधि को छोड़ दिया गया है, जैसे कंपनियों का बैंक ऋण या निजी और सार्वजनिक इक्विटी में निवेश। इस प्रकार 'दोहरी गिनती' से बचने के मूल सिद्धांत का पालन करना है। (उदाहरण के लिए, किसी बैंक से किसी ऊर्जा उपयोगिता को दिए गए ऋण के साथ-साथ प्राप्तकर्ता कंपनी द्वारा ऋण से प्राप्त आय का उपयोग करके नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन में किए गए निवेश की गणना करने का मतलब होगा कि एक ही गतिविधि के लिए दो बार वित्त की गणना करना।)

स्विट्जरलैंड के अल्पाइन रिसॉर्ट शहर दावोस में आयोजित बैठक में निम्न लिखित मुद्दों पर चर्चा की गई - महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्रों के संरक्षण और सुरक्षा में मदद के लिए वित्तपोषण को कैसे अनलॉक किया जाए और दस लाख प्रजातियों के विलुप्त होने के खतरे को कैसे रोका जाए।

यह चर्चा कनाडा के मॉन्ट्रियल में संयुक्त राष्ट्र जैव विविधता सम्मेलन (COP15) के बाद हुई है, जहां देशों ने कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे को अपनाया था, जो जैव विविधता के खतरनाक नुकसान संबंधी समाधान करने और अधिकारों का सम्मान करते हुए 2030 तक पारिस्थितिक तंत्र को संतुलित करने के लिए एक ऐतिहासिक समझौता है। साथ ही स्वदेशी लोगों और स्थानीय समुदायों की और सभी हितधारकों की पूर्ण और प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करना है।

इन लक्ष्यों के लिए बड़े निवेश की आवश्यकता होगी। जैसे-जैसे जैव विविधता ढांचा कार्यान्वयन की ओर बढ़ रहा है, जैव विविधता संरक्षण के लिए धन कैसे जुटाया जाए यह एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा बना हुआ है।

वर्तमान में, प्रति वर्ष 154 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रकृति-आधारित समाधानों में प्रवाहित होते हैं - जो समाज के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों, जैसे जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं, भोजन और जल असुरक्षा से निपटने के लिए प्रकृति की शक्ति का उपयोग करते हैं। सीओपी 15 से पहले संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा जारी स्टेट ऑफ फाइनेंस फॉर नेचर रिपोर्ट के अनुसार, यह 2025 तक आवश्यक 370 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष के आधे से भी कम हैं।

सीओपी 15 रूपरेखा में 2030 तक जैव विविधता से संबंधित वित्त पोषण के लिए सार्वजनिक और निजी स्रोतों से प्रति वर्ष कम से कम 200 बिलियन अमेरिकी डॉलर जुटाने का आह्वान किया गया हैं। इसके अलावा 2030 तक, यह विकसित से विकासशील देशों में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रवाह को

कम से कम 30 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष तक बढ़ाने का लक्ष्य रखता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि सरकारें वर्तमान में प्रकृति-आधारित वित्त का लगभग 83 प्रतिशत प्रदान करती हैं - इसके साथ ही निजी क्षेत्र का वित्तपोषण और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

जलवायु वित्त – यह उन वित्तीय संसाधनों को संदर्भित करता है जो जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभावों से निपटने के लिये आबंटित किये जाते हैं। इसमें जलवायु शमन और अनुकूलन उपायों को प्रोत्साहित करने वाले वित्तीय साधनों एवं तंत्रों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल हैं। निम्न-कार्बन और जलवायु-प्रत्यास्थी अर्थव्यवस्थाओं की ओर देशों के संक्रमण तथा पेरिस समझौते में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु उन्हें सक्षम बनाने के लिए जलवायु वित्त महत्त्वपूर्ण है।

ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अनुकूल बनने और सतत विकास को आगे बढ़ाने में विकासशील देशों का समर्थन करने के लिए यह वित्तपोषण आवश्यक है।

जलवायु वित्त कार्य समूह (Climate Finance Working Group) के अनुसार, जलवायु परिवर्तन संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिए 118 ट्रिलियन रुपए की आवश्यकता हैं, जिनमें 64 ट्रिलियन रुपए उपलब्ध हैं जबकि 54 ट्रिलियन रुपए अप्रतिबंधित हैं। इस अंतराल को घरेलू और विदेशी ऋण के माध्यम से पूरा करना होगा। भारत के विकास वित्तीय संस्थानों (DFIs) और वाणिज्यिक बैंकों को घरेलू धन जुटाने एवं विदेशों से संसाधन प्राप्त करने में योगदान देना होगा।

जलवायु वित्त की चुनौतियों का समाधान करने के लिए भारत को पश्चिमी देशों द्वारा निर्धारित शर्तों पर कार्य करने के बजाय अपनी स्वयं की रूपरेखा और विभिन्न प्रकार की वित्तपोषण प्रणालियां विकसित करने की आवश्यकता है।

जलवायु वित्तपोषण से संबद्ध प्रमुख समस्याएं

- **पश्चिम से धन की कमी:**

विकसित देश ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के अधिकांश भाग के लिए ऐतिहासिक रूप से ज़िम्मेदार हैं जिससे जलवायु परिवर्तन की स्थिति बनी है।

लेकिन विभिन्न विकसित देश विकासशील देशों को जलवायु कार्रवाई हेतु पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान करने में विफल रहे हैं।

इसने एक महत्त्वपूर्ण वित्तपोषण अंतराल को जन्म दिया है और विकासशील देशों के लिए जलवायु परिवर्तन शमन एवं अनुकूलन उपायों को लागू करना कठिन हो गया है।

- **वित्त तक पहुंच का अभाव:**

कई विकासशील देश और छोटे द्वीप राज्य दुर्बल वित्तीय प्रणाली, अपर्याप्त नियामक ढाँचों और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों तक सीमित पहुंच जैसे विभिन्न कारकों के कारण वित्तपोषण तक व्यापक पहुंच नहीं रखते हैं।

- **वित्तपोषण की उच्च लागत:**

जलवायु संबंधी परियोजनाओं के लिए प्रायः उल्लेखनीय अग्रिम लागत और दीर्घावधिक वित्तपोषण की आवश्यकता होती है, जिन्हें सस्ती दरों पर प्राप्त करना कठिन सिद्ध हो सकता है। यह निवेशकों को, विशेष रूप से विकासशील देशों में, ऐसी परियोजनाओं के वित्तपोषण से हतोत्साहित कर सकता है।

- **अनिश्चितता और जोखिम:**

नियामक एवं नीतिगत रुपरेखा, बदलती प्रौद्योगिकी और प्राकृतिक आपदाओं के संबंध में व्याप्त अनिश्चितता के कारण जलवायु संबंधी निवेश जोखिमपूर्ण हो सकता हैं। इससे निवेशकों के लिए अपने निवेश पर संभावित रिटर्न का सटीक आकलन करना कठिन सिद्ध हो सकता है।

- **क्षमता और तकनीकी विशेषज्ञता का अभाव:**

कई विकासशील देशों में प्रभावी जलवायु परियोजनाओं को अभिकल्पित एवं कार्यान्वित करने हेतु तकनीकी विशेषज्ञता एवं क्षमता की कमी है, जिससे परियोजना कार्यान्वयन में देरी और अक्षमता की स्थिति बन सकती है।

- **राजनीतिक और नीतिगत बाधाएं:**

राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी जैसी राजनीतिक एवं नीतिगत बाधाएं जलवायु वित्तपोषण प्रयासों में बाधक बन सकती हैं।

- **निजी क्षेत्र की अपर्याप्त भागीदारी:**

जलवायु वित्तपोषण को बढ़ाने के लिए निजी क्षेत्र का निवेश महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन सीमित बाज़ार प्रोत्साहन, नियामक ढाँचे की कमी और जलवायु जोखिमों के बारे में सीमित जागरूकता जैसे विभिन्न कारकों के कारण निजी क्षेत्र की भागीदारी अभी भी अपर्याप्त है।

- **संसाधन की कमी:** अक्सर जलवायु परिवर्तन संबंधित परियोजनाओं के लिए वित्तीय संसाधन की कमी होती है। इसके परिणामस्वरूप, योजनाओं को पूरा करने में देरी होती है या फिर प्रोजेक्ट्स निरस्त कर दिए जाते हैं।

- **सहयोग की कमी:** कई बार सरकारी या व्यावसायिक स्तर पर जलवायु परिवर्तन से जुड़े प्रोजेक्ट्स के लिए उचित सहयोग की कमी होती है।
- **वित्तीय निर्णयों में अनियमितता:** जलवायु परिवर्तन से जुड़े प्रोजेक्ट्स को लेकर वित्तीय निर्णयों में अनियमितता रहती हैं, जिससे योजनाएं पूरी नहीं हो पाती हैं।
- **जोखिम और असुरक्षा:** जलवायु परिवर्तन के प्रोजेक्ट्स में बड़े रिस्क और असुरक्षा कारक हो सकते हैं, जो वित्तपोषण को भयावह बना सकते हैं।
- **स्थानीय स्तर पर सामरिकता:** कई बार स्थानीय स्तर पर जलवायु परिवर्तन से जुड़ी योजनाओं को लेकर सामरिकता और स्थानीय समर्थन की कमी होती है।
- **दुर्घटनाओं और विपरीत परिणामों का खतरा:** कई परियोजनाएं जलवायु परिवर्तन से जुड़ी होती हैं जिनमें दुर्घटनाएं और विपरीत परिणाम हो सकते हैं, जो वित्तपोषण के संबंध में अत्यधिक चिंता का कारण बन सकते हैं।

इन समस्याओं को हल करने के लिए, संबंधित स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग और समन्वय की आवश्यकता होती हैं। वित्तपोषण की सुविधा, स्थानीय स्तर पर सामरिकता और दूसरी चुनौतियों को समझने के लिए सशक्त नीतियों का विकास भी महत्त्वपूर्ण है।

जलवायु परिवर्तन एक गंभीर समस्या है जिसने विश्वभर में समुद्री स्तर में वृद्धि, तापमान में बदलाव, अकाल, बाढ़ और अन्य वायु परिवर्तन के असरों को बढ़ा दिया है। इससे जुड़ी समस्याओं को हल करने हेतु वित्तीय संसाधन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

जलवायु वित्तपोषण के लिए संबंधित पहलें

राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन अनुकूलन कोष (NFCC):

इसे वर्ष 2015 में भारत के उन राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के लिए जलवायु परिवर्तन अनुकूलन की लागत को पूरा करने के लिए स्थापित किया गया था जो विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के प्रति संवेदनशील हैं।

राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा कोष (NCEF):

इसे स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिये स्थापित किया गया था और इसे उद्योगों द्वारा कोयले के उपयोग पर एक आरंभिक कार्बन टैक्स के माध्यम से वित्तपोषित किया गया था। यह एक अंतर-मंत्रालयी समूह द्वारा शासित होता हैं जिसका अध्यक्ष वित्त सचिव होता है।

इसे जीवाश्म और गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित क्षेत्रों में नवीन स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी के अनुसंधान एवं विकास को वित्तपोषित करने का कार्यभार सौंपा गया है।

राष्ट्रीय अनुकूलन कोष (NF):

इसकी स्थापना वर्ष 2014 में 100 रुपए के कोष के साथ की गई थी जहां लक्ष्य था आवश्यकता और उपलब्ध धन के बीच की खाई को दूर करना।

यह कोष पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) के अंतर्गत संचालित है।

जलवायु वित्तपोषण में आनेवाली समस्यों का समाधान

वास्तव में, जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वित्तीय संसाधन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। इस समस्या के समाधान के लिए कई दिशाएं हो सकती हैं, जैसे कि:

डीएफआई से संसाधन जुटाना:

कम व्यावसायिक अपील के कारण बैंकिंग प्रणाली द्वारा जलवायु शमन एवं अनुकूलन निवेशों को वित्तपोषित करने की संभावना नज़र नहीं आती, इसलिए जलवायु वित्त को शामिल करने के लिए प्राथमिकता क्षेत्र को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना महत्त्वपूर्ण हैं।

हालांकि दीर्घावधिक संसाधनों को विकास वित्तीय संस्थानों (डीएफआई) से जुटाने की आवश्यकता होगी क्योंकि एक बड़ा वित्तपोषण अंतराल मौजूद हैं। डीएफआई ने पूर्व में घरेलू निधियों से प्रतिस्पर्द्धा और उच्च हेजिंग लागतों (hedging costs) के कारण विदेशी मुद्रा ऋणों से परहेज रखा है। जलवायु निवेश के लिये आवश्यक धन उपलब्ध कराने के लिए डीएफआई को प्रोत्साहित करने हेतु सरकार को हेजिंग लागत का प्रबंधन करने के उद्देश्य से उपयुक्त कदम उठाने होंगे।

निजी क्षेत्र से निवेश:

जलवायु शमन एवं अनुकूलन परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए निजी क्षेत्र का निवेश महत्त्वपूर्ण है। कुछ निवेशों को बैंक क्रेडिट तक पहुंच के माध्यम से वित्तपोषित किया जा सकता हैं, लेकिन कई अन्य औसत से कम रिटर्न, लंबी पूर्णता अवधि और उच्च वित्तीय जोखिमों के कारण ब्याज लागत को पूरा कर सकने में सक्षम नहीं भी हो सकते हैं।

मिश्रित वित्तपोषण को बढ़ावा देना:

जलवायु वित्तपोषण के समर्थन के लिये मिश्रित वित्त

(Blended finance) का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है। मिश्रित वित्त एक नवीन वित्तपोषण दृष्टिकोण है जो विकास उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सार्वजनिक और निजी पूंजी को संयुक्त करता है। उदाहरण के लिए, इसका उपयोग नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं, हरित अवसंरचना और जलवायु-कुशल कृषि के वित्तपोषण के लिए किया जा सकता है। इसका उपयोग जलवायु अनुकूलन परियोजनाओं, जैसे समुद्री दीवारों के निर्माण या जल प्रबंधन प्रणालियों में सुधार के लिए वित्तपोषण प्रदान करने के लिए भी किया जा सकता हैं।

कैटालिटिक या स्टार्ट-अप फंडिंग:

कैटालिटिक वित्तपोषण (Catalytic funding) का उपयोग प्रमुख आर्थिक गतिविधियों को हरित गतिविधियों में 'पुनरुद्देशित' करने के लिये किया जाना चाहिए, जो ऐसा विषय हैं जिसे पश्चिमी वित्त और इसकी रूपरेखा अपने वर्गीकरण के अनुसार चिह्नित नहीं भी करती है।

सरल और अनुल्लंघनीय वर्गीकरण ढांचे, निरीक्षण और क्षमता निर्माण तंत्र द्वारा समर्थित पुनर्उद्देश्य (Re-purposing) उल्लेखनीय रूप से कम मात्रा के निवेश के साथ मौजूदा आर्थिक गतिविधियों को हरित गतिविधियों में बदल सकता है।

नवोन्मेषी वित्तपोषण तंत्र की आवश्यकता:

ऐसे नवोन्मेषी वित्तपोषण तंत्र की आवश्यकता हैं जो विशेष रूप से विकासशील देशों में जलवायु संबंधी परियोजनाओं के लिए धन उपलब्ध करा सके। इनमें से कुछ तंत्रों में ग्रीन बॉण्ड, जलवायु कोष और कार्बन बाज़ार शामिल हैं।

नवाचारित ऊर्जा स्रोतों पर निवेश: ऊर्जा उत्पादन में साफ, नवाचारी तकनीकों पर निवेश करना। यह सोलर, विंड, हाइड्रो आदि में ऊर्जा स्रोतों का विस्तार कर सकता है।

प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग: वृद्धि के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग करके, जैसे कि वन्य जीवन के संरक्षण, जल संरक्षण और पुनर्नवीकरण को प्रोत्साहित करना।

साफ परिवहन तकनीकों में निवेश: जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए, साफ परिवहन तकनीकों में निवेश करना, जैसे कि इलेक्ट्रिक गाड़ियों, जलयान और सार्वजनिक परिवहन में बदलाव।

जलवायु संरक्षण पर शिक्षा और साक्षरता: जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर जागरूकता फैलाना और जलवायु संरक्षण की दिशा में साक्षरता और शिक्षा प्रदान करना।

समुदायों का समन्वयन: स्थानीय स्तर पर समुदायों को मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करना, ताकि वे जलवायु परिवर्तन के असर से निपट सकें।

सरकारी सहायता और समर्थन: सरकारों को जलवायु परिवर्तन से जुड़े प्रोजेक्ट्स के लिए सहायता और समर्थन प्रदान करना चाहिए, जैसे कि फाइनेंसिंग, सब्सिडी, और प्रोजेक्ट गोलों के लिए बेहतर नीतियां।

नवाचारी वित्तीय मॉडल: नए और नवाचारी वित्तीय मॉडल विकसित करने चाहिए, जो जलवायु परिवर्तन के प्रोजेक्ट्स को आकर्षक और विश्वसनीय बना सकते हैं।

वित्तीय संवर्धन: वित्तीय संसाधनों का संवर्धन करना चाहिए ताकि वित्तपोषण का संसाधन और उपयोग सुधर सके।

साझेदारियां और समर्थन: सरकार, व्यवसायिक संस्थाएं, और सामुदायिक संगठनों के बीच साझेदारियां और समर्थन को बढ़ावा देना चाहिए।

वित्तीय शिक्षा: जलवायु परिवर्तन से संबंधित वित्तीय शिक्षा और संज्ञानात्मक कार्यक्रमों को बढ़ावा देना चाहिए।

इन समाधानों को अपनाने से वित्तपोषण के माध्यम से जलवायु परिवर्तन की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। एक सहयोगी और समर्थ वित्तीय दृष्टिकोण से ये समाधान प्रभावी तरीके से काम कर सकते हैं।

इन दिशाओं में निवेश करने से जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने में मदद मिल सकती है, और यह वित्तीय संसाधनों को सही दिशा में उपयोगिता प्रदान कर सकता है।

उपसंहार:-

जलवायु परिवर्तन एक गंभीर समस्या है जिसने विश्वभर में समुद्री स्तर में वृद्धि, तापमान में बदलाव, अकाल, बाढ, और अन्य वायु परिवर्तन के असरों को बढ़ा दिया है। इससे जुड़ी समस्याओं को हल करने हेतु वित्तीय संसाधन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रकृति-आधारित समाधानों में निवेश अंतर को कम करने के लिए, ग्रीन बांड, जोखिम-साझाकरण सुविधाएं और रियायती वित्त जैसे वित्तीय उपकरण तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। यूएनईपी इस प्रयास में सबसे आगे है, भूमि उपयोग वित्त प्रभाव हब, सकारात्मक प्रभाव संकेतक निर्देशिका और यूएनईपी वित्त पहल जैसे नवीन उपकरणों के माध्यम से वित्तपोषण को बढ़ावा दे रहा है, जो बैंकों, बीमाकर्ताओं और निवेशकों का एक नेटवर्क है जो अधिक टिकाऊ वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं पर जोर दे रहा है।

***

ग्रामीण क्षेत्र में बैंकिंग विपणन

सचिन कुमार
अधिकारी
फतेहगढ़ शाखा, फर्रूखाबाद क्षेत्र

भारतीय अर्थव्यवस्था में ग्रामीण क्षेत्र की भूमिका अहम है। अतः कृषि प्रधान देश भारत का आधारभूत ढाँचा ग्रामीण क्षेत्र पर निर्भर है। ग्रामीण क्षेत्र में यदि एक दो कंपनियों को छोड़ दें तो बहुत ही कम कंपनियों ने अपनी पैठ की है। सभी संस्थाओं को यह जरूर समझना होगा कि ग्रामीण बाजार शहरी बाजार से भिन्न है अतः उनके लिए विशिष्ट विपणन रणनीति की आवश्यकता होगी।

यदि हम ग्रामीण बाजार की तरफ नजर डालें तो ग्रामीण क्षेत्र में वित्तीय संस्थानों की उपस्थिति अपेक्षाक्रम कम है। यदि किसी वित्तीय क्षेत्र की उपस्थिति ग्रामीण क्षेत्र में पैठ रही है तो वो है सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक। इस क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का एकल साम्राज्य रहा है लेकिन लम्बे कार्यकाल तक उपस्थिति के बावजूद सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने ग्रामीण क्षेत्र में मौजूद संभावनाओं का पूर्ण दोहन नहीं किया है। यह वह क्षेत्र है जहाँ उनका वर्चस्व रहा है परन्तु जल्द ही यह वर्चस्व कम हो सकता है। निजी क्षेत्र के बैंक अब इस बाजार में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को चुनौती देने जा रहे हैं।

विपणन वह हथियार है जिससे ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ती प्रतिस्पर्धा का सामना किया जा सकता है। ग्रामीण उपभोक्ता की पसंद-नापसंद, उसका व्यवहार और गतिविधि की बेहतर समझ और विश्लेषण ही इस बाजार में सफलता की कुंजी है। ग्रामीण बाजार शहरी बाजार से भिन्न होता है। ग्राहक व्यवहार भी भिन्न होता है। वे संस्थाएं जो अपने आपको ग्रामीण परिवेश में ढाल पाएंगी वे ही सफल हो पाएंगी। ग्रामीण बाजार के विभिन्न पहलुओं को निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है:

i. उपभोक्ता जागरूकता: पहले ग्रामीण क्षेत्र का उपभोक्ता उतना जागरूक नहीं था। उसके पास जो विकल्प उपलब्ध थे, चाहे या अनचाहे उसे ही चुनना था। परन्तु टीवी, रेडियो, अखबार और मोबाइल ने आज तस्वीर बदल दी है। आज का ग्रामीण उपभोक्ता जागरूक भी है और वह प्रश्न करना भी जानता है। यदि वित्तीय संस्थान यह मानकर चल रहे हैं कि ग्रामीण उपभोक्ता जागरूक नहीं है तो ऐसा सही नहीं है।

ii. ग्राहक वफादारी: यदि हम उन कंपनियों के अनुभवों से सीखें जो पहले से ग्रामीण बाजार में उपस्थित हैं तो हम पाएंगे कि ग्रामीण उपभोक्ता शहरी उपभोक्ता की तुलना में अधिक वफादार होता है। ग्रामीण उपभोक्ता अपने ब्रांड या संस्था जिसकी सेवा का वह उपभोग करा रहा है, उसे तब तक नहीं बदलता जब तक कि उसे अत्यधिक असुविधा का सामना न करना पड़े। इसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण उपभोक्ता अत्यधिक वफादार होता है। अतः पुराने ग्राहकों को तोड़ना एक टेढ़ी खीर होगी परन्तु एक बार आ जाने पर बनाए रखना आसान होगा ।

iii. ग्राहक ईमानदारी: ग्रामीण क्षेत्र का उपभोक्ता अधिक ईमानदार होता है। अतः बैंकों को अपनी वसूली करने में सहूलियत होती है। यदि परिस्थितियाँ प्रतिकूल न हों तो बैंकों को अपने ऋणों की वसूली की चिंता नहीं होगी। ग्रामीण क्षेत्रों में धोखाधड़ी और जालसाजी की घटनाएं बहुत ही कम देखने को मिलती हैं। ग्रामीण उपभोक्ता इन परेशानियों से दूर ही रहना चाहता है क्योंकि ज्यादातर ग्रामीण अपने पुश्तैनी जमीनों और मकानों में रहते हैं और जालसाजी या धोखाधड़ी करके वे अन्यत्र नहीं जा सकते तथा उन्हें अपनी इज्जत खोने का भी डर होता है ।

iv. ग्राहक संबंध: ग्रामीण क्षेत्र में ग्राहक संबंध बहुत मायने रखते हैं। ग्रामीण बाजार शहरी बाजार से इस मामले में बिलकुल विपरीत है। ग्रामीण बाजार में व्यक्तिगत स्तर पर ग्राहक संबंध बहुत मायने रखते हैं। ग्राहक उस बैंक को ज्यादा पसंद करते हैं जहाँ का कर्मचारी उससे उसके बच्चों, परिवार और खेती या व्यवसाय के बारे में हालचाल पूछता है। केवल व्यापारिक स्तर पर संबंध रखने को ग्रामीण उपभोक्ता पसंद नहीं करता।

v. अनियमित आय और असमान आय वितरण: ग्रामीण बाजार की एक प्रमुख विशेषता है अनियमित आय। ग्रामीण उपभोक्ता कृषि पर निर्भर होता है और कृषि में फसल तैयार होने पर ही आय होती है। इसके पहले सारी लागत होती है। भूमि का समान वितरण भी असमान आय वितरण को जन्म देता है। इस कारण से बैंकिंग व्यवस्था को यह समझना होगा कि फसल काटते समय या जुताई के समय, बीज डालते समय बैंकिंग व्यवस्था का कार्य अधिक होगा अन्यथा बाकी समय कार्यस्तर कम होगा। फसल कटने के बाद ग्रामीण क्षेत्र में धन

उपलब्धता बढ़ जाती है और यही वसूली का सही समय होता है बाकी समय तो सिर्फ ऋण वितरण का होता है।

vi. गैर तकनीकी ग्राही ग्राहक: ग्रामीण उपभोक्ता कम तकनीकी ग्राही हो सकता है। हो सकती है । वह तकनीकी को देखकर दूर भागता हो। जो तकनीकी आधारित सेवाएं उसे प्रदान की जाएं उसमें यह ध्यान रखना अति आवश्यक है कि वह तकनीकी रूप से प्रयोग में कठिन न हों। यदि सेवा तकनीकी आधारित होगी तो ग्रामीण उपभोक्ता उसका प्रयोग करने से हिचक भी सकता है। दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि ग्रामीण क्षेत्र का अधिकांश उपभोक्ता अशिक्षित है और इस कारण से भी यह तकनीकी आधारित सेवा का प्रयोग करने में अपने आप को अक्षम पाता है। इसके लिए हाल ही में कुछ बैंकों ने ग्रामीण क्षेत्र के ग्राहकों के लिए बायोमेट्रिक एटीएम सेवा की शुरूआत की है ।

ग्रामीण क्षेत्र में विपणन की रणनीति के मुख्य पहलू

i. स्थानीय भाषा: विपणन की सबसे प्रमुख आवश्यकता होती है ग्राहकों को आकर्षित करना तथा अपने उत्पाद या सेवा को बेचना। ग्राहक आपसे सेवा तभी खरीदेगा जब उसे सेवा स्थानीय भाषा में प्राप्त होगी। स्थानीय भाषा एवं स्थानीय संस्कृति में मिश्रित सेवा ही उनके दिलों को छू सकती है। विपणन का एक सिद्धांत यह भी कहता है कि ग्राहकों को आकर्षित करने में ही बहादुरी नहीं है अपितु बहादुरी है तो उन्हें अपने पास बनाए रखने में। संप्रेषण तभी प्रभावी होगा जब वह स्थानीय भाषा में हो।

ii. स्थानीय व्यक्ति: यदि सेवा प्रदाता व्यक्ति स्थानीय हो तो उसका प्रभाव विशिष्ट होता है। व्यक्ति उससे अधिक लगाव महसूस करता है। स्थानीय व्यक्ति के नौकरी छोड़ कर जाने की संभावना भी कम होती है। स्थानीय व्यक्ति लोगों की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ सकता है और उनका निस्तारण कर सकता है।

iii. व्यक्तिगत संबंध एवं मानवीय पहलू: ग्रामीण विपणन के लिए आवश्यक है कि तकनीकी पहलू की अपेक्षा मानवीय पहलू पर अधिक जोर दिया जाए। यदि कोई ग्राहक ग्रामीण क्षेत्र में स्थित बैंक में आता है तो उसकी अपेक्षा त्वरित सेवा ही नहीं होती बल्कि बैंक के लोगों से मिलने की भी होती है। अतः एक सेवा प्रदाता के रूप में आपका व्यवहार अलग होना चाहिए। ग्राहक प्रबंधन में सेवा तंत्र की आवश्यकता अधिक होती है। बैंक कर्मियों के लिए आवश्यक है कि वे ग्राहक के परिवार की जानकारी रखें और समय आने पर उपयुक्त उत्पाद की सलाह दें। आक्रामक विपणन नीति ग्रामीण बाजार में प्रभावी नहीं भी हो सकती है।

iv. ग्रामीणोन्मुखी वित्त उत्पाद: यदि विपणनकर्ता यह सोचते हैं कि सभी क्षेत्रों के लिए एक ही उत्पाद प्रभावी होता है तो वे गलत हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के लिए वित्त उत्पाद अलग होने चाहिए। ग्रामीण बाजार के गुणों का ध्यान रखते हुए यथोचित उत्पाद बनाए जाने चाहिए। ऐसे ऋण उत्पाद जहाँ देर से किश्त अदायगी पर कोई जुर्माना न हो। ग्राहक को अपनी किश्त एवं मात्रा की आजादी हो। ऐसे उत्पाद उनके लिए अनुकूल हैं। सूखा पड़ने जैसी प्राकृतिक आपदा के समय ऋण को बिना अतिरिक्त जुर्माना भार के अगले वर्ष या बाकी वर्षों में समावेशित करना। सूक्ष्म वित्त आधारित उत्पाद भी ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत प्रभावी हैं।

v. स्थानीकृत विपणन रणनीति: ग्रामीण बाजार के लिए यह आवश्यक है कि विपणन रणनीति का विकास स्थानीय कारकों को ध्यान में रखकर किया जाए। क्षेत्र में ग्राहक की किस्म, उनकी आय, आयु, लिंग, जमीन की उर्वरता, फसल चक्र, पट्टा धन, बाजार अदि को ध्यान में रखकर विपणन रणनीति का विकास ही सफलता की कुंजी है।

vi. मूल्य नियंत्रण: ग्रामीण उपभोक्ता दाम अर्थात मूल्य के प्रति बहुत संवेदनशील होता है। यदि हम विपणन के चार स्तंभ (Ps) की बात करें तो उनमें से एक है मूल्य। शहरी उपभोक्ता सेवा और मूल्य दोनों पर ध्यान देता है और बेहतर सेवा के लिए वह अतिरिक्त मूल्य अदा कर सकता है। लेकिन ग्रामीण उपभोक्ता शायद ही अतिरिक्त सेवा के लिए अधिक मूल्य अदा करे। ग्रामीण विपणन में मूल्य का प्रयोग सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए ।

vii. प्रचार माध्यम: विपणन का अहम् हिस्सा है प्रचार। जो प्रचार माध्यम शहरी उपभोक्ता के लिए लागू है, वे ग्रामीण उपभोक्ता के लिए नहीं है। ग्रामीण उपभोक्ता के लिए प्रभावी टीवी चैनल, दूरदर्शन, रेडियो पर आकाशवाणी और अखबार में स्थानीय अखबार हैं। नाटक और स्थानीय बाजार, साप्ताहिक हाट प्रचार के लिए अच्छे माध्यम हो सकते हैं। स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेकर बैंक अपने उत्पादों का प्रचार कर सकते हैं।

ग्रामीण विपणन सतही तौर पर तो आसान लगता है परंतु यह समझना अति आवश्यक है कि ग्रामीण उपभोक्ता की जरूरतें अलग हैं और उनका गलत आंकलन संस्था के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है तथा एक सही कदम सफलता के द्वार खोल सकता है। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के साथ यह एक सकारात्मक पहलू है कि वे ग्रामीण क्षेत्र में पहले से उपस्थित हैं और ग्रामीण उपभोक्ता सरकारी तंत्र पर ज्यादा विश्वास करता है। इस कारण से यदि सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक सही समय पर पहल करें और प्रभावी विपणन तंत्र विकसित करें तो उन्हें सफलता जल्दी मिलेगी । ***

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में वार्षिक राजभाषा समारोह – 2023 एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 18 दिसंबर, 2023 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में वार्षिक राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन) श्री अजय कुमार खोसला ने की। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक श्री मनमोहन गुप्ता, प्रमुख-राजभाषा एवं संसदीय समिति श्री संजय सिंह, सहायक महाप्रबंधक – राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री पुनीत कुमार मिश्र तथा अन्य वरिष्ठ कार्यपालक एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। समारोह के मुख्य अतिथि प्रोफेसर भरत मेहता, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, गुजराती विभाग, रहे। हास्य कवि सम्मेलन में श्री चिराग जैन (दिल्ली), श्री हिमांशु बवंडर (उज्जैन) और श्री अभिसार शुक्ल (दिल्ली) को आमंत्रित किया गया था। इस असवर पर राजभाषा कार्यान्वयन में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले विभागों और हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर प्रधान कार्यालय में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालय, नवसारी

दिनांक 23 नवंबर, 2023 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, में अंचल कार्यालय, बड़ौदा को 'ख' क्षेत्र की श्रेणी में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु 'तृतीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम श्री रमेश बैस द्वारा श्री संजय कुमार चौधरी, क्षेत्रीय प्रबंधक ने ग्रहण किया गया। माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा द्वारा श्री ओम प्रकाश मीणा, प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से बैंक ऑफ़ बड़ौदा को प्राप्त क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों की झलकियाँ।

अंचल कार्यालय, जयपुर

दिनांक 28 दिसंबर, 2023 को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, उत्तर क्षेत्र द्वारा जोधपुर में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति जयपुर को वित्तीय वर्ष 2022-23 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यनिष्पादन हेतु प्राप्त 'द्वितीय पुरस्कार' राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री कलराज मिश्र एवं केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र के करकमलों से उप अंचल प्रबंधक श्री सुधांशु शेखर खमारी और श्री सोमेंद्र यादव (मुख्य प्रबंधक) ने ग्रहण किया।

अंचल कार्यालय, बरेली

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली को वित्तीय वर्ष 2022-23 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से 'तृतीय पुरस्कार' प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार दिनांक 28 दिसंबर, 2023 को आईआईटी जोधपुर में आयोजित कार्यक्रम में राजस्थान के राज्यपाल महामहिम श्री कलराज मिश्र और केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के कर कमलों से बरेली अंचल के अंचल प्रमुख श्री एम अनिल और मुख्य प्रबंधक श्री महीपाल चौहान ने प्राप्त किया।

अंचल कार्यालय, चंडीगढ़

दिनांक 28 दिसंबर, 2023 को गृहमंत्रालय, राजभाषा विभाग, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय - 1 द्वारा जोधपुर में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में बैंकों की श्रेणी में 'ख' क्षेत्र के अंतर्गत बैंक ऑफ़ बड़ौदा - अंचल कार्यालय, चंडीगढ़ को वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यनिष्पादन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख श्री विमल कुमार नेगी ने राजस्थान के राज्यपाल और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामहिम श्री कलराज मिश्र के कर कमलों से पुरस्कार ग्रहण किया। अंचल राजभाषा प्रभारी सुश्री मोनिका सिंह ने केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्र के कर कमलों से प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

अंचल कार्यालय, वडोदरा

दिनांक 23 नवंबर, 2023 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, मुंबई में अंचल कार्यालय, बड़ौदा को 'ख' क्षेत्र की श्रेणी में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु 'प्रथम पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम श्री रमेश बैस द्वारा श्री विवेक कुमार गुप्ता, उप अंचल प्रबंधक को प्रदान किया गया। माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा द्वारा सुश्री सुधा मिश्रा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, प्रयागराज

दिनांक 28 दिसंबर, 2023 को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जोधपुर में आयोजित उत्तरी क्षेत्रों के संयुक्त सम्मेलन में राजभाषा के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु वाराणसी क्षेत्रीय कार्यालय को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार राजस्थान के माननीय राज्यपाल महामहिम श्री कलराज मिश्र द्वारा श्री संजीव भास्कर, आरबीडीएम, वाराणसी क्षेत्र को एवं केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा के कर कमलों से प्रशस्ति पत्र प्रभात कुमार भारती को प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी

दिनांक 23 नवंबर, 2023 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन, मुंबई में क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी को 'ग' क्षेत्र की श्रेणी में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु 'तृतीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम श्री रमेश बैस द्वारा श्री राजेश कुमार झा, क्षेत्रीय प्रमुख को प्रदान किया गया। माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा द्वारा श्री अवनीप कुमार प्रबंधक (राजभाषा) को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया।

जलवायु परिवर्तन और भारतीय कृषि

नौशाद कुरैशी
प्रबंधक
सबावाला शाखा, देहरादून

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक मुद्दे के रूप में उभर कर आया है। जलवायु परिवर्तन कोई एक देश या राष्ट्र से संबंधित अवधारणा नहीं है अपितु यह एक वैश्विक अवधारणा है, जो समस्त पृथ्वी के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। देखा जाए तो जलवायु परिवर्तन से भारत सहित पूरी दुनिया में बाढ़, सूखा, कृषि संकट एवं खाद्य सुरक्षा, बीमारियां, प्रवसन आदि का खतरा बढ़ा है, लेकिन चूंकि भारत की एक बड़ी आबादी लगभग 60% आज भी कृषि पर निर्भर है, इसलिए कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को देखना बहुत जरूरी हो जाता है। जलवायु परिवर्तन मुख्य रूप से तापमान और वर्षा में वृद्धि या कमी को माना जाता है। हाल के दशकों में, मानवजनित गतिविधिओं को जलवायु परिवर्तन के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार ठहराया गया है। ग्लोबल क्लाइमेट रिस्क इंडेक्स 2023 के अनुसार, भारत जलवायु परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित दस शीर्ष देशों में शामिल है। जलवायु की बदलती परिस्थितियां कृषि को सबसे अधिक प्रभावित कर रहीं हैं, क्योंकि लंबे समय में ये मौसमी कारक जैसे तापमान, वर्षा, आर्द्रता आदि पर निर्भर करती है। यहाँ हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि जलवायु परिवर्तन कृषि को कैसे प्रभावित करता है।

जलवायु परिवर्तन कृषि को कई प्रकार से प्रभावित करता है। उदाहरणार्थ:–

1. उत्पादन में कमी:– जलवायु परिवर्तन के कारण विश्व कृषि इस सदी में गंभीर गिरावट का सामना कर रही है। सरकारी पैनल के अनुसार, फसल उत्पादकता पर जलवायु परिवर्तन का कुल प्रभव सकारात्मक से ज्यादा नकारात्मक होगा। भारत में 2010–2039 के बीच लगभग 4.5 प्रतिशत से 9 प्रतिशत के बीच उत्पादन के गिरने की संभावना है। एक शोध के अनुसार, यदि वातावरण का औसत तापमान 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ता है तो इससे गेहूं का उत्पादन 17 प्रतिशत तक कम हो सकता है। इसी प्रकार 2 डिग्री सेल्सियस तापमान बढ़ने से धान का उत्पादन भी 0.75 टन प्रति हेक्टेयर कम होने की संभावना है।

2. कृषि योग्य परिस्थितियों में कमी:– जलवायु परिवर्तन के कारण भारत के जल स्रोत तेजी से सिकुड़ रहे हैं, जिससे किसानों को परम्परागत सिंचाई के तरीके छोड़कर पानी की खपत कम करने वाले आधुनिक तरीके एवं फसलें अपनानी होंगी। ग्लेशियर के पिघलने से कई बड़ी नदियों के जल संग्रहण क्षेत्र में दीर्घावधिक रूप से कमी आ सकती है, जिससे कृषि एवं सिंचाई में जलाभाव से गुजरना पड़ सकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण की वजह से प्रदूषण, भू–क्षरण और सूखा पड़ने से पृथ्वी के तीन–चौथाई भूमि क्षेत्र की गुणवत्ता कम हो गई है।

3. औसत तापमान में वृद्धि:– जलवायु परिवर्तन के कारण पिछले कई दशकों में तापमान में वृद्धि हुई है। औद्योगीकरण के प्रारंभ से अब तक पृथ्वी के तापमान में लगभग 0.7 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो चुकी है। कुछ पौधे ऐसे होते हैं जिन्हें एक विशेष तापमान की आवश्यकता होती है। वायुमंडल के तापमान बढ़ने पर उनके उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जैसे गेंहू, सरसो, जौ और आलू आदि इन फसलों को कम तापमान की आवश्यकता होती है जबकि तापमान का बढ़ना इनके लिए हानिकारक होता है। इसी प्रकार अधिक तापमान बढ़ने से मक्का, ज्वार और धान आदि फसलों का क्षरण हो सकता है क्योंकि अधिक तापमान के कारण इन फसलों में दाना नहीं बनता अथवा कम बनता है। इस प्रकार तापमान की वृद्धि इन फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। एक अध्ययन के अनुसार, जलवायु परिवर्तन से सिंचित और असिंचित भूमि से कृषि उत्पादन क्रमश: 18 और 25 प्रतिशत तक कम हो सकता है। भारत में जलवायु परिवर्तन से चावल, गेंहू और मक्का जैसे अनाज फसलों के उत्पादन में विशेष रूप से कमी आएगी। कुल मिलाकर कृषि उत्पादन जलवायु परिवर्तन के खतरे, बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण और आर्थिक विकास की चुनौतियों से घिरे हुये हैं।

4. वर्षा के स्वरूप में बदलाव :– भारत का दो तिहाई कृषि क्षेत्र वर्षा पर निर्भर है और कृषि की उत्पादकता वर्षा एवं इसकी मात्रा पर निर्भर करती है। वर्षा की मात्रा व तरीकों में परिवर्तन से मृदा क्षरण और मिट्टी की नमी पर प्रभाव पड़ता

है। जलवायु के कारण तापमान में वृद्धि से वर्षा में कमी होती है जिससे मिट्टी में नमी समाप्त होती जाती है। इसके अतिरिक्त तापमान में कमी व वृद्धि होने का प्रभाव वर्षा पर पड़ता है जिस कारण भूमि में अपक्षय और सूखे की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। मध्य भारत 2050 तक शीत वर्षा में 10 से 20 प्रतिशत तक कमी अनुभव करेगा। पश्चिमी अर्धमरुस्थलीय क्षेत्र द्वारा सामान्य वर्षा की अपेक्षा अधिक वर्षा प्राप्त करने की संभावना है। इसी प्रकार मध्य पहाड़ी क्षेत्रों में तापमान में वृद्धि एवं वर्षा में कमी से चाय की फसल में कमी हो सकती है।

5. कार्बन डाइ-ऑक्साइड में वृद्धि:- पिछले 30-50 वर्षों के दौरान कार्बन डाइ-ऑक्ससाइड की मात्र 450 PPM तक पहुंच गई है। हालांकि कार्बन डाइ-ऑक्ससाइड की मात्रा में वृद्धि कुछ फसलों जैसे गेंहू और चावल के लिए लाभदायक है, परंतु इसके बावजूद भी कुछ मुख्य खाद्यान्न फसलों की उपज में गिरावट आई है।

6. कीट एवं रोगों में वृद्धि:- जलवायु परिवर्तन के कारण कीटों और रोगाणुओं में वृद्धि होती है। गर्म जलवायु में कीटपतंगों की प्रजनन क्षमता बढ़ जाती है, जिससे कीटों की संख्या अधिक बढ़ जाती है और इसका कृषि पर काफी दुष्प्रभाव पड़ता है। साथ ही कीटों और रोगाणुओं को नियंत्रित करने के लिए कीटनाशकों का प्रयोग भी कहीं न कहीं फसलों के लिए नुकसानदायक होता है।

कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के विभिन्न तरीके:-

सभी वैश्विक देशों में भारत अपने जीएचजी उत्सर्जन को कम करने के लिए सहमत हो गया है। उपयुक्त तकनीकों का उपयोग कर आनुवांशिक हेरफेर, फसलों और जानवरों की उत्पादकता में सुधार, संसाधनों और कचरे का कुशल प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन द्वारा उत्पन्न चुनौतियों के लिए फसलों का अनुकूलन करना आवश्यक है। खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार, 2050 तक विश्व की जनसंख्या लगभग 9 अरब हो जाएगी, जिससे खाद्यान्न की आपूर्ति और मांग के बीच अंतर को कम करने के लिए मौजूदा खाद्यान्न उत्पादन को दोगुना करने की आवश्यकता पड़ेगी। इसके लिए भारत जैसे कृषि प्रधान देशों को अभी से नये उपाय करने होंगे। हमारी कृषि व्यवस्था को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से बचाने के अनेक उपाय हैं, जिन्हें अपनाकर कुछ हद तक कृषि पर जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है। साथ ही पर्यावरण मैत्री तरीकों का प्रयोग करके कृषि को जलवायु परिवर्तन के अनुकूल किया जा सकता है।

वर्षा जल का उचित प्रबंधन:-

वातावरण के तापमान में वृद्धि के साथ-साथ फसलों में सिंचाई की अधिक आवश्यकता पड़ती है। ऐसी स्थिति में जमीन का संरक्षण व वर्षा जल को एकत्रित करके सिंचाई हेतु प्रयोग में लाना एक उपयोगी कदम साबित हो सकता है। वाटर शेड प्रबंधन के माध्यम से हम वर्षा जल को संचित करके सिंचाई के रूप में उपयोग कर सकते हैं। इससे एक ओर हमें सिंचाई में मदद मिलेगी वहीं दूसरी ओर यह भूजल पुर्नभरण में भी सहायक सिद्ध होगा।

जैविक एवं मिश्रित कृषि:-

रासायनिक खेती से हरित गैसों में वृद्धि होती है जो वैश्विक तापन में सहायक होती हैं। इसके अलावा रासायनिक खाद व कीटनाशकों के प्रयोग से जहां एक ओर मृदा की उत्पादकता घटती है वहीं दूसरी ओर मानव स्वास्थ्य को भी भोजन के माध्यम से नुकसान पहुंचाती है। अतः इसलिए जैविक कृषि की तकनीकों पर अधिक जोर देना चाहिए। एकल कृषि के स्थान पर मिश्रित कृषि लाभदायक होती है। मिश्रित कृषि में विविध फसलों का उत्पादन किया जाता है , जिससे उत्पादकता के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन से प्रभावित होने की संभावना नगण्य हो जाती है।

फसल उत्पादन में नई तकनीकों का विकास:-

जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभावों को ध्यान में रखते हुए ऐसे बीज और नई किस्मों का विकास किया जाए, जो नये मौसम के अनुकूल हो। हमें फसलों के प्रारूप तथा उनके बीज बोने के समय में भी परिवर्तन करना होगा। ऐसी किस्मों को विकसित करना होगा, जो अधिक तापमान, सूखे तथा बाढ़ जैसी संकटमय परिस्थितियों को सहन करने में सक्षम हों। पारम्परिक ज्ञान तथा नई तकनीकों के समन्वयन और समावेशन द्वारा मिश्रित खेती तथा इंटरक्रोपिंग करके जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटा जा सकता है।

जलवायु स्मार्ट कृषि:-

देश में जलवायु स्मार्ट कृषि विकसित करने की पहल की गई है, जिसके लिए राष्ट्रीय परियोजना भी लागू की गई है। वास्तव में जलवायु स्मार्ट कृषि जलवायु परिवर्तन की तीन परस्पर चुनौतियों से निपटने की कोशिश करती है: उत्पादकता और आय बढ़ाना, जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होना तथा कम उत्सर्जन करने में योगदान करना. उदाहरण के लिए, यदि सिंचाई की बात करें तो जल के उचित इस्तेमाल के लिए सूक्ष्म सिंचाई को लोकप्रिय बनाना। जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होना यह दर्शाता है कि कृषि को जलवायु परिवर्तन सहन करने हेतु सक्षम बना लिया गया है । ***

बॉब प्रतियोगिताएं

बैंक स्तर पर विभिन्न अवसरों पर विद्यालयों/महाविद्यालयों में अलग-अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनकी झलकियां यहां प्रस्तुत हैं :- संपादक

क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार

दिनांक 26 अक्तूबर, 2023 को हिसार क्षेत्र की भाटोल जाटान शाखा द्वारा ऋषिकुल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, भाटोल में बॉब हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को स्कूल प्रबंधन आर संयुक्त शाखा प्रबंधक द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बर्द्धमान

दिनांक 21 दिसंबर, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय बर्द्धमान द्वारा हरिसभा गर्ल्स हाई स्कूल में कक्षा 7 एवं 8 की छात्राओं के लिए बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 25 छात्राओं ने हिस्सा लिया एवं सर्वोत्कृष्ट प्रथम 3 छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। अन्य सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र एवं चॉकलेट देकर प्रोत्साहित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना

दिनांक 13 अक्तूबर, 2023 को लुधियाना क्षेत्र की भट्टी रोड शाखा द्वारा सरकारी प्राथमिक स्कूल बठिंडा में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता तथा वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को स्कूल प्रबंधन तथा शाखा प्रमुख श्रीमति अभिलाषा डोगरा द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर

क्षेत्रीय कार्यालय, जालंधर और गोराया शाखा द्वारा दिनांक 06 नवंबर, 2023 को गोराया प्राथमिक विद्यालय, गोराया में बॉब सुलेख लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को शाखा प्रमुख श्री साहिल खुराना तथा वरिष्ठ प्रबंधक श्री रामू तिवारी द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, भरतपुर

दिनांक 01 नवंबर, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, भरतपुर द्वारा होली मदर पब्लिक स्कूल में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा 8 एवं 9 के 57 विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा प्रथम 5 विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे जिला

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे जिला द्वारा थेउर शाखा के साथ मिलकर 08 दिसंबर, 2023 को वंहा स्थित मुकतई मेमोरियल स्कूल में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी पुरस्कृत विद्यार्थी उनके अध्यापक गण तथा थेउर शाखा प्रमुख श्री अमित गारडे, मुख्य प्रबंधक उपस्थित रहे। इस प्रतियोगिता में 135 विध्यार्थियों ने भाग लिया।

दिनांक 03.11.2023 को अलीराजपुर द्वारा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, लक्ष्मणी में विद्यार्थियों हेतु प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अग्रणी जिला प्रबंधक, अलीराजपुर श्री राजेश हासवानी, मुख्य प्रबंधक, अलीराजपुर शाखा श्री गोबिंद बरोनिया और विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक श्री डी. एस. बामनिया व अन्य मौज़ूद थे। प्रतियोगिता के उपरांत विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित भी किया गया।

बैंकिंग आपके द्वार पर (डोर स्टेप बैंकिंग)

आनंद सिंह
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, सुलतानपुर

बैंकिंग, सेवा क्षेत्र का एक प्रमुख अंग है। डिजिटल क्रांति ने बैंकिंग को बेहद आसान कर दिया है। एक समय था जब विभिन्न बैंकिंग सेवाओं हेतु ग्राहकों को कई किलोमीटर दूर बैंक की अपनी शाखा में जाना पड़ता था। कंप्यूटर क्रांति से कोर-बैंकिंग सोल्यूशन आया जिससे बैंकिंग और आसान हो गई। एटीएम सुविधा ने लेन-देन संबंधी कार्यों को और आसान कर दिया। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और मोबाइल ऐप्लीकेशन की सेवाओं ने बैंक को ग्राहकों की हथेली पर ला दिया। बैंकिंग सेवाओं में इस प्रकार से क्रमगत विकास होता गया। ऐसी ही आधुनिक बैंकिंग सेवाओं में एक सेवा है - डोर स्टेप बैंकिंग अर्थात् बैंकिंग आपके द्वार पर। जी, हां अब आपको विभिन्न बैंकिंग सेवाओं हेतु बैंक या शाखा जाने की जरूरत नहीं। यह खास सेवाएं जरूरतमंद जैसे वरिष्ठ नागरिक, अपंग नागरिक, गर्भवती महिलाएं, सुदूर शाखाओं के ग्राहकों आदि के लिए है। हालांकि, इसका लाभ कोई भी ग्राहक उठा सकता है। इस विशेष सेवा के अंतर्गत डोर स्टेप बैंकिंग एजेंट (डीएसबी एजेंट) ग्राहक के घर पर जाकर आवश्यकतानुसार सेवा प्रदान करता है। इन सेवाओं हेतु ग्राहक को शुल्क प्रदान करना पड़ता है। यह शुल्क लगभग 60 रुपए से 200 के बीच होता है।

डोर स्टेप बैंकिंग क्या है: एक ऐसी बैंकिंग सेवा जिसमें डीएसबी एजेंट ग्राहक के घर आकर सेवा प्रदान करता है उसे डोर स्टेप बैंकिंग कहा जाता है। इस सेवा को प्राप्त करने के लिए ग्राहक को अपने मोबाइल में डोर स्टेप बैंकिंग का ऐप डाउनलोड करना पड़ता है। इसके बाद ग्राहक को यूजर आईडी और पासवर्ड या ओटीपी की मदद से लॉगिन करना पड़ता है। लॉगिन करने के बाद ग्राहक के समक्ष विभिन्न बैंकों का विकल्प होता है। ग्राहक को जिस बैंक से संबंधित सेवा चाहिए उसे उसी बैंक का विकल्प चुनना पड़ेगा। तत्पश्चात ग्राहक के सामने इस ऐप पर बैंकिंग संबंधी विभिन्न सेवाओं के लिए मेनू/सूची दिए गए हैं। ग्राहक को अपनी आवश्यकतानुसार विकल्प का चुनाव करना है। विकल्प चुनने के बाद सेवानुसार ग्राहक को आवश्यक शुल्क का भुगतान करना होगा। ग्राहक अपनी इच्छानुसार दिन और समय चुन सकते हैं। चुने हुए दिन और समय पर एजेंट ग्राहक के घर पर आएगा तथा उस समय ग्राहक को बैंक से एक ओटीपी प्राप्त होगा। प्राप्त ओटीपी को ग्राहक एजेंट से साझा करेगा। इसके बाद एजेंट ग्राहक को आवश्यक सेवा प्रदान करेगा। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में यह सेवा अक्तूबर 2020 में शुरू की गयी। बैंकिंग सेवा को और अधिक अनुकूल (ease of doing banking) बनाने के लिए यह एक बेहतरीन कदम है।

डोर स्टेप बैंकिंग का उद्देश्य: दिन प्रतिदिन बैंकिंग सेवाएं बेहतर हो रही हैं। डोर स्टेप बैंकिंग का मुख्य उद्देश्य है कुछ जरूरतमंद ग्राहकों को बैंकिंग सेवाओं को पहुंचाना जिन्हें बैंक की किसी शाखा तक पहुंचने में कठिनाई हो रही हो। आमतौर पर यह सुविधा सभी ग्राहकों के लिए उपलब्ध है। लेकिन यह खास सेवाएं जरूरतमंद लोगों जैसे वरिष्ठ नागरिक, अपंग नागरिक, गर्भवती महिलाएं, सुदूर शाखाओं के ग्राहकों आदि के लिए उपयोगी है। इन्हीं ग्राहकों को बैंकिंग सेवा उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से इस सेवा की शुरुआत की गयी है ताकि इन ग्राहकों को आसानी से घर बैठे बैंकिंग सेवा मिल सके।

प्रक्रिया: ग्राहक 3 चैनलों में से किसी एक के माध्यम से स्वयं को पंजीकृत कर सकते हैं अर्थात् मोबाइल ऐप/वेब पोर्टल/कॉल सेंटर। एक बार जब एजेंट ग्राहक के दरवाजे पर पहुंच जाता है, तो वह डीएसबी एजेंट को दस्तावेज़ सौंपने के लिए तभी आगे बढ़ेगा, जब एजेंट के पास उपलब्ध सर्विस कोड से मेल खाएगा। ग्राहक के पास पे इन स्लिप विधिवत भरा/पूरा और ठीक से हस्ताक्षरित होना चाहिए (जिसमें प्रस्तुत किए जाने वाले लिखतों/instruments का विवरण होगा)। इसके बाद ग्राहक एजेंट को लिखत सौंप देगा, जिसे एजेंट ग्राहक के सम्मुख निर्दिष्ट मोहर लगाकर लिफाफे में रख देगा। एजेंट से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने ऐप में उपलब्ध जानकारी के साथ इंस्ट्रूमेंट विवरण को मिला लें और तभी स्वीकार करें जब यह मेल खाता हो। एकल पिक-अप अनुरोध पर एक एजेंट द्वारा एक से अधिक लिखत स्वीकार किए जा सकते हैं। हालांकि,

एक ही अनुरोध आईडी के लिए विभिन्न प्रकार के लिखतों को क्लब नहीं किया जा सकता है।

डोर स्टेप बैंकिंग के लाभ: डोर स्टेप बैंकिंग के निम्न लाभ हैं–

1. पिक अप सेवाएं: इस सेवा के अंतर्गत डीएसबी एजेंट ग्राहक के घर आकर आवश्यक बैंकिंग दस्तावेज़ पिक–अप करता है और वापस बैंक जाकर आवश्यक कार्रवाई करता है। इन सेवाओं के अंतर्गत आईटी/जीएसटी(आयकर/वस्तु एवं सेवा कर) चालान, फॉर्म 15 जी/एच, चेकबुक मांग स्लिप, डिमांड ड्राफ्ट, चेक पिक–अप करना, निधि अंतरण, नामिती फॉर्म, स्थायी अनुदेश (standing instruction) आदि आते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी ग्राहक को चेक जमा करना है तो उसे बैंक जाने की जरूरत नहीं। घर बैठे ग्राहक डोर स्टेप बैंकिंग ऐप के माध्यम से आवेदन कर सकता है। एजेंट ग्राहक के घर आकर चेक पिक–अप कर लेगा और उसे बैंक में जाकर जमा कर देगा। इस प्रकार बिना बैंक गए ग्राहक का काम हो जाएगा।

2. डिलीवरी सेवाएं: इस सेवा के अंतर्गत एजेंट ग्राहक को आवश्यक बैंकिंग सेवा/दस्तावेज़ उसके घर पर पहुंचाने (डिलीवरी) का कार्य करता है। इन सेवाओं के अंतर्गत खाता विवरण, प्रीपेड लिखत (Prepaid Instruments), टीडीएस/फॉर्म 16, एफडी/आरडी रसीद, डिमांड ड्राफ्ट, गैर–वैयक्तिक चेकबुक आदि आते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी ग्राहक को डिमांड ड्राफ्ट की आवश्यकता हो तो इसके लिए घर बैठे ग्राहक अपने मोबाइल ऐप से डिमांड ड्राफ्ट के लिए आवेदन करना होगा। एजेंट ग्राहक को आवश्यक डिमांड ड्राफ्ट उसके घर पर डिलीवर / पहुंचा देगा।

3. नकद सेवाएं: यह एक बेहतरीन सेवा है। हालांकि इस डिजिटल जमाने में नकद की आवश्यकता बहुत कम रह गयी है। फिर भी हम सबको कुछ–न–कुछ नकद रखने की जरूरत पड़ती ही है। इस सेवा के अंतर्गत ग्राहक डेबिट कार्ड या आधार कार्ड का प्रयोग करके नकद प्राप्त कर सकता है।

4. अन्य सेवाएं: अन्य सेवाओं के अंतर्गत जीवन प्रमाण पत्र के लिए आवेदन और अन्य सेवाएं उपलब्ध हैं।

महत्व: डोर स्टेप बैंकिंग सेवा जरूरतमंद ग्राहकों के लिए वरदान साबित हुआ है। ग्राहक घर बैठे सिर्फ मोबाइल ऐप की मदद से बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। इस सेवा के जरिए बैंकिंग को और आसान बनाने का प्रयास किया गया है। यही नहीं, इस सेवा की सहायता से सुदूर स्थित नागरिकों तक भी बैंकिंग सेवाएं प्रदान किया जा सकता है।

बारिश

ये छोटी– छोटी फुहारें
कुछ कह जाती हैं
गम की परछाइयां
इन बूंदों के संग
कहीं बह जाती हैं
ये तरावट भी देती हैं
खुशनुमा अहसास भी देती हैं
भीगे मौसम का मिज़ाज भी देती हैं
और जम कर बरस जाएं
तो अपनी ताकत का अहसास भी देती हैं
कुछ सिखा जाती है ये बारिश
कि हर एक बूंद के मिलकर रहने से
दुनिया की हर बाधा का सामना किया जा सकता है
कभी लोगों के लिए समंदर
तो कभी प्रलय या बाढ़ बना जा सकता है
जो फुहारें नाजुक सी लगती हैं
वो कितनी शक्तिशाली हो सकती हैं
क्यूं न सीखें इन बूंदों से हम मिलकर रहना
क्यूं न सीखें इन बूंदों के जैसा सरल और निश्छल होना
जो बरसते वक़्त न जात –पात देखती है
और न ही मजहब
जो बरसते वक्त न अमीर न गरीब देखती है
न मंदिर की आरती न खुदा की इबादत
इसकी फुहारें हर किसी को भिगोती हैं
सहजता, सरलता, शीतलता ऐसी भी होती है।

विकास कुमार सिंघल
अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, सवाई माधोपुर

यूपीआई लाइट - एक महत्त्वपूर्ण सुविधा

सौरभ महापात्र
प्रबंधक
क्षे.का. भुवनेश्वर

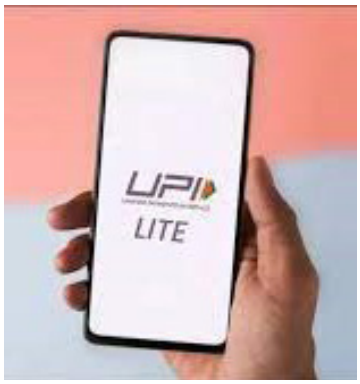

यूपीआई लाइट यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) प्लेटफॉर्म का एक अलग संस्करण है, जिसे 2016 में भारत में लॉन्च किया गया था। जबकि यूपीआई का पूर्ण संस्करण सुविधा संपन्न है और कई प्रकार की क्षमताएं प्रदान करता है, यूपीआई लाइट को इस तरह डिजाइन किया गया है कि यह यूपीआई प्लेटफॉर्म का एक लाईट संस्करण है जो अधिक सरल, लो-एंड स्मार्टफोन और बुनियादी फीचर फोन के लिए उपयुक्त है।

यूपीआई लाइट का एक प्रमुख लाभ इसका एक्सेस है। पूर्ण यूपीआई प्लेटफ़ॉर्म की कुछ अधिक उन्नत सुविधाओं को हटाकर, यूपीआई लाइट उन उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक सुलभ है जिनके पास हाई-एंड स्मार्टफ़ोन या विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्शन नहीं है। इससे अधिक से अधिक लोगों के लिए भारत के तेजी से बढ़ते डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र में लाभ उठाना संभव हो जाता है।

उपयोग करने में सरल: यूपीआई लाइट को उपयोग में आसान बनाने तथा उन उपयोगकर्ताओं के लिए डिज़ाइन किया गया है जो डिजिटल भुगतान से परिचित नहीं हैं। प्लेटफ़ॉर्म में एक सरल, सहज यूजर इंटरफेस है, जिसमें समझने में आसान निर्देश और संकेत हैं। इससे उपयोगकर्ताओं के लिए जटिल मेनू या सेटिंग्स को नेविगेट करने की आवश्यकता के बिना, लेनदेन को जल्दी और आसानी से पूरा करना संभव हो जाता है।

बुनियादी सुविधाएं: हालांकि यूपीआई लाइट पूर्ण यूपीआई प्लेटफॉर्म की सभी सुविधाएं प्रदान नहीं कर सकता है, लेकिन यह पैसे भेजने और प्राप्त करने, बिलों का भुगतान करने और खाते की शेष राशि की जांच करने जैसी बुनियादी सुविधाएं प्रदान करता है। ये सुविधाएं कई उपयोगकर्ताओं के लिए आवश्यक हैं, और यूपीआई लाइट उपयोगकर्ताओं को इन कार्यों को करने का एक सरल, विश्वसनीय तरीका प्रदान करता है।

सुरक्षा: यूपीआई लाइट को पूर्ण यूपीआई प्लेटफॉर्म के समान मजबूत सुरक्षा ढांचे पर बनाया गया है। लेनदेन को बहु-कारक प्रमाणीकरण और एंक्रिप्शन का उपयोग करके सुरक्षित किया जाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उपयोगकर्ताओं का वित्तीय डेटा सुरक्षित है। यह भारत जैसे देश में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहां डिजिटल भुगतान तेजी से आम होता जा रहा है, लेकिन यहां सुरक्षा संबंधी चिंताएं भी अधिक हैं।

विकास की संभावना: यूपीआई लाइट अभी भी अपेक्षाकृत नया प्लेटफॉर्म है, लेकिन इसमें महत्वपूर्ण विकास क्षमता है। जैसे-जैसे अधिकाधिक उपयोगकर्ता डिजिटल भुगतान से परिचित होंगे और अधिक मर्चेंट डिजिटल भुगतान स्वीकार करना शुरू करेंगे, यूपीआई लाइट भारत के डिजिटल भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनता जाएगा। यह व्यवसायों और उद्यमियों के लिए यूपीआई लाइट की क्षमताओं का लाभ उठाने वाले नवीन उत्पादों और सेवाओं को विकसित करने के अवसर प्रस्तुत करता है।

अंत में, यूपीआई लाइट, यूपीआई प्लेटफॉर्म का एक सरलीकृत, हल्का संस्करण है जो कम कीमत वाले स्मार्टफोन और बुनियादी फीचर फोन वाले उपयोगकर्ताओं को बुनियादी डिजिटल भुगतान क्षमताएं प्रदान करता है। हालांकि, यह पूर्ण यूपीआई प्लेटफॉर्म की सभी सुविधाएं प्रदान नहीं कर सकता है, लेकिन इसमें महत्वपूर्ण विकास क्षमता है और यह व्यवसायों और उद्यमियों के लिए सुविधाजनक है।

***

संपर्क रहित डिजिटल बैंकिंग

कंचन कुंबावत
अधिकारी
अंचल कार्यालय, बड़ौदा

आज के समय में बैंकिंग व्यवहार और उपभोक्ताओं की जरूरतों में परिवर्तन जिस तरीके से हो रहे हैं, वैसी स्थिति में पारंपरिक बैंकिंग का भविष्य भी संकट के घेरे में है। अब तो यह भी माना जा रहा है कि परंपरागत बैंकिंग का दौर खत्म हो चुका है और बैंकलेस बैंकिंग अवधारणा मजबूत हुई है। इसी संबंध में एक बार बिल गेट्स ने कहा था कि बैंकिंग तो जरूरी है किन्तु बैंक नहीं। मोबाइल बैंकिंग के आने से तो ग्राहकों और बैंक के बीच संवाद के तरीके में बहुत बदलाव आ गया है। मोबाइल बैंकिंग के द्वारा घर से दूर रहकर भी अपने बैंक के खातों की जानकारी ली जा सकती है। किसी भी समय खाते से पैसों को ट्रांसफर करना, बिलों का भुगतान इत्यादि किया जा सकता है। यह सुविधा 24 घंटे उपलब्ध होती है।

एक नई आर्थिक व्यवस्था की स्थापना करने के लिए जरूरी है मजबूत डिजिटल बैंकिंग व्यवस्था। भारतीय रिज़र्व बैंक गवर्नर शक्तिकांत दास ने भी कहा था, 'साफ रहें, सुरक्षित रहें, और डिजिटल अपनाएं' लेकिन आज के जमाने में भी डिजिटल फाइनेंस के रास्ते में कुछ बाधाएं हैं, उन बाधाओं को दूर करना और भी जरूरी हो गया है। ये बाधाएं काफी हद तक केवाईसी (अपने ग्राहक को जानें) प्रक्रिया से संबंधित होती हैं, जिसके माध्यम से एक फाइनेंशिल इंस्टिट्यूशन भावी ग्राहकों का सत्यापन करता है और उन्हें ग्राहक बनाता है। जब तक उन बाधाओं को दूर नहीं किया जाता तब तक भारत की अर्थव्यवस्था सही मायने में डिजिटल नहीं बन सकती है। इसके कारण डिजिटल बैंकिंग के लाभ शहरी केंद्रों तक ही सीमित रह जाएंगे।

शहरी लोग अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए बड़े आराम से ऑनलाइन चले जाते हैं, चाहे उन्हें पढ़ाई करना हो या किराने का सामान खरीदना हो या दफ्तर का काम करना हो लेकिन एक चीज जो नहीं बदली है वह है एक बैंक अकाउंट खोलने का तरीका या लोन या क्रेडिट कार्ड लेना। इनके लिए आपको अभी भी बैंक के साथ आमने–सामने मिलकर बात करनी पड़ती है, एक फॉर्म पर हस्ताक्षर करना पड़ता है और अपने दस्तावेजों की फोटोकॉपी जमा करनी पड़ती है। स्वरोजगार करने वाले लोग और यहां तक कि वेतन पाने वाले लोगों को भी अपनी मौजूदा समस्याओं से निपटने के लिए क्रेडिट की तत्काल जरूरत है तो उन्हें बैंक ही जाना पड़ता है। इसलिए डिजिटलीकरण की बाधाओं को दूर करना जरूरी है, आइए जानते हैं कि हम इसे कैसे कर सकते हैं।

आज की परिस्थिति

पिछले कुछ सालों में कई सेवाएं अमेज़न की तरह हो गई हैं। दूर–दूर तक इंटरनेट की पहुंच और स्मार्टफोन की उपलब्धता के कारण आप अपने घर में आराम से बैठकर काफी कुछ कर सकते हैं। आपको सेवा तुरंत मिलती है, आपको इसके लिए कोई कागज नहीं दिखाना पड़ता है, और किसी से मिलना भी नहीं पड़ता। तो बैंक सेवाएं इस तरह क्यों नहीं हो सकती? क्यों नहीं आप अपना अकाउंट घर बैठे खोल लें और किसी से मिलना न पड़े और सारे कागज भी आप आराम से अपलोड कर लें। इससे आपको आपका वित्तीय उत्पाद तुरंत मिलेगा। यदि आपके पास एक केवाईसी कम्प्लायंट बैंक अकाउंट है तो आप ऑनलाइन माध्यम से म्यूच्युअल फंडस या इंश्योरेंस खरीद सकते हैं। लेकिन एक बैंक अकाउंट खुलवाने के लिए, ऋण लेने के लिए या क्रेडिट कार्ड लेने के लिए आपको ऑफलाइन प्रक्रिया से गुजरना ही होगा। यह प्रक्रिया धीमी होने के साथ–साथ बैंकों पर खर्चीला, नियामक बोझ भी डालती है। इसलिए आइए देखते हैं कि 100% कॉन्टेक्टलेस अकाउंट खोलने की प्रक्रिया को सक्षम बनाने के लिए क्या करने की जरूरत है।

ऋण सीमा संबंधी संशोधन

इस माध्यम से क्रेडिट कार्ड नहीं ले सकते हैं, इसे बदलना

इस दिशा में अहम कदम होगा। डिजिटल माध्यम से ऋण प्रदान करने से आम आदमी और एमएसएमई को तुरंत, घर बैठे बिना कागज़ दिए उधार लेने में मदद मिलेगी। इससे अर्थव्यवस्था में चल रही तरलता संबंधी समस्याओं से निपटने में भी मदद मिलेगी।

सी-केवाईसी के व्यापक उपयोग की अनुमति देना

सेंट्रल केवाईसी एक रजिस्ट्री है जिसमें वित्तीय क्षेत्र से जुड़े ग्राहकों की जानकारी रहती है। इसका उद्देश्य, केवाईसी रिकॉर्ड्स की अंतर-प्रयोज्यता प्रदान करना है, जिससे हर बार नया अकाउंट खोलने के लिए केवाईसी दस्तावेज प्रस्तुत करने की जरूरत कम हो। मान लेते हैं कि आपने एक बैंक में एक अकाउंट खोला है। उस बैंक ने आपकी केवाईसी जानकारी को इस रजिस्ट्री में अपलोड कर दिया और अब यह जानकारी दूसरे बैंक के लिए उपलब्ध हो जाएगी जब आप एक नया वित्तीय उत्पाद खरीदने के लिए उनके पास जाएंगे। केवाईसी अंतर-प्रयोज्यता की इस व्यवस्था के कारण आपकी आवेदन प्रक्रिया जल्दी से पूरी हो जाती है और बैंक की अनुपालन लागत भी कम हो जाती है। आज यह ज़रूरी हो गया है कि भारतीय रिज़र्व बैंक आगे आकर साफतौर पर इस बात का उल्लेख करे कि आपके सीकेवाईसी रिकॉर्ड्स की कंप्यूटरीकृत जांच को एक संपूर्ण केवाईसी जांच माना जा सकता है। इससे भी डिजिटल अकाउंट खोलने की प्रक्रिया तेज हो जाएगी।

वीडियो केवाईसी का समय आ गया है

हाल में भारतीय रिज़र्व बैंक ने बैंकों को वीडियो केवाईसी का इस्तेमाल करने की इजाजत देने का बहुत बड़ा फैसला लिया है। इस तरह, ग्राहक अपने बैंक को अपने जीवित होने का प्रमाण देने के लिए अपने स्मार्टफोन के कैमरे का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसका उद्देश्य, बैंक को यह दिखाना है कि आप सच में वहीं हैं जो आप कह रहे हैं कि आप हैं, आप ज़िन्दा हैं और आप धोखे से अकाउंट नहीं खुलवा रहे हैं। लेकिन सिर्फ भारतीय रिज़र्व बैंक विनियमित संस्थान जैसे बैंकों को ही इस वीडियो ग्राहक पहचान प्रक्रिया का इस्तेमाल करने की इजाज़त है। वर्तमान में बैंकों के पास यह टेक्नॉलजी हो भी सकती है और नहीं भी। गैर विनियमित संस्थान जैसे एनबीएफसी और फिनटेक कंपनियों के पास यह टेक्नॉलजी हो सकती है। इसलिए अधिक से अधिक लोगों को वीडियो केवाईसी के माध्यम से अकाउंट खुलवाने देने के लिए इस टेक्नॉलजी से लैस संस्थानों को बैंकों और विनियमित संस्थानों के साथ मिलकर काम करने की इजाज़त देनी चाहिए और वीडियो केवाईसी के दायरे को बढ़ाना चाहिए। इससे उन भारतीयों को काफी मदद मिलेगी जो उन दूर-दराज के इलाकों से बैंकिंग करने की कोशिश करते हैं जहां बैंक शाखा की सेवा उपलब्ध न हो।

आधार और जीएसटीएन डेटा की अनुमति

आज सिर्फ बैंक आपके आवेदन की सत्यता प्रमाणित करने के लिए आधार का इस्तेमाल कर सकते हैं। आधार सिर्फ एक प्रिंटेड कार्ड ही नहीं बल्कि डाटा का एक बहुत बड़ा भंडार है जिससे तुरंत ग्राहकों की सत्यता प्रमाणित करने में मदद मिलती है। इंश्योरेंस कंपनियों, ऐसेट मैनेजमेंट कंपनियों, एनबीएफसी, इन्वेस्टमेंट एडवाइजरों और पीएफआरडीए बिचौलियों और विनियमित फिनटेक कंपनियों को भी एक फ्रेमवर्क प्रदान करना चाहिए जिसके माध्यम से वे ग्राहकों की सहमति के साथ उनके आधार का प्रयोग करते हुए उनका केवाईसी पूरा कर सकें। एक बार फिर, लागत और कार्य समय को कम करने का यह एक दूसरा तरीका होगा, जिससे अधिक से अधिक भारतीयों को बिना देरी अपनी वित्तीय सेवाएं प्राप्त होंगी। इसके अलावा, गैर विनियमित उधारदाताओं पर एमएसएमई क्षेत्र की निर्भरता को कम करने के लिए, सुयोग्य फिनटेक कंपनियों को लोन सर्विस प्रोवाइडर लाइसेंस, अकाउंट एग्रीगेटर्स का लाइसेंसयुक्त ऐक्सेस और जीएसटीएन एक्सेस प्रदान किया जाना चाहिए। इससे ऋण देने की प्रक्रिया में तेजी आएगी।

निष्कर्ष

आज के जमाने में भी डिजिटल फाइनेंस के रास्ते में कुछ बाधाएं हैं, उन बाधाओं को दूर करना और भी जरूरी हो गया है। जब तक उन बाधाओं को दूर नहीं किया जाता तब तक भारत की अर्थव्यवस्था सही मायने में डिजिटल नहीं बन सकती है। कुल मिलाकर, भारत का आज का बैंकिंग स्वरूप बदलते परिवेश में नए कलेवर अपना रहा है। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि यह कलेवर भारतीय जनता के सामाजिक-आर्थिक विकास को और बेहतर बनाने में अपनी भूमिका निभाए।

***

बॉब प्रतियोगिताएं

क्षेत्रीय कार्यालय, बीकानेर

क्षेत्रीय कार्यालय, बीकानेर क्षेत्र की सार्दुलगंज शाखा द्वारा दिनांक 04.11.2023 को विवेकानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, में कक्षा 7वीं व 8वीं के विद्यार्थियों के लिए 3 बॉब हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के बाद प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–ग्रामीण

दिनांक 08.12.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–ग्रामीण द्वारा बूदिगेरे शाखा द्वारा विकसित भारत संकल्प यात्रा के अवसर पर बूदिगेरे के श्री सिद्दगंगा हाईस्कूल के विद्यार्थियों के लिए बॉब चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित किया गया था। इस अवसर पर शाखा प्रबंधक श्री महेश द्वारा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

क्षेत्रीय कार्यालय, अमृतसर

दिनांक 26 अक्तूबर, 2023 को अमृतसर क्षेत्र की डिजिटल बैंकिंग लेह शाखा द्वारा लद्दाख पब्लिक स्कूल लेह में बॉब कविता–वाचन प्रतियोगिता और वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती सोनम वांगडू और शाखा प्रमुख द्वारा विजेता प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

दिनांक 21.12.2023 को गुवाहाटी क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा विवेकानंद हाई सेकेंडरी स्कूल बेलतोला में कक्षा 5 से कक्षा 10 तक के विद्यार्थियों के लिए बॉब आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 55 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया एवं शीर्ष 05 छात्र छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोटा

दिनांक 13 अक्तूबर, 2023 को कोटा क्षेत्र की आदर्श स्टेशन रोड़ शाखा के माध्यम से लॉर्ड कृष्णा कान्वेंट विद्यालय में छात्र–छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में शीर्ष –03– स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं शाखा स्टाफ द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर

दिनांक 23 दिसंबर 2023 को जयपुर क्षेत्र की वैशाली नगर शाखा के समन्वय से ब्लॉसम बड्स स्कूल, जयपुर में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता, बॉब आशुभाषण प्रतियोगिता एवं वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाचार्य एवं शाखा प्रबंधक तथा शाखा से अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, भीलवाड़ा

दिनांक 11 दिसंबर, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, भीलवाड़ा द्वारा स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल, सुवाणा में कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों हेतु हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता और चित्रलेखन प्रतियोगिता का आयोजन कर विजेताओं का सम्मान किया गया । इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रबंधक, श्री अभिषेक कमल, अग्रणी जिला प्रबंधक श्री सोराज मीना, सुवाणा शाखा के शाखा प्रबंधक, श्री संतोष कुमार गुप्ता भी उपस्थित थे।

कहानी

बिछड़न

सुनील कुमार सिन्हा
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु दक्षिण

'गीता' में श्रीकृष्ण का उपदेश है कि हम खाली हाथ आते हैं और खाली हाथ जाते हैं। बीच के समय को ही हम जीवन कहते हैं। जीवन काल में जो भी घटित होता है उसमें हमारा लेश मात्र भी योगदान नहीं होता। हम नाहक ही खुद को हर परिणाम का कर्त्ता मान बैठते हैं। सच तो यह होता है कि हमारे जन्म से लेकर मृत्यु तक की अवधि तक में हमारा योगदान कुछ भी नहीं होता। जन्म-मृत्यु सब ऊपर वाले के हाथ में होता है। कहने को जन्म हमारे माता-पिता देते हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं कि हमारा जन्म या मृत्यु हमारे पिछले जन्म के प्रारब्ध का ही परिणाम होता है। हमें किसी भी परिणाम का श्रेय लेने का कोई अधिकार नहीं। अगर हमारा योगदान कुछ है तो बस इतना कि हम किस हद तक ईश्वर को जान पाये या जानने का प्रयास किये और अपने प्रयासों से कितना उस परम पिता परमेश्वर की सत्ता को समझ पाये। ईश्वर को जानने और उसके समीप जाने के प्रयास के अलावा जो भी हमारे कर्म होते हैं वो बस एक चलचित्र ही होता है जो पूर्णरूपेण क्षणिक और नश्वर होता है। मोह और माया के जाल में फंसकर हम इसे ही सत्य समझ बैठते हैं। घर हमारा है, बच्चे हमारे हैं, वस्तुएं हमारी हैं, रिश्ते हमारे हैं हम इन्हीं सांसारिकता में उलझकर रह जाते हैं जो हमें परम पिता के सत्य से दूर लेकर चली जाती हैं। परम पिता की सत्ता तक पहुंचना तो दूर उसे महसूस करने के प्रयास में सांसारिकता ही सबसे बड़ी बाधा बनी रहती है। भौतिक वस्तुओं का आकर्षण-विकर्षण, रिश्तों के ताने-बाने, इनसे मिलना बिछड़ना, इनसे हमारा लगाव-बिखराव, इनके प्रति तथाकथित हमारे दायित्वों का निर्वाह और उदासीनता आदि कितनी ही बातें हैं जो मरणोपरान्त कि कौन कहे जीते जी हमारे जीवन को नरक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़तीं। होश तो तब आता है जब हमारे अपने ही हमारा दिल तोड़ते हैं। कुछ ऐसे ही तानों-बानों से बुनी जिन्दगी रह गई थी समीर की। सबके होते हुए भी बिल्कुल अकेली।

सामने नीला समंदर अपनी मौज में ठांठें मार रहा था। ऊंची ऊंची डरावनी लहरें उठतीं और किनारे पर आकर दम तोड़ देतीं। उनके पीछे दूसरी लहरें आतीं और उनका भी वही हाल होता। अगर कुछ बचता तो बस असीमित समंदर। उसे कोई फर्क नहीं पड़ता इन लहरों के उठने-गिरने या फिर इनके दम तोड़ देने से। वह तो बस अपनी ही मौज में रहता।

समीर का यह पसंदीदा सगल बन गया था। यूं तो उस मकान में कई सुविधा संपन्न कमरे थे पर समीर की पसंदीदा जगह थी टेरेस पर बना यह कमरा। इस कमरे में आकर समीर को बड़ा सुकून मिलता। उसने इस कमरे में बस एक बेड, एक सोफा, एक टीवी और एक म्यूजिक सिस्टम रखा हुआ था। यह 16 x 16 का कमरा ही जैसे उसकी दुनिया थी। कमरे के बाहर बड़ा-सा टेरेस जहां से दूर-दूर तक समंदर ही समंदर दिखता था। शांत, स्थिर, विशाल समंदर। न जाने कितने ही झंझावातों और तूफानों को अपने अंदर समेटे। कितनी ही उफनती नदियां, नाले सब एक समय पर आकर इसी समंदर में मिल जातीं और फिर स्थिर हो जातीं। आने वाले कितने ही तूफानों और सैलाबों का स्रोत ये विशाल स्थिर समंदर ऐसा लगता मानो शीशे की जमीन। जैसे समीर के जिंदगी की कहानी कह रहा हो।

इस टेरेस पर आकर उस समंदर को देखकर समीर को मानों लगता कि वो खुद से मिल रहा हो। उसे अपने और उस समंदर में कई समानताएं दिखतीं। गुमनाम-सी जिंदगी से शुरुआत और आज इस मंजिल तक पहुंचने तक के सफर में कितने ही उतार-चढ़ाव उसने देखे और झेले थे और वो भी अकेले। हां, अकेले। अकेले इसलिए कि उसके सपनों को, उसकी सच्चाई को, उसके मन की बातों को कोई कभी समझ ही नहीं पाया। उसने तो बस इतना ही चाहा था कि जिस तरह उसने मेहनत से एक मुकाम हासिल किया था उसी तरह सब मेहनत करें और जीवन में मुकाम हासिल करके खुश रहें। अपने अनुभवों के आधार पर सबको आगे बढ़ने के लिए रास्ता दिखाने की कोशिश करता पर

उसे क्या मालूम था कि उसकी यही बातें उन लोगों को खटकने लगेंगी। वो समझता रहा कि सब उसकी कद्र करते हैं इसलिए लिहाजवश उसके सामने नहीं आते। उसे तो पता भी नहीं चला कि अंदर ही अंदर उन सब लोगों ने एक अलग ही खिचड़ी पका ली थी। उसे लगता कि सब उसकी इज्जत कर रहे हैं पर सच तो यह था कि सब उसे ऑड मैन आउट कर रहे थे। सबकी भीड़ में वह अकेला होता जा रहा था।

सबको खुश रखने की चाहत में खुद अपना ही वजूद खोता चला गया। सारे रिश्ते नाते, परिवार जिनकी खुशियों के सामान जुटाता रहा, इस उम्मीद में कि सब खुश रहें बस। सब ऊपर से खुश भी लगते थे पर अंदर ही अंदर उसे नापसंद करने लगे थे। सिर्फ इसलिए कि समीर जिसने अपने अनुभवों से जीवन की सच्चाई को समझा था और नहीं चाहता था कि जिन झंझावतों से लोहा लेकर उसने सफलता हासिल की थी, उसके अपनों को भी वैसा ही संघर्ष करना पड़े। उन्हें समय असमय सही रास्ता दिखाने की कोशिश में रोक-टोक करता रहता जो अब कोई भी बर्दाश्त करने को तैयार न था।

समीर, उसके तो विचार ही सबसे अलग होते थे। उसने जमीन देखी थी। जमीन से शुरूआत की थी। कितने ही रिश्तों को बनते बिगड़ता देखा था। अपनों के ताने, दुत्कार, न जाने क्या-क्या सहकर वह अपने रास्ते चला और अंतत: अपनी मंजिल पाई। बचपन से ही व्यवहारिक समीर समझ चुका था कि इस दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं। रही सही कसर अपनों ने निकाल दी थी। अपनों के लिए खुशियां जुटाता रहा इस बात से बेखबर कि एक दिन वो इन्हीं की आंखों में खटकने लगेगा।

श्रीकृष्ण कहते हैं कि इंसान जानता समझता सब कुछ है। सही-गलत की पहचान करने की क्षमता उसे ऊपर वाले ने देकर भेजा है। बस वह इन बातों से अंजान बने रहने का दिखावा करता रहता है। मोह-माया उसे सच को स्वीकार करने ही नहीं देते। कहते हैं कि इंसान ठोकर खाकर सीखता है। पर असली सबक तो इंसान तब सीखता है जब उसे उसके अपने ही सीने पर जख्म देते हैं। दूसरों से उम्मीद न रखो कि वह तुम्हारे लिए बदलने वाला है। तुम्हें ही जमाने के अनुरूप ढलना होगा।

कुछ ऐसे ही दौर से गुजरना पड़ा था समीर को। अपनी आदत के मुताबिक उसने अपनी पत्नी और बच्चों को भी खुद से खुद की लड़ाई करने की कला सिखानी चाही। सब ठीक ही चल रहा था पर उसे पता नहीं था कि उसकी यही कोशिश उसके लिए एक दिन उसे अपने ही परिवार और बच्चों से दूर कर देगी।

यूं तो उसकी पत्नी अंजली बहुत अच्छी थी। पारंपरिक परिवार से आई थी सो संस्कारी भी थी। नए जमाने की कोई हवा भी उसे नहीं लग पाई थी। घर से कभी बाहर निकलने का मौका ही न मिला शायद वही वजह रही होगी। जमाने को देखते हुए तेईस साल की उम्र में ही शादी हो गई थी। घर, परिवार, चूल्हा-चौका संभालना ही लड़कियों का काम होता है यही सब संस्कार कूट-कूट कर भर दिये गये थे। समीर को भी इन सब से कोई समस्या न थी। वो तो बस खुश था कि उसे एक साथी मिल गया था जिससे वो अपने मन की हर बात साझा कर सकता था। बड़ी हंसी-खुशी से जिन्दगी बीत रही थी। फिर बच्चे हो गए तो घर में और रौनक हो गई। बच्चों के साथ समीर भी बच्चा बना रहता और जब भी समय मिलता उनके साथ खेलने कूदने में लगा रहता। घर में धमाचौकड़ी मची रहती। इन सबके बीच अंजली को बिल्कुल समय नहीं मिल पाता। छुट्टी के दिन तो उसका काम और बढ़ जाता। दूसरे दिनों में समीर तो ऑफिस चला जाता पर दोनों बच्चों की वजह से उसे दिन भर व्यस्त रहना पड़ता। फिर भी वक्त अच्छे से गुजर रहा था। बच्चे बड़े हो रहे थे। उनके स्कूल जाने का समय आ गया था। अच्छे स्कूल में दोनों का एडमिशन हो गया था। बच्चों को सुबह स्कूल भेजना, फिर समीर के ऑफिस जाने की तैयारी करना इन सबके लिए उसे सुबह अंधेरे ही उठकर सब काम में लगना पड़ता। इन्हीं सबके बीच समय गुजर रहा था। बच्चे बड़े और समझदार हो रहे थे। बच्चों का ज्यादातर समय अंजली के साथ ही बीतने लगा था। समीर का भी प्रोमोशन हो गया था। ऑफिस के काम के सिलसिले में ज्यादातर उसे बाहर रहना पड़ता। घर के लिए उसे बहुत कम समय मिल पाता। समीर जी जान से अपने काम में लगा रहता। वह अपने परिवार को एक अच्छा भविष्य देना चाहता था। वह जानता था उसके लिए उसे काफी मेहनत करनी होगी जो वह कर भी रहा था।

जैसे-जैसे समीर का प्रोमोशन होता गया समीर की व्यस्तता बढ़ती जा रही थी और जाने अनजाने वह अंजली व बच्चों को कम समय दे पा रहा था। जाहिर था कि बच्चों का समय अंजली के साथ ही गुजरता। कभी छुट्टी के दिन समीर घर पर होता भी तो अनगिनत कॉल्स व लैपटॉप में अपने काम में लगा रहता। हर वक्त काम और काम की चिंता के कारण जाने अनजाने सबसे दूर होता जा रहा था।

जहां पहले अंजली ही उसे प्रोमोशन के लिए मोटिवेट करती और उसकी तरक्की देखकर खुश होती अब उसकी यही तरक्की और व्यस्तता उसे धीरे-धीरे खलने लगी थी। पहले बच्चे पापा के बारे में पूछते तो वो बड़ी खुशी से उसे बताती कि पापा

काफी मेहनत कर रहे हैं हम सब के अच्छे और सुरक्षित भविष्य के लिए। वहीं अब वह समीर की व्यस्तता से धीरे-धीरे खीझी रहती। अब वह गुस्सा रहने लग गई थी। बच्चे भी धीरे-धीरे अपने-अपने कैरियर और मुकाम की जद्दो जहद में लगे रहते। दिल्ली के अच्छे कोचिंग में दोनों का एडमिशन हो गया था। उनकी मेहनत रंग लाई और दोनों ने लगभग एक साथ जीआई क्रैक कर लिया। दोनों बच्चों का एडमिशन कैलिफोर्निया के अच्छे कॉलेज में हो गया था।

समय का पंछी पंख लगाकर उड़ता जा रहा था। कब उनके एडमिशन हुए, कब पढ़ाई खत्म हुई, कब उनकी नौकरियां लगीं और कब उनकी शादीयां भी हो गईं जब सोचता तो लगता जैसे कल ही की बात हो।

बच्चों के भी बच्चे हो गए और अब उन्हें संभालने के लिए अंजली को ज्यादातर बच्चों के पास ही रहना पड़ता। समीर को जीवन का कड़वा अनुभव था, उसने करीब से करीब के रिश्तों को भी टूटते हुए देखा था, बिखरते हुए देखा था। जानता था कि परिवार बढ़ने से प्रीति घटती जाती है। पर अंजली, उस बेचारी को कहां इन सब बातों का पता था। वह तो वर्तमान में जीने वाली एक घरेलू मां थी जिसके लिए उसके बच्चों से अच्छा न कोई हुआ था न होने वाला था। एक ऐसी मां जिसे कभी भी अपने बच्चों में कोई कमी नहीं दिखती चाहे कुछ भी हो जाए। अब कैलिफोर्निया कोई नजदीक तो था नहीं कि बार-बार आना-जाना करते रहें। बेटे और बेटी के परिवारों के बीच ही उसका समय बीत रहा था। बेटे के यहां कुछ महीने होते तो बेटी का बुलावा आता। कुछ ही महीनों के बाद बेटे का बुलावा आ जाता।

अब ये तो जगजाहिर है कि आदमी अपने कम्फर्ट जोन से बाहर नहीं निकल पाता और न ही उस जोन से बाहर आने की कोशिश करता है। बेटा बहु दोनों जॉब में थे तो उनके बच्चों को और उनका घर सम्भालने के लिए एक आदमी तो चाहिए था। बेटी दामाद भी जॉब में थे तो उनके साथ भी यही स्थिति थी। अंजली के साथ रहने से यह काम काफी आसान हो गया था।

फिर वही बात आ जाती है कि इंसान की यह फितरत है कि वह अपना कम्फर्ट पहले देखता है। और फिर बाप नाम के जीव को ईश्वर ने अंदर बाहर से इतना सख्त बनाया है कि वह टूट जाएगा, बिखर जाऐगा, अंदर ही अंदर लाख तकलीफ सह लेगा मगर किसी को बताएगा नहीं। चूंकि वह खुद को कभी जाहिर नहीं करता तो बच्चे भी यही समझने लग जाते हैं कि यह आदमी तो एकदम सुपरमैन है। कुछ भी मांगो पल भर में हाजिर है। ना ही इस आदमी के पास पैसे की कोई कमी है। कुल जमा यह कि इस आदमी को कभी तकलीफ में नहीं देखा मतलब इसे कभी तकलीफ नहीं होता। और मम्मीयां भी अपने बच्चों और उनके परिवार में इतनी रम जाती हैं कि कब हमसफर के साथ उनका सफर खत्म होने लगता है, कैसे धीरे-धीरे अपने हमराज से बातों का सिलसिला कम होता चला जाता है, कैसे जीवन भर एक दूसरे का सुख दुख बांटने वाले अब अपनी तकलिफों का जिक्र तक एक दूसरे से नहीं करते इन सबका पता भी नहीं चलता और उम्र भी अपने आखिरी पड़ाव पर आ जाती है।

कब समीर की आंखें लग गई पता भी न चला। हल्की-हल्की बारिश की बूंदें जब चेहरे पर पड़ीं तब उसकी नींद खुली थी। कमरे में आकर देखा तो रात के दो बज रहे थे। फिर कभी सुबह होगी यही सोचकर फिर सो गया।

***

एक किताब लिखना

हर्षिता चतुर्वेदी
एचएस रोड शाखा
पणजी क्षेत्र

सुनो! तुम एक किताब लिखना!
उन सभी बातों की, जो मैंने बिन कहे तुम्हारी आंखों से सुनी हैं
उन महीन जज़्बातों की, जो तुम्हारे मन में जाने कब से दबी हैं।
अपनी कलम से कभी मुस्कान, तो कभी आंसू चखना!
सुनो! तुम एक किताब लिखना!

लिखना उनमें तुम, अपनी ढेर सारी कहानियां और किस्से,
जिन्हें कहा-सुना नहीं जा सका कभी हमारे हिस्से!
उन पन्नो पर अपने मन की हर बात बेहिचक रखना!
सुनो! तुम एक किताब लिखना!

लिख देना अपने डर, अपनी तकलीफें, अपने टूटे दिल का हिसाब
अपने-परायों का मन से जोड़ या फिर उनकी भावनाओं का घटाव!
और हां! मैं नहीं भी पढ़ पाई किताब तो पढ़ लूंगी मन तुम्हारा
तुम बेवजह मेरी राह मत तकना!
सुनो! तुम एक किताब लिखना!

हरित बैंकिंग

विवेक गुडिपुडी
अधिकारी
क्षे.का. बेंगलूरु ग्रामीण

आधुनिक युग में, वित्तीय सेवाओं का क्षेत्र तेजी से बदल रहा है और इसमें एक नई परिवर्तनशील दिशा आ रही है - हरित बैंकिंग। हरित बैंकिंग ने न केवल वित्तीय प्रणालियों को सुधारा है, बल्कि इसने पूरे संबंधित क्षेत्र में हरियाली और पर्यावरणीय साझेदारी का सिरा खोला है। इस नए युग के बैंकिंग मॉडल ने धीरे-धीरे हमें एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है, जो न केवल हमारी आर्थिक स्थिति को सुरक्षित बनाए रखने का वादा कर रहा है, बल्कि इसने हमारे पर्यावरण की सुरक्षा में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हम इस नई क्रांति को साकारात्मक दृष्टिकोण से देखेंगे और इसके विभिन्न पहलुओं को समझेंगे जो हमें एक हरित और स्वस्थ अर्थतंत्र की ओर अग्रसर कर रहे हैं।

1. हरित बैंकिंग की सरंचना:

हरित बैंकिंग का आदान-प्रदान एक स्वस्थ और सहारा देने वाले उद्देश्य के साथ होता है - पर्यावरण की सुरक्षा। इसमें विभिन्न तत्त्वों को शामिल किया जाता है जो बैंकों को अपनी गतिविधियों में हरितता की दिशा में बदलने के लिए प्रेरित करते हैं। यहां तक कि इसमें बैंकों को अपने ग्राहकों को भी हरितता की दिशा में प्रेरित करने का कारण बनाने का लक्ष्य शामिल है।

2. प्रदूषण की कमी:

हरित बैंकिंग का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है प्रदूषण की कमी का प्रयास। इसके तहत, बैंकें अपने कार्यों में प्रदूषण को कम करने के लिए कई कदम उठा रहे हैं। डिजिटलीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा देने, कागज के उपयोग को कम करने और विभिन्न प्रक्रियाओं में प्रदूषण कमी के प्रयासों को लेकर हरित बैंकिंग एक सकारात्मक कदम उठा रही है।

3. ऊर्जा संरक्षण:

हरित बैंकिंग ने ऊर्जा संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए एक सक्रिय भूमिका भी अदा की है। बैंक अपने इंफ्रास्ट्रक्चर को ऊर्जा दक्ष और पर्यावरण सौहार्दपूर्ण बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। इसमें स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करने, ऊर्जा बचाने और विभिन्न साझेदारों के साथ मिलकर ऊर्जा संरक्षण के लिए कई उपायों को शामिल किया गया है।

4. संरक्षित खाता क्रियाशीलता:

हरित बैंकिंग ने खाता क्रियाशीलता में सुधार करने का भी प्रयास किया है। इसमें डिजिटल बैंकिंग, ऑनलाइन लेन-देन, और सुरक्षित इंटरनेट लेन-देन के लिए उपायों को शामिल करने का प्रयास है।

वास्तव में, बैंक इससे भी आगे बढ़ सकते हैं और हरित बैंकिंग उत्पाद प्रदान कर सकते हैं जो उपभोक्ताओं को हरित विकल्प चुनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसे समझने के लिए, आइए हरित रिटेल बैंकिंग उत्पादों के कुछ उदाहरण देखें:

- **हरित कार ऋण** – ग्राहकों को इलेक्ट्रिक या कम उत्सर्जन वाले वाहनों की खरीद के लिए कम ब्याज दरों की पेशकश की जाती है।
- **हरित बचत और बॉन्ड** – ये व्यक्तियों को पर्यावरण या सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने वाली परियोजनाओं में निवेश करने की अनुमति देते हैं।
- **हरित बंधक** – ए या बी की ऊर्जा दक्षता रेटिंग वाले घर खरीदने वाले लोगों के लिए उपलब्ध है।
- **ग्रीन होम आधुनिकीकरण ऋण** – ये घर मालिकों को अपनी संपत्तियों में ऊर्जा-बचत नवीकरण करने में सक्षम बनाते हैं।

5. वृक्षारोपण:

हरित बैंकिंग के तहत, वृक्षारोपण एक महत्त्वपूर्ण पहलू है जिससे पूरे समुदाय को साझा होने वाला लाभ हो रहा है। बैंक न केवल अपनी खुद की पर्यावरण सहायक योजनाओं को लागू कर रहे हैं, बल्कि उन्होंने ग्राहकों को भी इस अभियान का हिस्सा बनाया है। अब ग्राहक भी अपने बैंक के साथ मिलकर वृक्षारोपण कार्यक्रमों में शामिल हो रहा है, जिससे हमारे पूरे समुदाय को हरितता के क्षेत्र में जागरूक करने में सहायक हो रहा है।

निष्कर्ष:

हरित बैंकिंग, इसके सभी पहलुओं में, एक नया युग दर्शाती है जो हमारे आर्थिक संबंधों को बनाए रखने के साथ-साथ हमारे पर्यावरण की रक्षा करने का भी एक नया मार्ग प्रदर्शित कर रहा है। इस नए सोच का उदाहारण साझा करने वाले हर एक व्यक्ति, समृद्धि के मार्ग पर चलते हुए, सामाजिक समाज के साथ मिलकर एक स्वस्थ और हरित भविष्य की ओर बढ़ रहा है। इस अभियान में सहयोग करने वाले हर व्यक्ति ने एक बेहतर और स्वस्थ आर्थिक पर्यावरण की ऊँचाइयों को छूने का संकल्प किया है। इस सहयोग से ही हम एक हरित और स्वस्थ भविष्य की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

***

बॉब प्रतियोगिताएं

क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

देहरादून क्षेत्र द्वारा दिनांक 16 दिसंबर, 23 को हरिद्वार मुख्य शाखा के सहयोग से राजकीय प्राथमिक विद्यालय न. 25, टिबड़ी, हरिद्वार में कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए बॉब निबंध व चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. शीर्ष 10 को श्री अपूर्व अस्थाना, शाखा प्रबंधक, श्रीमती रमा वैश, प्रधानाचार्या के करकमलों द्वारा पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–दक्षिण

दिनांक 28 अक्तूबर 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु–दक्षिण की नेरिगा शाखा द्वारा वाग्देवी विलास कॉलेज के पीयु एवं डिग्री के विद्यार्थियों के लिए कन्नडा/हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विजेता प्रतिभागियों को कॉलेज के प्रधानाचार्य और उप प्रधानाचार्यद्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

दिनांक 02 नवंबर, 2023 को करनाल क्षेत्र की महाराणा प्रताप चौक, करनाल शाखा द्वारा श्री रामचरित मानस वरिष्ठ माध्यमिकविद्यालय, करनाल में बॉब निबंध लेखन प्रतियोगिता तथा वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को स्कूल प्रबंधन, शाखा प्रमुख श्री अमित गोयल तथा श्री सुनील, अधिकारी द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो क्षेत्र

दिनांक 11 दिसंबर, 2023 को कोलकाता मेट्रो क्षेत्र द्वारा श्यामबाजार विद्यामंदिर हाई स्कूल, श्यामबाजार, कोलकाता में बॉब चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता स्कूल के प्राचार्य श्री राधेश्याम सिंह ने की। शाखा प्रबंधक श्री प्रवेश कुमार आर्य द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, जमशेदपुर

दिनांक 01 दिसम्बर, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय जमशेदपुर एवं मानगो शाखा के संयुक्त तत्वावधान में गुरु नानक मध्य विद्यालय मांगो जमशेदपुर में बॉब निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 40 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। सभी विजेता प्रतिभागियों को बैंक की ओर से प्रशस्ति पत्र व पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया

क्षेत्रीय कार्यालय, शिमला

दिनांक 30 दिसंबर, 2023 को शिमला क्षेत्र की पिंजौर शाखा द्वारा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बसोला में बॉब स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को स्कूल के प्रधानाचार्य श्रीमती सिम्मी बंसल, श्री प्रमोद सिरोही, शाखा प्रमुख एवं श्री प्रांजल मेहता संयुक्त शाखा प्रबंधक द्वारा सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, अलीगढ़

दिनांक 30 नवंबर, 2023 को अलीगढ़ क्षेत्र की सादाबाद शाखा के सहयोग से एम जे पब्लिक स्कूल में कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों के लिए सुलेख प्रतियोगिता तथा कक्षा 9 से 12 वीं तक के छात्रों के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 120 छात्रों ने भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों को उप क्षेत्रीय प्रमुख, अलीगढ़ क्षेत्र श्री संतोष कुमार, सादाबाद शाखा प्रमुख श्री अंकित जैन एवं एम जे पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष श्री जगबीर सिंह और प्रधानाचार्य श्री महेंद्र पाल सिंह की उपस्थिति में पुरस्कार प्रदान किए गए।

विमर्श

वर्ष 2030 में भारतीय बैंकिंग

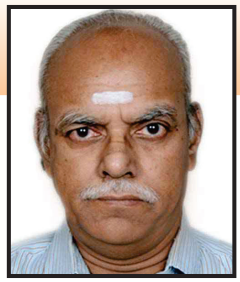

श्रीनिवास कृष्णन
प्रबंधक
जीवराज पार्क शाखा
अहमदाबाद क्षेत्र

बैंक द्वारा हिंदी दिवस (2023) के अवसर पर आयोजित वैश्विक हिंदी आलेख प्रतियोगिता में हिंदीतर भाषा (ग क्षेत्र) संवर्ग के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत आलेख ....

परिवर्तन संसार का नियम है। एक समय लोगों की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने हेतु गांव की महाजनी व्यवस्था ने 'बैंक' के रूप में एक विनियमित और अधिकारिक संस्था का स्वरूप धारण कर लोगों की आर्थिक व वित्तीय जरूरतों को पूरा किया। आज ये बैंक आर्थिक शक्ति का प्रमुख केंद्र हैं, इसलिए प्रमुख अर्थशास्त्रियों ने बैंकों को अर्थव्यवस्था का मेरुदंड बताया है और पिछले कुछ दिनों में भारत ने अपने मजबूत बैंकिंग तंत्र के फलस्वरूप विश्वभर में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले देशों के बीच अपना एक मजबूत स्थान स्थापित किया है। वर्ष 2030 में अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक जनसांख्यिकी, शहरीकरण आदि ही वर्ष 2030 में बैंकिंग की रूपरेखा को निर्मित करेंगे।

वर्ष 2030 में भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले घटकों का बैंकों पर प्रभाव:

जनसांख्यिकी: विश्व भर में इस समय भारत में उपलब्ध जनसांख्यिकी शक्ति पर बहुत अधिक चर्चा हो रही है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2025 तक हमारी जनसंख्या चीन से भी अधिक हो जाएगी। चीन की कामकाजी जनसंख्या वर्ष 2015 में ही अपने उच्चतम शिखर को पहुंच गई थी। इसलिए, यह अगले कुछ वर्षों में संकुचित हो जाएगी। जबकि वर्ष 2030 में भारत की 68% जनसंख्या कामकाजी श्रेणी अर्थात् 15 वर्ष से 65 वर्ष के बीच के आयुवर्ग की होगी और वर्ष 2030 में भारतीयों की सामान्य औसत आयु 70 वर्ष की हो जाएगी। ग्राहकों के नए प्रवाह की दृष्टि से ये आंकड़े जहां एक और बैंकों के लिए दीर्घकालिक अवसर उत्पन्न करेंगे वहीं इन अलग-अलग आयु वर्ग के ग्राहकों के तौर-तरीकों, रुचियों से जुड़ी चुनौतियां भी बैंकों के लिए अवसर उत्पन्न कराएंगे। इसलिए, वर्ष 2030 में बैंकों को ग्राहको की अपेक्षाओं का सतत पूर्वानुमान लगाना होगा और उन्हें तत्पर पूरा करने की आवश्यक रणनीति तैयार करनी होगी।

शहरीकरण: वर्तमान में भारत तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ते देशों में भी शुमार हैं। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 में हमारी शहरी जनसंख्या सालाना 1.1% वृद्धि की तुलना में 2.61% की दर से हर वर्ष बढ़ेगी, इससे हमारे शहरों की जनसंख्या वर्ष 2030 में 631 मिलियन तक पहुंच जाएगी। इसका सीधा सा अर्थ यह है कि वर्तमान के 31% की तुलना में वर्ष 2030 में 41.8% लोग शहरों में निवास करेंगे। इससे मूलभूत संरचना निर्माण, आवास, उपभोग, शिक्षा आदि से जुड़ी आवश्यकताओं की पूर्ति के संबंध में बैंकों को वर्ष 2030 में बहुत से व्यावसायिक अवसर उपलब्ध होंगे।

औद्योगिकीकरण: वर्तमान सरकार 'मेक-इन-इंडिया', 'स्टार्ट-अप इंडिया', 'स्टैण्ड-अप इंडिया' जैसी बहुत सी योजनाएं उद्योगों के विकास के लिए चला रही हैं। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 तक हमारे देश में उद्योगों का एक बहुत बड़ा नेटवर्क बन जाएगा और यह देश में 90 मिलियन रोजगार के अवसरों को उपलब्ध कराएगा। यही नहीं यह बैंकों को भी वर्ष 2030 में कॉर्पोरेट और रिटेल कारोबार के नए व अच्छे अवसरों को उपलब्ध कराएगा।

नव-प्रौद्योगिकी: नव-प्रौद्योगिकी जैसे इंटरनेट, डिजिटलीकरण आदि को अपनाने में भी हमारी वर्तमान सरकार बहुत आगे है। हमारी सरकार की कोशिश तेज गतिवाली ब्रॉडबैंड कनैक्टीविटी और कम-से-कम कीमत पर इंटरनेट को अधिक-से-अधिक लोगों तक सुलभ कराने का है। पिछले कुछ वर्षों में रिलायंस के जियो नेटवर्क के प्रयासों से देश में इंटरनेट का प्रसार बहुत बढ़ा है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 में इंटरनेट व मोबाईल-नेटवर्क का उपयोग करने वाले लोगों की संख्या

1000 मिलियन से भी अधिक हो जाएगी, इन सबके फलस्वरूप नव- प्रौद्योगिकी अर्थात् इंटरनेट, डिजिटलीकरण को गति मि लेगी और बैंक अपने डिलीवरी चैनलों का उपयोग अधिक बेहतर ढंग से करने में कामयाब होंगे। इस तरह इंटरनेट के इस प्रसार से वर्ष 2030 में बैंकिंग का यह व्यवसाय कम-से-कम कीमत पर अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंच जाएगा।

वर्ष 2030 के नए परिदृश्य में बैंकों के प्रमुख कार्य व गतिविधियां:

ग्राहक, कर्मचारी, मालिक और विनियामक एजेंसियां ही बैंकों के अपने प्रमुख हिताधिकारी हैं, सरल शब्दों में बैंकों की अपनी सभी गतिविधियां इन्हीं चारों के इर्दगिर्द ही चलती हैं और वर्ष 2030 में नव-प्रौद्योगिकी व कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) के महत्तम उपयोग से बैंकिंग क्षेत्र से जुड़े ग्राहकों, कर्मचारियों, मालिकों और विनियामक एजेंसियों के कार्य जहां अधिक सरल बनेंगे, वहीं ये समय-प्रबंधन के साथ जुड़कर, अधिक जिम्मेदारियों से भी भरे होंगे। आइए, वर्ष 2030 के नए परिदृश्यों में बैंकिंग के इन सभी हिताधिकारियों के कार्यों का संक्षिप्त विश्लेषण करें:

ग्राहक: वर्ष 2030 में शिक्षा, इंटरनेट आदि के प्रसार से हमारे ग्राहक अधिक शिक्षित और विषय के अच्छे जानकार होंगे। वह अपनी आवश्यकताओं और उसके लिए चुकाए जा सकने वाली समय व कीमत के प्रति पूर्णतः निश्चिन्त होगे। विषय की अच्छी जानकारियों से ग्राहकों द्वारा मांगे गए उत्पाद/सेवाओं की जटिलताएं बढ़ेगी। इसके फलस्वरूप वर्ष 2030 में बैंक प्रतिदिन व प्रतिक्षण ग्राहक की आवश्यकताओं के अनुरूप अपने उत्पादों/सेवाओं में नए-नए बदलाव करेंगे और बैंक का कॉर्पोरेट कार्यालय ग्राहक की अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप प्रतिदिन नए-नए उत्पादों/सेवाओं को शुरू करेगा।

कर्मचारी: वर्ष 2030 में इंटरनेट व कृत्रिम बुद्धिमत्ता के फलस्वरूप बैंक के सभी उत्पाद व सेवाओं में ग्राहक की अपनी जरूरतों और आवश्यकताओं के अनुरूप जहां अधिक तेजी से बदलाव होंगे वहीं ये बैंकिंग उत्पाद/सेवाएं इतनी ही त्वरित गति से कर्मचारियों के अपने लैपटॉप सिस्टम में अद्यतन हो जाएंगी। इससे कर्मचारियों की कार्यक्षमता बढ़ेगी और उनका आत्मविश्वास भी अधिक होगा। वर्ष 2030 के नए परिदृश्य में बैंकों के कर्मचारी विभिन्न माध्यमों जैसे डिजिटल और वास्तविक दुनिया में ग्राहकों को अपने बैंकिंग उत्पाद व सेवाएं बेचेंगे और इस तरह कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच नए ग्राहकों को अपने साथ जोड़ने के साथ-साथ पुराने ग्राहकों को भी अपने साथ बनाए रखना उनके लिए एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य होगा।

मालिक: वर्ष 2030 में डिजिटलीकरण, इंटरनेट आदि के फलस्वरूप बैंकिंग व्यवसाय व बैंकिंग व्यवहार कम-से-कम कीमत में अधिक-से-अधिक लोगों के दायरे में होंगे। इसके फलस्वरूप बैंकों में नई प्रतिस्पर्धा पैदा होंगी जो लाभप्रदता में अंशधारकों के हिस्से को बढ़ाने के प्रयासों को विराम लगाएगा। इससे बैंक भविष्य में अधिक लाभ प्राप्त करने की खातिर वर्तमान में कुछ थोड़ी बहुत हानि भी झेलने के लिए तैयार रहेंगे। इससे निजी व सरकारी बैंकों की मालकियत में बदलाव आएगा और बैंकों में पूंजी लगाने के लिए भावी निवेशकों को प्रोत्साहित करना बहुत ही कठिन बन जाएगा।

विनियामक एजेंसी: वर्तमान में कड़ी प्रतिस्पर्धा और लक्ष्यों के प्रति दबाव के चलते बैंक अक्सर गलत ऋणों का चुनाव कर बैठते हैं और बैंकों में जालसाजी व धोखेबाजी की घटनाएं भी बहुत बढ़ गई हैं। विश्व भर की विनियामक एजेंसियां बैंकों को इससे उभारने के लिए बहुत अधिक सक्रिय हो गई है। केवल यूरोप और अमेरिका के बैंकों को ही विनियामक संस्थाओं के दंड और कानूनी खर्चा में लगभग अब तक 230 बिलियन डॉलर व्यय करने पड़े हैं। भारत में भी विनियामक एजेंसी भारतीय रिजर्व बैंक अब तक हमारे बैंकों पर लगभग 100 करोड़ से अधिक का दंड लगा चुका है। इस तरह वर्ष 2030 में उपभोक्ता संरक्षण, धन शोधन और बैंकिंग बाजार के सही संचालन पर विनियामक एजेंसियों की यही अत्यधिक सतर्कता, डूबते ऋणों, जालसाजी/ धोखाधड़ी की घटनाओं को पूरी तरह खत्म कर देगा और इससे तब आम आदमी का बैंकों और बैंकिंग संव्यवहारों के प्रति विश्वास भी अधिक घनीभूत व मजबूत होगा।

नव-प्रौद्यगिकी व कृत्रिम बुद्धिमत्ता का बैंकों में उपयोग: नव-प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता अच्छे के लिए ताकत रहे हैं और इन्होंने पिछले कुछ वर्षों में बहुत से उद्योगों की तस्वीर ही बदल दी हैं। आज बैंक नई-नई तकनीकों के साथ स्वयं को जोड़कर, विभिन्न मोबाईल एपों, कंप्यूटर साफ्टवेयरों की मदद से बैंकिंग की सभी सुविधाएं, आम लोगों को दिन के चौबीसों घंटे और सप्ताह के सातों दिन उन्हें निर्बाध रूप में उपलब्ध करा रही हैं। वर्ष 2030 में नई-नई तकनीकों की ये डिजिलीकृत सेवाएं, 'कृत्रिम बुद्धिमता' के साथ जुड़कर, शाखा-विहीन व कर्मचारी विहीन

बैंकों के रूप में स्थापित होकर, इन्हें बैंकिंग व्यवसाय हेतु अधिक उपयोगी, प्रासंगिक व लाभकारी बनाने में कामयाब होगी।

अगर यह कहा जाए कि पिछले 100 वर्षों की तुलना में बैंकिंग क्षेत्र में इस आने वाले एक दशक में देश के इस बैंकिंग उद्योगों में प्रौद्योगिकी (Tech) व कृत्रिम बुद्धिमत्ता के फलस्वरूप बहुत अधिक बदलाव होगे तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2030 में भारत विश्व की पांच बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों में एक होगा और भारत के बैंकिंग उद्योग भी फिनटेक, बिगटेक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि के सहयोग से बैंकिंग व्यवसाय को नए स्वरूप व आकार प्रदान करने में कामयाब होंगे। अब वे सभी नागरिकों की जीवन-यात्रा के हर पहलुओं में अंतर्निहित होंगे, फिर भी ये लोग बैंक नहीं जाएंगे। यह इस प्रकार से कि अब सभी लोग प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग के कारण अपना सभी लेनदेन ऑनलाइन करेंगे। सभी नागरिकों के अंतर्निहित भुगतान लेनदेनों में बैंकों की यह उपस्थिति नव ग्राहकों की उत्पत्ति व बैंकिंग उत्पादों की बिक्री का मुख्य केंद्र बिंदु बन जाएंगे। बैंक इन अंतर्निहित लेनदेन की मदद से लोगों की आय अनुमान, ऋण पात्रता पर सही निर्णय लेने के लिए बेहतर आंकड़ों को संगृहीत करने में कामयाब होंगे। बैंक इन आंकड़ों को अपने साफ्टवेयरों की मदद से विश्लेषित कर लोगों को उनकी वित्तीय स्थिति का सही अंदाजा लगाने में कामयाब होंगी और वह अपने ग्राहकों की वित्तीय जरूरतों को तो पूरा करेगी साथ ही साथ ही वह उन्हें निवेश से संबंधित आवश्यक सलाह भी घर बैठे ही उपलब्ध कराएगी।

इसके साथ ही वर्ष 2030 में बैंक अपने ग्राहकों को 'अंतर बैंक खाता अंतरण' (Inter Bank Account Portability) की सुविधा उपलब्ध कराएंगे अर्थात् यदि किसी ग्राहक को किसी बैंक की सेवा से कुछ तकलीफ हो तो वह उसी खाता नंबर के साथ अपना यह खाता अन्य बैंकों को स्थानांतरित करने में सक्षम होगा और यह सब कुछ नव-प्रौद्योगिकी के बेहतर उपयोग के फलस्वरूप ही संभव होगा।

इसी तरह आज 'एटीएम' आम आदमी द्वारा प्रयोग किया जानेवाला सबसे बड़ा डिलीवरी चैनल है। बैंक भी वर्तमान में अपने सभी बैंकिग उत्पादों व सेवाओं से संबंधित विज्ञापन को इन एटीएम में प्रदर्शित कर ग्राहकों को अपनी तरफ आकर्षित कर रहे हैं। वर्ष 2030 में एटीएम में दिखाए जाने वाले ये विज्ञापन कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ जुड़कर अधिक उपयोगी व प्रासंगिक बन जाएंगे। यह इस तरह से कि जब कोई गूगल सर्च इंजन में किसी चीज को ढूंढ़ता (Search) है तो गूगल उसे 'स्टोर' कर लेता हैं और बाद में यह उसकी रुचि के अनुरूप इन्हीं सर्च की गई वस्तुओं, उत्पादों और सेवाओं को उसके सामने बारंबार पेश कर, वह उन्हें इसे खरीदने के लिए अभिप्रेरित करता हैं। ठीक इसी तरह से कृत्रिम बुद्धिमत्ता के फलस्वरूप एटीएम में ग्राहकों द्वारा किए जा रहे अंतरण, गूगल सर्च इंजन के साथ जुड़कर ग्राहकों की अपनी रुचि व आवश्यकताओं के अनुरूप बैंकिग उत्पादों/सेवाओं के विज्ञापनों को उसके समक्ष प्रदर्शित करेंगे। इस तरह वर्ष 2030 में हमारा बैंकिंग उद्योग प्रौद्योगिकी व कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सहयोग से नए-नए ग्राहकों को अपने साथ जोड़ने और पुराने ग्राहकों को अपने साथ बनाए रखने में कामयाब होगा। वर्ष 2030 में बैंक इस प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप शाखा-विहीन व कर्मचारी विहिन होकर भी अधिक से अधिक लोगों के बीच अपनी उपस्थिति को दर्ज कराने में कामयाब होगी और हमारा बैंकिंग व्यवसाय वर्ष 2030 में नव-प्रौद्योगिकी की सहायता से नए स्वरूव व आकार को प्राप्त कर विकास के नए शिखर को प्राप्त करेगा।

इसमें कोई संशय नहीं कि भारत आज विश्व में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है और अर्थव्यवस्था के विकास में हमारे भारतीय बैंक भी बढ़-चढ़कर अपना सहयोग प्रदान कर रहे है। वर्ष 2030 में जनसांख्याकी, शहरीकरण, औद्योगिककरण आदि से जहां बैंकिंग व्यवसाय में विकास के नए अवसर निर्मित होंगे वहीं बैंक कड़ी प्रतिस्पर्धा के चलते धन के लेनदेन के अपने पारंपरिक व्यवसाय के साथ-साथ नए प्रकार के व्यवसायिक अवसरों को भी आजमाएंगे। इसके चलते वर्ष 2030 में हमारे बैंक कर्मचारी एक साथ कई-कई विषयों के जानकार व विशेषज्ञ होंगे और उनकी अपनी कार्यक्षमता भी बहुत अधिक होगी।

इसी तरह वर्ष 2030 में डिजिटलाइजेशन और इंटरनेट आदि के अत्यधिक उपयोग के फलस्वरूप सभी व्यक्ति अपना सभी लेनदेन बैंकिंग डिलीवरी चैनलों के माध्यम से पूर्ण करेंगे और बैंक इन लेनदेनों को अपने विभिन्न सॉफ्टवेयरों की मदद से अच्छी तरह विश्लेषित कर, अपने सभी निर्णय 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल' के अंतर्गत अर्थात् मशीनों की सहायता से लेगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता मॉडल अर्थात् मशीनों की सहायता से लिए गए निर्णयों के अधिक सटीक व सही होने के फलस्वरूप आम आदमी का बैंकों के प्रति विश्वास अधिक मजबूत होगा, जो हमारे बैंकिंग व्यवसाय को वर्ष 2030 में नए शिखर पर पहुंचा देगा।

***

नराकास बैठकें एवं गतिविधियां

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

दिनांक 11 दिसंबर, 2023 को बड़ौदा अकादमी, बेंगलूरु द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), बेंगलूरु के तत्वावधान में समिति के सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

नराकास जोधपुर

दिनांक 29 नवंबर 2023 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जोधपुर की 23वीं बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग से सहायक निदेशक श्री नरेंद्र मेहरा का विशेष सानिध्य प्राप्त हुआ। बैठक में अध्यक्ष श्री ललित कुमार सिपानी, उपाध्यक्ष श्री जय प्रकाश सांखला, श्री पुनीत मिश्र (सहायक महाप्रबंधक), राजभाषा एवं संसदीय समिति, श्री सोमेंद्र यादव (मुख्य प्रबंधक-राजभाषा), सहित समस्त बैंको के कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे।

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

दिनांक 15 दिसंबर, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), बेंगलूरु की 76वीं अर्ध-वार्षिक बैठक एवं संयुक्त हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान वर्ष 2023 में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया इस अवसर पर केनरा बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी तथा नराकास के अध्यक्ष श्री के. सत्यनारायण राजू, भारतीय रिज़र्व बैंक, बेंगलूरु क्षेत्रीय निदेशक सुश्री सोनाली सेन गुप्ता, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-दक्षिण के उप निदेशक श्री अनिर्बान कुमार विश्वास द्वारा अंचल कार्यालय, बेंगलूरु में कार्यरत सुश्री एस.स्मिता को हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार तथा हिंदी प्रश्न मंच प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी

दिनांक 03 नवंबर, 2023 को नराकास वाराणसी के तत्वावधान में राजभाषा समारोह एवं हास्य कवि सम्मेलन 2023 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में कवि दमदार बनारसी, सांड बनारसी, भुलक्कड़ बनारसी, हीरालाल मिश्र मधुकर, गिरीश पांडेय एवं निधि गुप्ता 'कशिश' ने काव्य पाठ किया। कार्यक्रम में श्री कल्लोल बिस्वास, अध्यक्ष नराकास व क्षेत्रीय प्रमुख, श्री रवींद्र कुमार, उप महाप्रबंधक, पंजाब नेशनल बैंक, श्री अरविंद पाण्डेय, उप महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा श्री राजेश कुमार, उप महाप्रबंधक, पंजाब नेशनल बैंक श्री ब्रह्मानंद दिवेदी, क्षेत्रीय प्रमुख वाराणसी क्षेत्र खख एवं वाराणसी के सभी सरकारी बैंकों एवं बीमा कंपनियों के कार्यालय प्रमुख उपस्थित रहे ।

नराकास, अलीराजपुर

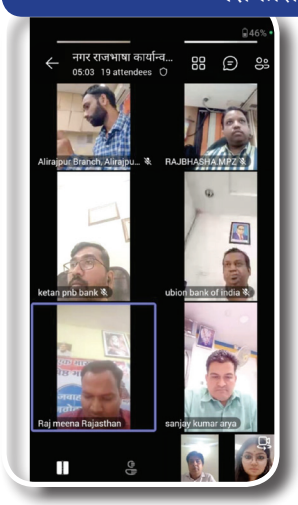

दिनांक 30 नवंबर, 2023 को नराकास, अलीराजपुर की 11वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का आयोजन टीम्स ऐप के माध्यम से किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता अग्रणी जिला प्रबंधक श्री राजेश हासवानी ने की। बैठक में 14 सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों ने प्रतिभागिता की। बैठक में अंचल राजभाषा प्रभारी श्री चंदन कुमार वर्मा की भी उपस्थिति रही।

नराकास, फतेहपुर

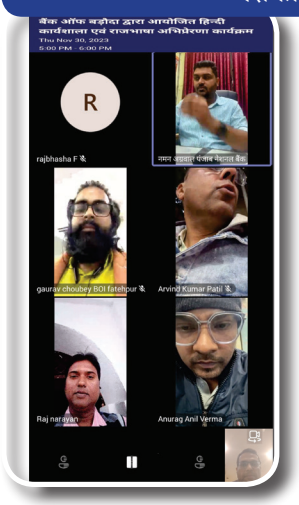

दिनांक 30 नवंबर, 2023 को नराकास फ़तेहपुर के तत्वावधान में संयोजक कार्यालय, बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा हिंदी कार्यशाला एवं अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कविता

स्नेह की ऊष्मा

परिवार और कार्य के बीच संतुलन बनाती बेटियों को जब देखता हूं
तो प्रणाम करता हूं, उनकी जिजीविषा को
उनके सामर्थ्य को, उनके साहस को
उनके तारतम्य को, उनकी जीवटता को
और श्रद्धा से भर जाता है मन
उस ममत्व के प्रति
जो काम के साथ-साथ अपनी संतान के साथ भी न्याय करना जानती है
जो जानती है कि उसका दायित्व
उन वृद्ध माता-पिता के प्रति भी उतना ही है
जितना उसके मातृ संस्थान के प्रति
जो जानती हैं कि उसका दायित्व
परिवार के प्रति भी उतना है
जितना सामाजिक संबंधों के प्रति।
धरती-सी सहनशीलता महसूस की है मैंने इन बेटियों में
इसलिए प्रयास करता हूं
कि जब तक मैं कार्यालय में
एक मुखिया की भूमिका का निर्वहन कर रहा हूं
तो दूं आजादी उन्हें अपने तरीके से काम करने की
आने वाली चुनौतियों का सामना करने की
बेहतर परिणाम के साथ समय के लचीलेपन की।
भर देना चाहता हूं उनमें आत्मनिर्भर बने रहकर जीने की इच्छा
कोशिश करता हूं कि न हो उन्हें ग्लानि कभी
आत्मनिर्भरता के उनके निर्णय पर।
वो भी पुरुषों के साथ
कंधे से कंधा मिलकर चलें।
वो भी इस राष्ट्र के निर्माण में
पुरुषों की भांति योगदान दें।
वो भी आत्मनिर्भरता के साथ
अपनी संतान को बेहतर भविष्य दें।
इसलिए देना चाहता हूं उन्हें
एक पिता की भांति
स्नेह की ऊष्मा
जिससे कभी मुश्किलों के सर्द
मौसम उनकी जीवटता को
डगमगा न सकें।
समय के असंतुलन की आंधी
उनके खुद पर विश्वास को हिला न सके।

रामावतार पालीवाल
सहायक महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख
सवाई माधोपुर क्षेत्र

जो आप न होते हे! गुरुवर

जो आप न होते हे! गुरुवर
मैं अज्ञानी रह जाता
हो जाता व्यर्थ जीवन मेरा
मैं पढ़ना-लिखना न सीख पाता

आप ही ने दिया है ज्ञान मुझको
आप ही ने साक्षर बनाया है
आप ही ने दी है हर छोटी-बड़ी सीख मुझको
मेरा यह चरित्र विशाल बनाया है

यूं तो मां थी पहली शिक्षक मेरी
पर जीवन के हर मोड़ पर...आप ही ने पथ मुझको दिखाया है
मैं तो था माधो मिट्टी का
पर आप ही ने इस मूढ़-बुद्धि को चपल बनाया है

आपने न गिरने दिया मुझको कभी
हर बार मेरा हौंसला बढ़ाया है
जो कर दी है मैंने गलती कभी
आपने माफ किया मुझको...और सही मार्ग पर चलना सिखाया है

हर सुख-दुख में खड़े थे आप साथ मेरे
मुझको हर मुश्किल रास्ते पर चलना आपने सिखाया है
माता-पिता तो सब कुछ करते हैं ही जीवन में
पर आपने हर बार उनका भी फर्ज निभाया है

किस तरह करूं धन्यवाद आपका हे! गुरुवर
मुझको न समझ यह आया है
कृपया स्वीकार करें मेरा हृदय-वंदन
आप ही में मैंने ईश्वर को पाया है।

गौरव
लिपिक
मधिनाथ शाखा

कहानी

एक नई सुबह

बी. सुगुणावती
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूरु

करवटें बदल बदल कर नीता ने सारी रात जागते ही गुजारी। अंधेरा छटने लगा था बेडरूम की खिड़की से सुबह की ठंडी हवा कमरे में आ रही थी और पक्षियों की चहचहाहट भी सुनाई पड़ रही थी। पहली बार ऐसा हुआ था कि रात जागते हुए गुजारनी पड़ी। लाख कोशिशों के बादजूद नींद कोसों दूर थी। पूरी रात सोच-सोच कर हैरान रही आखिर ऐसा क्यों हुआ। नीता ने कोई कसर न छोड़ी थी अपने मेहमानों की खातिरदारी में। उसने हर संभव प्रयास किया था कि खाने-पीने और रहने ठहरने की हर सुख सुविधा मेहमानों को मिले।

एक जमाना वो भी था जब मेहमानों को अतिथि देवो भव: माना जाता था क्योंकि मेहमान नवाजी करने के बाद मेहमान भी खुश होकर ढेर सारी शुभकामनाएं व आशिर्वाद दिया करते थे। मेहमान अपने मेजबानों का गुणगान करते नहीं थकते थे। अपनी मान-मर्यादा का खुद ख्याल रखते थे और आज के जमाने में ये क्या? उल्टा चोर कोतवाल को डांटे वाली हरकतें करते हैं। खुद सभी को परेशान करते हैं और मेजबान को भी परेशानी में डाल देते हैं। अपनी अभिलाषाओं का पिटारा खोलते थकते नहीं। सबकी इच्छाएं पूरा करते करते मेजबानों की तिजोरी खाली हो जाती है पर मेहमानों की इच्छाएं पूरी नहीं होती। नीता के साथ भी यही हुआ था। नए रिश्तेदार थे। हाल ही में बेटी की शादी की थी। बड़े नाजों से पाला था लाड़ली बिटिया नित्या को। नीता एक कामकाजी महिला होने के नाते घर-परिवार और अपनी नौकरी दोनों में खूब अच्छी तरह से तालमेल बिठा कर दोहरी जिन्दगी जी रही थी। कभी किसी को शिकायत का मौका नहीं दिया। न दफ्तर में और न ही घर में।

नीता जब खुद ब्याह के बाद इस घर में आयी थी तो शुरू शुरू में डरी जरूर थी कि कैसे घर और दफ्तर के काम-काज में तालमेल बिठाऊं। मायके में तो मां हर काम संभाल लेती थी पर यहां तो सास-ससुर और ननद-देवर को भी मुझे ही संभालना है। परंतु उसका यह डर भी जल्द ही दूर हो गया। नीता बहुत सौभाग्यशाली थी कि उसे शालीन और सलीके का ससुराल मिला था आखिर उसके माता-पिता के संस्कारों का परिणाम भी था। पति और घर के सभी सदस्य उसके काम में हाथ बटा दिया करते थे।

एक साल में नीता की गोद भी भर गई और उसका आंगण नन्हीं परी नित्या के आगमन से खिल उठा। नीता का जीवन अपार खुशियों से भर गया था। अब नीता को कुछ समय के लिए दफ्तर के काम-काज से छुट्टी तो जरुर मिली पर नन्हीं नित्या के देखभाल की जिम्मेदारी भी बढ़ गई। धीरे-धीरे नित्या बड़ी हो रही थी फिर नीता की भाग-दौड़ वाली जिन्दगी भी फिर से शुरू हो गई परंतु उसने कभी न हार मानी न कभी थकी। कुछ वर्षों में नीता को पुत्र प्राप्ति और नित्या को प्यारा सा भाई मिल गया जीवन की बगिया में खुसियों के फूल खिलखिला रहे थे। दो प्यारे प्यारे बच्चों से इस भाग-दौड़ की जिन्दगी में कब समय निकल गया पता ही नहीं चला और समय और अपने खुद के लोगों के बदलते व्यवहार ने उसे आज इस मोड़ पर ला खड़ा कर दिया था।

आज पहली बार नीता को थकावट सी लग रही थी। ऐसा महसूस हो रहा था कि शरीर की सारी शक्ति किसी ने निचोड़ ली हो। सर भारी लग रहा था। रात भर जागने और लगातार सोचने के कारण सर फटा जा रहा था। सुबह से घर के अन्य काम निपटा तो लिए पर दफ्तर जाने का मन ही नहीं कर रहा था। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसकी खुद की बिटिया, दामाद और बेटी की सास और ननद उसके साथ ऐसा करेंगे। पिछले नौ महिनों से नित्या और उसके ससुराल वाले उसके घर आ कर नीता के साथ ही रह रहे थे। क्योंकि नित्या की गोद भरी थी और कुछ जटिलताएं भी थी अतः नित्या शुरूआती दिनों में ही मायके आ गयी थी। फिर एक दो महीने में ही दामाद की तबीयत बिगड़ी और वह भी चला आया नीता के घर। फिर क्या था पीछे-पीछे नित्या की सास जो विधवा थीं और पूरी तरह से बेटे पर ही निर्भर थी, वह भी आ गई। कहते हैं न जब आफत आती है तो इंसान को चारों ओर से घेर लेती है। अपने पराये और अच्छे बुरे की परख कहते है कि जब नजदीकियां बढ़ती हैं तभी पता चलती है और सामने वालों की खूबियां और खामियां साफ साफ नजर आने लगती हैं। नीता के जीवन में यही सब घट रहा था। सभी को यही लगता था कि इनको खुश रखने और इनका ख्याल रखने की जिम्मेदारी अकेली नीता की है। सुबह से रात तक अकेली सारा काम करती, भाग-भाग कर दफ्तर जाती और थक चूर कर देर शाम को घर वापस आती। पहली बार उसे एहसास हो रहा था कि जिन्दगी इतनी दूभर भी

हो सकती है। नित्या और उसके पति की हमेशा शिकायतें करने की बुरी आदत से नीता और भी परेशान हो जाती थी। बात-बात पर हर छोटी-मोटी बातों पर आपस में उनका रूठना फिर विवाद करना तो जैसे उनकी दिनचर्या बन गई थी जिससे घर का पूरा माहौल बिगड़ने लगा था। नित्या शादी से पहले ऐसी तो नहीं थी। कितनी समझदार व सुशील थी फिर अचानक उसके व्यवहार में इतना बड़ा बदलाव कैसा। नित्या की सास और ननद भी बीच-बीच में आग में घी डालने का काम करते रहते थे। वे सभी एक जुट हो कर बेचारी नीता पर हावी हो जाते। नीता के पति और बेटे को नीता के प्रति उनका इस तरह का व्यवहार बिल्कुल पसंद न था पर नित्या और उसके ससुराल वाले बुरा न मान जाएं, बात का बतंगड न बन जाए ऐसा सोच वे खामोश रहते थे।

दिन बीतते गए और आखिर वो सुनहरे पल भी आए जब नित्या ने एक खूबसूरत बच्चे को जन्म दिया। बच्चे के आगमन से सभी के चेहरे खिले हुए थे। सारे गिले शिकवे भूलकर सभी आपस में गले मिल कर एक दूसरे को बधाइंया दे रहे थे। बच्चा बड़ा ही प्यारा और गोल-मटोल था। नीता उसे गोद में लेते ही सारे दर्द भूल गई। घर में खुशियों का माहौल था। मिठाइयां बंट रही थीं। नित्या और बच्चे को देखने रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दोस्तों की भीड़ लगी हुई थी। घर में एक नई रौनक आ गई थी। रीति-रिवोजों की चर्चा छिड़ ही जाती । अक्सर लोग पूछने लगते कि नवासी का नामकरण कब है? क्या नाम रख रहे हो? पार्टी कब दे रहे हो? वगैरा-वगैरा। अभी मुश्किल से एक सप्ताह भी नहीं हुआ था नित्या के डिलीवरी को और इतने सारे सवाल-जवाब। नीता ने भी ठान ली कि चलो खुशी का माहौल है आखिर नाना-नानी को भी तो अपना फर्ज निभाना है। धूमधाम से नामकरण संस्कार करेंगे। हवन होगा, पूजा पाठ होगा और सभी को मिष्ठान-भोजन पर न्यौता दिया जाएगा। मन ही मन फूली नहीं समा रही थी नीता। बहुत ही संतुष्ट थी नन्हें मेहमान का धूमधाम से नामकरण संस्कार करेंगे और तैयारी करने में जुट गई। परंतु यह क्या अचानक नित्या और दामाद अपने एक रिश्तेदार के यहां जाने के लिए तैयार हो गए। नीता समझाने की कोशिश की कि इतने छोटे बच्चे को लेकर अभी जाना सही नहीं होगा। परंतु वे किसी की सुनने के मूड में नहीं थे और निकल पड़े घूमने पांच दिन के नवजात शिशु को लेकर।

काफी देर हो गई नित्या को गए हुए कोई फोन नहीं, कोई खबर नहीं। नीता चिंतित हो उठी। जी घबराने लगा। फोन करूं या न करूं के टेंशन में माथा पकड़ कर उनका इंतजार करने लगी। जब रात होने को आई तो नीता से रहा नहीं गया। नित्या को फोन लगाया। नित्या बहुत ही शांत भाव से बोल रही थी मम्मी आज रात हम यहीं रुक रहें हैं। अंजू दीदी (नित्या की ननद) जिद कर रही है यहां रुकने की, वे भी कुछ समय बच्चे के साथ बिताना चाहते हैं। नीता कुछ न बोल पाई। ठीक है अपना ख्याल रखना कह कर फोन रख दिया।

घर पूरा सूना-सूना लग रहा था। यह क्या आज माहौल इतना उदासीन क्यों लग रहा है। भाग-दौड़ करने के लिए कोई काम नहीं रहा क्या। मैं क्यों इतना सोच रही हूं एक रात की तो बात है। सुबह तक वे जरुर वापस आ जाएंगे। किचन की साफ सफाई कर नीता शांत मन से सोने के लिए चली गई। थके होने के कारण कुछ पलों में आंख लग गई।

पड़ोस के मुर्गे की बांग से नीता की नींद भंग हुई और उसे मजबूरन जल्दी उठना पड़ा। जल्दी-जल्दी काम निपटाने लगी। चाय-नाश्ता सब तैयार कर लिया। पति और बेटे के साथ मिल कर नाश्ता करने लगी। बहुत दिन हो गए थे साथ में नाश्ता किए हुए। सारा दिन भाग-दौड़ में बीत जाता कभी इन दोनों को समय ही नहीं दे पाई थी। दोनों ही बहुत समझदार हैं। अतः कभी किसी प्रकार की शिकायत नहीं करते। चाय की चुस्कियां लेते हुए बात छिड़ी बच्चे के नामकरण संस्कार की। किस-किस को न्यौता देना है, नित्या और बच्चे के लिए क्या उपहार लेना है। पंडित से पूछकर शुभ दिन निकलवाना है। तीनों ने तय किया कार्यक्रम कैसे, कब और कहां करना है। बस नित्या के आते ही अंतिम रूप देना बाकी था। अचानक फोन की घंटी से सभी घबरा गए। देखा तो दामाद का कॉल था। नीता ने ही फोन उठाया और ताजुब हो गई दामाद की बात सुन कर हैलो मम्मीजी मैं अनिरुद्ध बोल रहा हूं। एक्चुअली क्या हुआ कि हमें कुछ जरुरी काम आ गया है इसलिए हमने तय किया है कि आज नित्या और बच्चे को लेकर वापस बेंगलूरू चले जाएंगे। टिकट भी करवा लिया है। सॉरी मम्मीजी आप लोगों से मिलना नहीं हो पाएगा और फोन रख दिया। नीता को कुछ सवाल-जवाब करने का अवसर ही नहीं दिया। नीता परेशान हो कर पति और बेटे के सामने फूट पड़ी। कुछ दिनों से बेटी और दामाद का बर्ताव बदला बदला सा लग रहा था। कोई सीधे मुंह बात ही नहीं करते और उसपर से अचानक उनका इस तरह चला जाना। कुछ समझ नहीं आ रहा था। कम से कम खुलकर बात कर लेते, कोई परेशानी थी तो जिक्र कर लेते। कोई भूल-चूक हुई हो तो खुलासा कर लेते। इस तरह जाने का क्या मतलब लगाऊं। आस-पड़ोस के लोग, रिश्तेदारों के सवालों का क्या जवाब दूं। ऐसे कैसे कर सकते हैं। क्या कुछ नहीं किया उन्हें खुश रखने के लिए। इन्हीं विचारों में खोयी रही नीता फिर पता नहीं कब शाम और शाम से रात हो गई।

घर का सूनापन और मन की अशांति से दिलो- दिमाग में

कई बवंडर उठने लगे और नीता का जीना हराम होने लगा। नित्या ने जाने के बाद फोन भी नहीं किया न ही हमारे फोन का जवाब दिया। नीता की परेशानी दिन प्रति दिन बढ़ती ही जा रही थी और रात भर जागने के बाद सुबह की पहली किरण ने नीता के मन-मतिष्क में उठे सारे बवंडरों को धो डाला और उसे यह अहसास करा दिया कि जीवन का नाम ठहराव नहीं बल्कि बदलाव और गतिशीलता है। इस एहसास के साथ ही नीता ने अपने अंदर एक नई ऊर्जा को महसूस किया। नीता ने दृढ़ निश्चय कर लिया कि कब तक अपने आप में घुटती रहूंगी, आखिर उनके जाने से मेरे जीवन में ठहराव तो नहीं आने वाला। मुझे तो अपने कर्तव्य पथ पर चलना ही होगा। अपना घर-बार, पति-बेटा और दफ्तर का काम तो संभालना है। मैं क्यूं कमजोर पड़ूं किसी के स्वार्थ के आगे। हमें तो केवल अपना कर्म करना है, फर्ज निभाना है। न भूतो, न भविष्य, बस कर्मठ बन कर्तव्य निर्वाह करना है। नीता ने ठान लिया अब ऐसे लोगों के लिए हमें नहीं सोचना चाहिए जो रिश्तों में दरार पैदा करते हों। जीवन के उतार-चढ़ाव में जो भी होता है अपने अच्छे के लिए होता है। रात जागते गुजर गई तो क्या हुआ। एक नई सोच, नया उत्साह और नई उमंग ने नीता के जीवन में एक नए संदेश के साथ नई सुबह भी लाया है।

इस नई सुबह के साथ ही नीता ने तुरंत ठान लिया अब आगे क्या करना है। तुरंत सारे काम निपटा कर दफ्तर की ओर उन्मुख हो गई। ली थी पूरे तीन महिने की छुट्टियां। सारी छुट्टियां रद्द करवा ली। दफ्तर पहुंची तो सभी ने घेर लिया। प्रश्नों की बौछार होने लगी परंतु नीता को कोई परेशानी नहीं हुई सभी को शालीनता से बिना झुंझलाहट के जवाब देने में। दफ्तर के काम में मगन हो कर बड़ा ही सुकून मिल रहा था। इस नई सुबह ने तो नीता के अंदर एक नया जोश भर दिया था। दुगुने उत्साह से वह घर, दफ्तर और बगीचे का काम में रम गई। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अपना जीवन खुद सुखमय बना सकता है। चाह सकता है कि सर्वे जनाः सुखिनो भवन्तु। जियो और जीनो दो।

***

अपने ज्ञान को परखिए उत्तर (पृष्ठ सं. 46)

1.	ख	11.	ग
2.	घ	12.	ख
3.	क	13.	क
4.	ख	14.	ख
5.	ग	15.	घ
6.	घ	16.	ग
7.	ग	17.	ख
8.	ग	18.	ग
9.	क	19.	घ
10.	क	20.	क

संगोष्ठी/ सेमिनार

दिनांक 09 अक्तूबर, 2023 को बैंक ऑफ़ बडौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी द्वारा द्विवेदी विधि महाविद्यालय चकिया के विद्यार्थीयों में अध्ययनरत छात्रों के लिए साइबर सुरक्षा विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के निदेशक श्री विवेक कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया। इस सेमिनार में प्रधान कार्यालय द्वारा प्रेषित साइबर सुरक्षा संबंधित पीपीटी के माध्यम से सत्र लिया गया। सेमिनार में सभी युवा विद्यार्थियों को बैंकिंग संबंधी फ्रॉड और उनसे किस प्रकार बचा जा सकता है विषय पर जानकारी प्रदान की गई।

दिनांक 04 अक्तूबर, 2023 को क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर में क्षेत्रीय प्रमुख श्री अमित बैनर्जी की अध्यक्षता में '**आधुनिक परिवेश में हिंदी का महत्व**' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री गिरजाशंकर गौतम, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय उपस्थित रहे। उक्त कार्यक्रम के दौरान श्री दीपक कुमार मिश्रा, उप क्षेत्रीय प्रबंधक तथा क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

नराकास बैठकें एवं गतिविधियां

नराकास, होशियारपुर

नराकास होशियारपुर की छमाही समीक्षा बैठक एवं वार्षिक राजभाषा शील्ड पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 27 अक्तूबर, 2023 को किया गया। बैठक के दौरान जालंधर क्षेत्र की होशियारपुर शाखा को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। होशियारपुर शाखा के शाखा प्रमुख श्री राहुल कपूर एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री रामू तिवारी ने सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय श्री नरेंद्र सिंह मेहरा एवं अध्यक्ष नराकास, होशियारपुर के करकमलों से ये पुरस्कार प्राप्त किया।

नराकास, राजनंदगांव

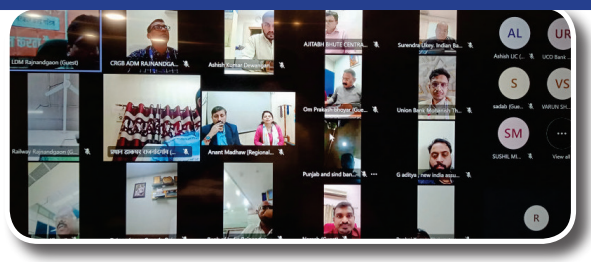

दिनांक 13 दिसंबर, 2023 को बैंक ऑफ़ बड़ौदा के संयोजन एवं अग्रणी जिला प्रबंधक, राजनंदगांव की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, राजनंदगांव की 12वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। यह बैठक श्री सर्वेंद्र मलिक, अग्रणी जिला प्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, राजनांदगांव की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री अनंत माधव, क्षेत्रीय प्रमुख, दुर्ग क्षेत्र, श्री चंदन कुमार वर्मा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, भोपाल तथा नराकास, राजनंदगांव के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

नराकास, अजमेर

दिनांक 08 नवंबर, 2023 को नराकास, अजमेर की छमाही बैठक के दौरान पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नराकास के तत्वावधान में आयोजित दो प्रतियोगिताओं में कुल तीन पुरस्कार बैंक ऑफ़ बड़ौदा के स्टाफ सदस्यों द्वारा भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक श्री नरेंद्र सिंह मेहरा के हाथों से ग्रहण किए गए।

नराकास, मेरठ

दिनांक 20 अक्तूबर, 2023 को नराकास मेरठ की 24वीं अर्धवार्षिक बैठक में बैंक ऑफ़ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, मेरठ के क्षेत्रीय प्रमुख महोदय श्री हरीश कुमार अरोड़ा को उत्कृष्ट कार्यालय प्रमुख सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ. छबिल कुमार मेहेर द्वारा प्रदान किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु-ग्रामीण

दिनांक 15 दिसंबर, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं बीमा), बेंगलूरु की 76वीं अर्ध-वार्षिक बैठक, पुरस्कार वितरण समारोह तथा संयुक्त हिंदी दिवस का आयोजना किया गया। हिंदी गायन प्रतियोगिता के लिए मुख्य प्रबंधक सुश्री शरॉन को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर केनरा बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ तथा नराकास के अध्यक्ष श्री के.सत्यनारायण राजू, भारतीय रिज़र्व बैंक के बेंगलूरु क्षेत्रीय निदेशक सुश्री सोनाली सेन गुप्ता, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-दक्षिण के उप निदेशक श्री अनिर्बान कुमार मिश्रा उपस्थित रहे।

नराकास, धमतरी

दिनांक 15 दिसंबर, 2023 को बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अग्रणी जिला प्रबंधक कार्यालय, धमतरी के संयोजन में गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धमतरी की 19वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक श्री सत्य प्रकाश, अग्रणी जिला प्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, धमतरी की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों को राजभाषा शील्ड तथा नराकास, धमतरी के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र तथा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

संस्मरण

दिल्ली वाली मां

कीर्ति गहलोत
एकल खिड़की परिचालक
स्टेशन रोड शाखा, जोधपुर

ऐसा हमारे साथ अधिकतर होता है कि जीवन की यात्रा के दौरान होने वाले उतार-चढ़ाव से हम अत्यधिक प्रसन्न या अत्यधिक दुख, तनाव, घृणा, निराशा और चिंता से ग्रस्त हो जाते हैं। कई बार हम तत्कालीन परिस्थिति के इतने वशीभूत हो जाते हैं कि हमें आशा की नई किरण दूर-दूर तक नजर नहीं आती। वह परेशानी हमारे विचारों पर इतना हावी हो जाती है कि हम उससे उभर नहीं पाते हैं और दिमाग में गलत विचार उछलकूद करने लगते हैं। लेकिन कभी-कभी हमारी परिस्थिति हमें जीवन के उस मोड़ पर ले जाती है। जहां कुछ लोग अकस्मात हमसे ऐसे टकरा जाते हैं जैसे मानो पिछले जन्म के किसी पुण्य कर्म का फल हमें मिला हो। जीवन के इसी उतार चढ़ाव में कुछ अपरिचित लोग हमसे इस प्रकार जुड़ जाते हैं कि उनके साथ बिताया समय हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन जाता है।

ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी हुआ। जैसे ही मैंने संस्मरण के बारे में लिखने का विचार किया तो कुछ पुरानी यादों के साथ एक अहम रिश्ता मुझे याद आया। और वो हैं मेरी दिल्ली वाली मां..... उमा देवी मैडम।

जी हां, कहते हैं न जन्म देने वाली मां से बढ़कर इस दुनिया में कोई नहीं होता। मैं कहती हूं कि पुण्य कर्मों का फल, फरिश्ते के रूप में मिलता है। जिनकी स्मृति मात्र से हमारा मन प्रफुल्लित हो जाता है। अभी तो सिर्फ उनका जिक्र हुआ है और उनके साथ बिताया समय मेरे आंखों के सामने चलचित्र के समान घूमने लगा है।

उनके साथ अपनी यादों की पुरानी पोटली को खोलूं तो बात 25 फरवरी, 2012 की है। जब मैंने अपने घर से कोसों दूर दिल्ली जैसे बड़े शहर में राष्ट्रीयकृत बैंक की नौकरी को स्वीकार किया था। तब मेरी उम्र करीब 21 वर्ष थी और मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति ज्यादा सही नहीं थी। मैं अपने परिवार की सबसे छोटी और लाडली बेटी होने की वजह से इस परिस्थिति से अनभिज्ञ थी। मेरी 12वीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद एक रोज मेरे पिताजी ने गंभीरता के साथ अपनी आर्थिक स्थिति को मुझसे साझा किया। उस स्थिति से रूबरू होकर ऐसा लगा मानो एक राजकुमारी को खुशियों भरी सपनों की दुनिया से अचानक संघर्ष भरे वर्तमान में पहुंचा दिया गया हो। एक मध्यमवर्गीय परिवार में रहते हुए भी मैं अपने ही हाल में मस्त थी। उस दिन पापा से बात करने के बाद मुझे बहुत दुख हुआ कि आज तक मैं उन्हें और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को समझ नहीं पाई। क्यूं नहीं समझ पाई कि वह अकेले हम सबके लिए कितना संघर्ष कर रहे हैं। साथ ही अपने पापा पर मुझे बहुत गर्व महसूस हुआ कि उन्होंने कभी मुझे कोई कमी महसूस नहीं होने दी। और मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि मुझे उनके इस संघर्ष को पार लगाना है और उनके साथ उनकी हिम्मत बनकर चलना है।

उन्होंने मुझे सलाह दी कि बैंक की खूब रिक्तियां निकल रही है तू उसके लिए पढ़ना शुरू कर। उन दिनों मैं स्नातक के प्रथम वर्ष में पढ़ रही थी। कला वर्ग से होने के कारण बैंक की पढ़ाई करना मेरे लिए बहुत मुश्किल था। लेकिन उनका मुझ पर अटूट विश्वास मेरी प्रथम प्राथमिकता थी। और किस्मत की बात थी कि उन दिनों सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों की परीक्षाएं व्यक्तिगत रूप से होती थीं। मैंने सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों की परीक्षा के लिए आवेदन करना शुरू किया और दिन-रात एक कर परीक्षा की तैयारी में जुट गई। एक के बाद एक अनुत्तीर्ण परिणाम मुझे निराशा की ओर ले जाने लगे। लेकिन पापा के विश्वास ने भी मुझे कस कर पकड़ रखा था। उनकी हिम्मत और विश्वास मेरे अंदर एक नई ऊर्जा उत्पन्न करते थे। और मैं अपने हर दिन की शुरुआत एक नई उमंग के साथ करती थी। कठिन परिश्रम और बहुत संघर्ष के बाद वो दिन भी आया जब मैं उनके विश्वास पर खरा उतरी। राष्ट्रीयकृत बैंक की परीक्षा में मेरा चयन हो गया यह सुनकर उनकी आंखें नम हो गई। उनके चेहरे की चमकती रौनक देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। लेकिन यह क्या? मेरा

ज्वाइनिंग लेटर देख कर उनके चेहरे की रौनक फिर से कहीं खो गई। मुझसे भी रहा न गया मैंने भी पूछ लिया क्या हुआ पापा यह उदासी कैसी? मेरे बालों को प्यार से सहलाते हुए उन्होंने भी कह दिया कि मेरे सपनों को पूरा करने के लिए तुझे अब मुझसे बहुत दूर दिल्ली जाना होगा। अपना बचपन और मौज-मस्ती छोड़कर जिम्मेदारी का बोझ उठाना होगा। तब मैं उनके दिल की गहराई को समझ नहीं पाई। आप हो ना हमेशा मेरे साथ... कह कर तैयारी में लग गई।

अब मैं पापा के साथ दिल्ली पहुंच गई। मेरे पापा के चेहरे की उस रौनक को मैं कभी भूल नहीं सकती, जब मैंने 25 फरवरी, 2012 को दिल्ली के नवादा शाखा में बैंक की नौकरी ज्वाइन की। वह मेरे जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण दिन था। मुझे नौकरी ज्वाइन करवा कर मेरे पापा शाखा के आसपास मेरे लिए घर ढूंढ़ने लगे। इतने बड़े शहर में मेरी लाडली अकेले कैसे रहेगी यह चिंता उन्हें सताने लगी। दिन-भर की भागदौड़ के बाद उन्होंने उस शाखा के सभी स्टाफ सदस्यों से मेरे बारे में बात करना शुरू किया। मेरे लिए उनकी चिंता उनकी हर एक बात में जाहिर हो रही थी। मैं उस शाखा की सबसे छोटी सदस्य थी इसलिए सभी स्टाफ सदस्यों ने मेरे पापा को सांत्वना देते हुए कहा कि आज से आपकी लाडली हमारी भी लाडली बनकर रहेगी। अगले दिन सुबह पापा वापस जोधपुर के लिए निकल गए और इसी के साथ शुरू हुआ मेरा दिल्ली का सफर।

मैंने पापा को तो हिम्मत दिखा दी। लेकिन मेरे लिए मौज-मस्ती वाली जिंदगी को पीछे छोड़ यह नया सफर संघर्षों से गिरा हुआ था। कहते हैं न जीवन है तो कभी खुशी कभी गम है। लेकिन अच्छी बात यह है कि जीवन में खुशियां और गम कुछ भी स्थाई नहीं हैं। ठीक ऐसे ही अब धीरे-धीरे मैं दिल्ली के नए माहौल में ढलने लगी। बैंक के काम के साथ घर का काम भी स्वयं करने लगी। हां कभी-कभी मुझे लगता था कि मैं किस झंझट में पड़ गई लेकिन मम्मी पापा से बात करके लगता था कि अब जिम्मेदारी के बोझ से दब गई। यह अलग बात है कि शाखा का माहौल बहुत ही सकारात्मक था। मैं उस शाखा में सबसे छोटी थी इसलिए सब की लाडली भी बन गई। काम उस शाखा में थोड़ा ज्यादा था लेकिन मैं नई-नई थी मुझे सीखने में कोई परेशानी नहीं थी। काम सीखने के साथ-साथ अब मैं सभी स्टाफ सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से जानने की कोशिश भी करने लगी। मैं यह मानती थी कि हम अपने जीवन के 6 से 7 घंटे बैंक में व्यतीत करते हैं तो बैंक भी हमारे परिवार जैसा ही है। चूंकि मैं अपने परिवार से बहुत दूर थी तो परिवार की अहमियत मेरे लिए ज्यादा थी और इतने में यकायक मेरी मुलाकात उमा मैडम से हुई।

उमा मैडम दिखने में थोड़ी सख्त थीं। लेकिन काम बड़ी सरलता से सिखाती थीं। उनकी एक अच्छी आदत थी आज जो काम मुझे सिखाया है कल फिर से वही पूछती थीं और न बता पाने पर बहुत जोर से डांटती थीं। कभी-कभी मुझे बहुत बुरा लगता था। मैं सोचती थी कि कोई काम नहीं समझ में आया और दोबारा पूछ लिया तो इतना गुस्सा क्यों? लेकिन वह मुझसे बड़ी थीं उन्हें मैं कुछ नहीं कह सकती थी। इसलिए मैंने अपनी आदत बना ली कि जब भी वह मुझे कोई काम समझातीं तो मैं अपना पूरा ध्यान उनकी तरफ रखती थी। अब धीरे-धीरे उनकी डांट से मैं बचने लगी या यूं कहूं कि उन्हें मैं भी अच्छी लगने लगी। वैसे तो सभी अपने-अपने काम में व्यस्त रहते थे। लेकिन भोजनावकाश के समय 5-10 मिनट सबके बीच बात हो जाती थी। उन्हीं बातों के बीच जब किसी ने मुझसे मेरा हाल पूछा तो भैया मैंने भी बता दिया कि दिन-भर की थकान के बाद घर पहुंच कर जब खुद को ही अपनी चाय बनानी पड़े तो मां की बहुत याद आती है। इतने में एक मैडम ने बोला - हां, सही कह रही हो जब मैं भी नई-नई नौकरी करने लगी थी तो मेरी मां शाम को 5:00 बजे चाय बनाकर दरवाजे पर मेरा इंतजार किया करती थी। इतना सुनते ही मेरी आंखें नम हो गई। मुझे मेरी मां की याद सताने लगी। लेकिन मैं जानती थी कि यह परिस्थिति भी स्थाई नहीं रहेगी और मुझे उमा मैडम ने संभाला। सख्त दिखते हुए भी जो अपनेपन का एहसास उन्होंने मुझे करवाया वह मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकती। पहले मुझे लगा बाकी सभी स्टाफ सदस्यों के समान इनका स्नेह स्वाभाविक है। लेकिन धीरे-धीरे मुझे उनके स्नेह की गहराई समझ में आने लगी। जब मुझे कोई सब्जी पसंद नहीं आती थी या मुझसे सब्जी जल जाती थी तो वह अपना भोजन मेरे साथ साझा कर देती थीं। तब मुझे उनमें एक मां नजर आती थी। क्योंकि बच्चों के खाने-पीने का ध्यान एक मां से बढ़कर कोई नहीं रख सकता। जैसे अपने बच्चों के जन्मदिवस पर वह खीर पूड़ी बनाती थी। ठीक वैसे ही मेरा जन्मदिन मनाना वह कभी नहीं भूलती थीं। धीरे-धीरे उनके साथ समय इतना जल्दी व्यतीत होने लगा कि मुझे अब दिल्ली शहर पराया नहीं लगता था। स्वाभाविक है कि शुरुआत में किसी नई चीज, जगह, काम के लिए हमारे अंदर बहुत घबराहट होती है और धीरे-धीरे उनकी इतनी आदत पड़ जाती है कि उनसे दूर होने का भय भी बना रहता है।

मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मेरा स्थानांतरण भी मेरे अपने

जोधपुर शहर में हो गया। अब वह समय आ गया था जब मुझे दिल्ली और उमा मैडम से विदाई लेनी थी। जब दिल्ली आई थी तब मन में एक घबराहट थी और उस दिन जब दिल्ली छोड़कर वापस जा रही थी तब भी मन में एक उदासी थी। सही कहा गया है कि दिल्ली दिल वालों की होती है और मेरा दिल भी उमा मैडम से जुड़ गया। उन्होंने मुझे अपनी बेटी समान इतना प्यार और स्नेह दिया है कि वह मेरी 'दिल्ली वाली मां' बन गईं।

दिल्ली से विदा होते समय मैंने अपनी उमा मैडम से व्यक्तिगत रूप से तो विदाई ले ली थी लेकिन दिल से उनको भूल पाना मेरे लिए नामुमकिन है। उनका नाम लेते ही उनके साथ बिताया समय पुरानी यादों को ताजा कर देता है। इस प्रकार अनजाने में मिली उमा मैडम मेरे लिए 'दिल्ली वाली मां' कब बन गई पता ही नहीं चला। उनसे वापस मेरी मुलाकात कभी होगी या नहीं ये मैं नहीं जानती। लेकिन उनकी यादें मुझे हमेशा उनके पास ले जाती हैं। और उनकी खीर-पूड़ी आज भी मुझे मेरे जन्मदिवस पर बहुत याद आती हैं। कभी उनकी डांट तो कभी उनका प्यार मुझे आज भी उनकी याद दिलाता है। आज जब भी उनसे बात होती है तो उनके साथ वापस उन पुरानी यादों में, मैं खो जाती हूं.....कुछ ऐसी ही हैं मेरी 'दिल्ली वाली मां'।

आज की इस मतलबी दुनिया में ऐसे अपरिचित व्यक्ति से रिश्ता जुड़ जाना, उसका निस्वार्थ प्रेम और आशीर्वाद बना रहना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। वर्ना दुनिया की इस भीड़ में बिना काम या कारण कोई किसी को नहीं जानता है। मेरा मानना है कि हमें हमेशा यह विश्वास रखना चाहिए कि हर चीज का हल होता है, आज नहीं तो कल होता है।

***

क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे शहर का राजभाषा निरीक्षण

दिनांक 16 दिसंबर 2023 को भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग के उप सचिव श्री गुरदीप सिंह द्वारा, क्षेत्रीय कार्यालय (पुणे शहर) का राजभाषा विषयक निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय, पुणे शहर द्वारा स्टाफ सदस्यों के लिए राजभाषा अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर पुणे शहर क्षेत्र के उप महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्री मेहुल दवे, पुणे अंचल के उप महाप्रबंधक (नेटवर्क) मो. महफूज निशात, उप महाप्रबंधक (नेटवर्क) श्री जयंत कुमार पट्टजोशी एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

नराकास बैठकें एवं गतिविधियां

नराकास, बालोद

दिनांक 14 दिसंबर, 2023 को बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अग्रणी जिला प्रबंधन कार्यालय, बालोद के संयोजन में गठित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बालोद की 19वीं अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक श्री प्रणय दुबे, अग्रणी जिला प्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, बालोद की अध्यक्षता में आयोजित की गई। उक्त बैठक में सम्पन्न हुई। वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन करने वाले सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों को राजभाषा शील्ड तथा नराकास, बालोद के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र तथा पुरस्कार प्रदान किए गए।

नराकास, भरतपुर

दिनांक 31 अक्तूबर, 2023 को नराकास भरतपुर की अर्धवार्षिक बैठक का आयोजित किया गया। बैठक में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, भरतपुर को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुभाष ढाका द्वारा पुरस्कार ग्रहण किया गया।

स्थाई स्तंभ

अपने ज्ञान को परखिए

1. हिंदी उपन्यास मुझे पहचानो के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार-2023 किसने जीता?
(क) नीलम शरण गौर (ख) संजीव
(ग) विजय वर्मा (घ) गजेसिंह राजपुरोहित

2. हाल ही में, किस सुंदरी ने मिस इंडिया यूएसए 2023 का ख़िताब जीता है
(क) अनीता खन्ना (ख) नीलम चौधरी
(ग) मधुबाला राव (घ) रिजुल मैनी

3. प्रतिवर्ष दुनियाभर में मानवाधिकार दिवस किस तारीख को मनाया जाता है?
(क) 10 दिसम्बर को (ख) 11 दिसम्बर को
(ग) 12 दिसम्बर को (घ) 14 दिसम्बर को

4. किस देश की टेनिस टीम ने डेविस कप 2023 का खिताब जीता है?
(क) ऑस्ट्रेलिया (ख) इटली
(ग) अमेरिका (घ) सर्बिया

5. निम्नलिखित में से पश्मीना ऊन किस जंतु से प्राप्त किया जाता है?
(क) भेड़ (ख) ऊंट (ग) बकरी (घ) खरगोश

6. कटे हुए सेब का रंग कुछ देर बाद किस पदार्थ की वजह से भूरा हो जाता है?
(क) पोटेशियम ऑक्साइड
(ख) एल्यूमीनियम ऑक्साइड
(ग) सोडियम ऑक्साइड (घ) आयरन ऑक्साइड

7. हाल ही में, कौन 'समान नागरिक संहिता' बिल लागू करने वाला भारत का पहला राज्य बना है?
(क) पंजाब (ख) राजस्थान
(ग) उत्तराखंड (घ) उत्तरप्रदेश

8. हाल ही में, जारी ग्लोबल फायर पावर इंडेक्स 2024 में भारतीय सेना को दुनियाभर में कौनसा स्थान मिला है?
(क) दूसरा (ख) तीसरा (ग) चौथा (घ) सातवां

9. किस लेखक/ लेखिका को हाल ही में, व्यास सम्मान 2023 मिला है?
(क) पुष्पा भारती (ख) रेखा भारद्वाज
(ग) मुकुल गोयल (घ) दीलिप सिंघवी

10. भारत के किस प्रसिद्ध स्टेडियम का नाम बदलकर निरंजन शाह स्टेडियम रखा गया है?
(क) सौराष्ट्र क्रिकेट स्टेडियम
(ख) इडन गार्डन्स स्टेडियम
(ग) डीवाई पाटिल स्टेडियम
(घ) एम. चिनास्वामी स्टेडियम

11. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में न्यायाधीशों की संख्या होती है-
(क) 10 (ख) 12 (ग) 15 (घ) 20

12. कौन सा पुरस्कार संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है?
(क) एमी अवार्ड (ख) ग्रैमी अवार्ड
(ग) ऑल-स्टार अवार्ड (घ) ऑस्कर अवार्ड

13. भारत की हरित क्रांति का जनक किसे कहा जाता है?
(क) डॉ. एमएस स्वामीनाथन
(ख) चौधरी चरण सिंह (ग) पी वी नरसिम्हा राव
(घ) नॉर्मन बोरलॉग

14. हाल ही में, भारत सरकार ने भारत-म्यांमार सीमा जिसकी लंबाई_ है पर बाड़ लगाने की योजना बनाई है।
(क) 643 किलोमीटर (ख) 1,643 किलोमीटर
(ग) 2,643 किलोमीटर (घ) 3,643 किलोमीटर

15. इसरो के गगनयान मिशन से पहले अंतरिक्ष में उड़ान भरने वाली महिला रोबोट यात्री का नाम क्या है?
(क) व्योमनॉट (ख) गगनयात्री
(ग) एस्ट्रोनॉटिला (घ) व्योममित्र

16. 26 दिसंबर, 2023 को भारतीय नौसेना द्वारा कमीशन किए गए नवीनतम स्टील्थ गाइडेड मिसाइल विध्वंसक का नाम क्या है?
(क) आईएनएस विशाखापत्तनम
(ख) आईएनएस मुंबई (ग) आईएनएस इंफाल
(घ) आईएनएस ब्रह्मोस

17. एनसीसी का पूर्ण रूप क्या है?
(क) राष्ट्रीय कैडेट परिषद (ख) राष्ट्रीय कैडेट कोर
(ग) उत्तर सांस्कृतिक सम्मेलन
(घ) राष्ट्रीय कैडर समिति

18. वन अनुसंधान संस्थान कहाँ स्थित है?
(क) जमशेदपुर, झारखंड (ख) तिरुवनंतपुरम, केरल
(ग) देहरादून, उत्तराखंड (घ) गुवाहाटी, असम

19. किस प्रकार की प्राकृतिक आपदा ने भारत को पापुआ न्यू गिनी को तत्काल राहत सहायता प्रदान करने के लिए प्रेरित किया?
(क) भूकंप (ख) सुनामी
(ग) चक्रवात (घ) ज्वालामुखी का विस्फोट

20. भारत विश्व का पहला पोर्टेबल अस्पताल, 'आरोग्य मैत्री ऐड क्यूब' का अनावरण 02 दिसंबर 2023 को किस शहर में किया गया?
(क) गुरुग्राम (ख) नोएडा (ग) हरियाणा
(घ) नई दिल्ली

(उत्तर के लिए पेज नं. 41 देखें)

स्थाई स्तंभ

बैंकिंग शब्द मंजूषा

Affirmative covenant सकारात्मक प्रसंविदा

ऋणदाता के प्रलेखों में ऐसा प्रावधान, जिसके अनुसार उधारकर्ता से भविष्य में कुछ करने की अपेक्षा की जाती है। जैसे यह कि उधारकर्ता मीयादी ऋण के दौरान वार्षिक लेखापरीक्षित वित्तीय विवरण उपलब्ध कराए।

Balloon mortgage एकमुश्त बंधक

ऐसा बंधक जिसमें बंधक करार अवधि के समाप्त होने के समय भी प्रारंभिक मूलधन का कुछ भाग और कुछ ब्याज बकाया रहता है। इस प्रकार के बंधक में अवधि की समाप्ति के समय शेष ऋण की चुकौती करने के लिए एकमुश्त राशि का भुगतान अपेक्षित है।

Co-financing सह-वित्तपोषण

सह-वित्तपोषण को उस व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके अंतर्गत बैंकों/वित्तीय संस्थाओं का समूह किसी ऐसी बड़ी परियोजना का वित्तपोषण करने के लिए संयुक्त कार्रवाई और परस्पर सहायता के लिए सहमत हो जाए, जिसके बारे में यह समझा जाता हो कि किसी एक बैंक/वित्तीय संस्था के संसाधनों की दृष्टि से वह बहुत बड़ा है या उसमें बहुत बड़े जोखिमों की आशंका है। निम्नलिखित महत्वपूर्ण तत्वों के कारण सह-वित्तपोषण का प्रस्ताव किया जाता है (क) किसी एक बैंक/वित्तीय संस्था के पास उपलब्ध संसाधनों की दृष्टि से यह संभव नहीं हो कि उनसे किसी उपक्रम की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके। (ख) उसमें निहित जोखिम उठाना किसी एक बैंक/वित्तीय संस्था के बूते की बात न हो। (ग) अग्रिम राशि का बेहतर ढंग से नियंत्रण और पर्यवेक्षण किया जाता हो।

Financial education वित्तीय शिक्षण

वित्तीय शिक्षण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा वित्तीय ग्राहक/निवेशक वित्तीय उत्पादों, संकल्पनाओं एवं जोखिम के बारे में जानकारी प्राप्त करता है तथा इन उत्पादों के उपभोग एवं जोखिम से बचाव के उपाय का पता लगाता है। वित्तीय शिक्षा हासिल करने के बाद ग्राहक सतर्क रहकर अपने फैसले करता है एवं जोखिम से बचाव में सक्षम बनने के साथ ही बेहतर वित्तीय उत्पादों के प्रयोग की स्थिति में होता है तथा आवश्यकता पड़ने पर किससे संपर्क करना है, इसकी जानकारी भी उसे होती है।

Interest rate swaps ब्याज दर स्वैप

एक ऐसा करार, जिसके तहत दो पार्टियां काल्पनिक मूल धनराशि, जो कि आनुमानिक मूल धनराशि कहलाती है, पर ब्याज की अलग-अलग स्वरूप की अदायगियों का विनिमय कर लेती है। वस्तुतः यह विभिन्न नकदी प्रवाहों का विनिमय है, जिनमें से एक मूल धनराशि पर स्थिर ब्याज-दर वाला होता है, तो दूसरा अस्थिर ब्याज दर वाला। ऐसे स्वैप को व्युत्पादक माना जाता है, क्योंकि इसमें आधार-परिसंपत्ति का विनिमय नहीं होता है।

Law of limitation परिसीमन विधि

भारत में परिसीमन अधिनियम, 1963 के अंतर्गत परिसीमन विधि पर अमल किया जाता है। परिसीमन से विधि द्वारा निर्धारित वह समयावधि अभिप्रेत है, जिसके बाद किसी विधिक अधिकार के विशिष्ट उल्लंघन संबंधी वाद या कार्यवाही किसी न्यायालय में मान्य नहीं होगी। एक बार समयावधि बीत जाने पर किया गया उपाय कालातीत हो जाता है।

Partial endorsement आंशिक बेचान/पृष्ठांकन

वह पृष्ठांकन, जिसमें लिखत की आंशिक राशि पृष्ठांकन के जरिए अंतरित की जाती है। तथापि, कानून ऐसे आंशिक पृष्ठांकन को मान्यता नहीं देता, अतः यह अवैध है। इस सामान्य नियम का अपवाद यह है कि जहां किसी लिखत को अंशतः प्रदत्त किया गया है, आंशिक भुगतान का कथ्य परक्राम्य लिखत पर पृष्ठांकित किया जाए, जिसके बाद अवशिष्ट राशि के लिए इसका परक्रामण किया जा सकता है।

Relational Banking संबंधपरक बैंकिंग

किसी बैंक और उसके कॉर्पोरेट ग्राहकों के बीच प्रायः द्विपक्षीय बैंक-करार के रूप में दीर्घावधि संबंध की स्थापना को संबंधपरक बैंकिंग कहा जाता है। यह ग्राहक के व्यवसाय की गहन जानकारी प्राप्त करने में बैंक की सहायता करती है, जिससे वह कंपनी को ऋण-सुविधाएं प्रदान करने के बारे में जानकारी पर आधारित बेहतर निर्णय ले सकता है।

Security receipts प्रतिभूति-रसीद

जब कोई प्रतिभूतिकरण कंपनी अधिगृहीत वित्तीय आस्तियों (बैंकों के एनपीए) को संस्थागत निवेशकों को किसी योजना के तहत बेचती है तो उस स्थिति में वह निवेशकों को उक्त आस्तियों के समतुल्य नई प्रतिभूतियां अथवा प्रतिभूति - रसीद जारी करती है। इस तरह से जारी रसीदों से निवेशक को संबंधित आस्ति पर पूर्ण अधिकार प्राप्त हो जाता है।

Tax holiday करावकाश/करमुक्तता

वह अवधि, जिसके दौरान किसी कंपनी को निर्यात-प्रोत्साहन के रूप में या नया उद्योग शुरू करने के लिए किसी देश-विशेष में निगम-कर या लाभ-कर चुकाने से पूर्णतः या अंशतः छूट मिलती है।।

भारतीय रिज़र्व बैंक के बैंकिंग पारिभाषिक कोश से साभार...

रामराज्य

चंदन कुमार वर्मा
मुख्य प्रबंधक
अंचल कार्यालय, भोपाल

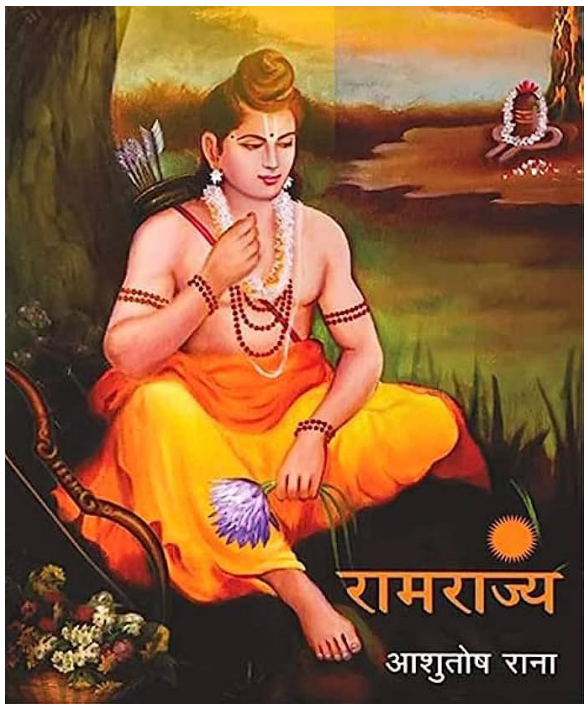

मशहूर अभिनेता, लेखक तथा प्रखर वक्ता आशुतोष राना ने अपने उपन्यास **'रामराज्य'** की रचना की है। आशुतोष राना द्वारा लिखित उपन्यास **'रामराज्य'** रामकथा तथा रामकथा से जुड़े पात्रों को नए ढंग से देखने एवं परखने की दृष्टि देता है तथा विभिन्न मिथकों एवं कथाओं के माध्यम से रामकथा को एक नए रूप में हमारे सामने रखता है। **'रामराज्य'** आरंभ से अंत तक रामकथा से जुड़े मिथकों एवं प्रसंगों की नई व्याख्या करता है तथा रामायण, रामचरित मानस और रामकथा से जुड़े बाकी ग्रंथों में रामकथा से जुड़े प्रमुख पात्रों को नए रूप एवं स्वरूप में सामने रखने का प्रयास करता है। मध्यप्रदेश सरकार ने इस पुस्तक को **वर्ष 2020 के मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी सम्मान** से अलंकृत किया है।

श्रीराम से जुड़े महाकाव्यों, ग्रंथों तथा रामलीला के दौरान प्रसारित होने वाली रामलीलाओं में अक्सर खलनायिका के तौर पर प्रस्तुत की जाने वाले माता कैकेयी तथा रावण की बहन शूर्पणखा जैसे पात्रों को आशुतोष राना ने 'रामराज्य' में नायिकत्व प्रदान करने का प्रयास किया है। आशुतोष राना ने यह स्थापित करने का प्रयास किया है कि माता कैकयी ने श्रीराम के कहने पर ही राजा दशरथ से श्रीराम के लिए 14 वर्षों का वनवास मांगा था। उपन्यास में श्रीराम और माता कैकयी के बीच हुए संवाद में श्रीराम महाराज दशरथ से अपने लिए 14 वर्षों के वनवास की मांग करते हुए कहते हैं – **''मात्र राजा और राजधानी का सबल होना 'राज्य' की सबलता नहीं मानी जाती मां। किसी का 'राज' होने और किसी का 'राज्य' होने में अंतर होता है मां। राजा की उपस्थिति में सब ठीक रहना राजा की राज करने की कुशलता का प्रमाण है किंतु उसकी अनुपस्थिति में भी उसकी प्रजा सबल, सुरक्षित, सृजनशील, संपन्न और सकारात्मक हो, यह उसके राज्य की सफलता का प्रमाण होता है। राज में राजा का महत्त्व होता है, किंतु राज्य में प्रजा महत्त्वपूर्ण हो जाती है। राज की धारणा निर्भरता की पोषक है तो राज्य की अवधारणा आत्मनिर्भरता को पल्लवित करती है।''**

''मैं रामराज को नहीं, रामराज्य को स्थापित करना चाहता हूं। जहां व्यक्ति से अधिक महत्त्व विचार का, व्यवस्था का हो। जहां प्रजा के रक्षण और पोषण का कार्य कोई व्यक्ति नहीं, अपितु विचार करते हों। प्रजा व्यक्तिपूजक नहीं, विचारपूजक हो। वह हुतात्माओं के चरणों को नहीं, उनके आचरणों को धारण करे। मैं व्यक्ति के नहीं, व्यवस्था के महत्त्व को बढ़ाना चाहता हूं मां। स्वयं के उत्थान के लिए व्यक्ति को नीतिनिपुण होना चाहिए किंतु समाज के उत्कर्ष के लिए उसका प्रीतिनिपुण होना आवश्यक होता है।''

पुस्तक में लेखक ने यह स्थापित करने का प्रयास किया है कि वह श्रीराम और रावण के बीच हुए युद्ध का कारण बनती है ताकि रावण की मृत्यु नहीं बल्कि उसका अंत हो। लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा के नाक-कान काट कर उसे अपंग किए जाने की घटना को अलग ढंग से चित्रित करते हुए लेखक ने यह उल्लेख किया है कि सुपर्णा या शूर्पणखा के प्रणय निवेदन को तर्कों के साथ लक्ष्मण द्वारा ठुकराए जाने को ही सुपर्णा ने उसे अपना मान-मर्दन समझा और उसे ऐसा महसूस हुआ कि लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट कर उसे अपंग बना दिया। राम और कैकेयी के बीच सवाल-जवाब के जरिए यह संदेश दिया गया है कि राम सिंहासन पर बैठने के इच्छुक नहीं थे, लेकिन कैकेयी

लगातार इस पर बल देती रहीं कि सिंहासन पर राम को ही बैठना चाहिए। साथ ही राम ने ही कैकेयी को बाध्य किया कि वह राजा दशरथ से अपने दो वरदान मांग कर उनके वन जाने के मार्ग में सहायक बनें। यह घटना लिख कर आशुतोष कैकेयी के खलनायिका वाले मिथक को तोड़ते हैं। राम और कैकेयी के बीच हुए संवादों के जरिए बताया गया है कि राम की मां तो कौशल्या थीं लेकिन वास्तव में वह कैकेयी ही है जिसने राम को जीवन, सत्य, कर्तव्य, जिम्मेदारी के भावों से परिपूर्ण किया।

पुस्तक में कुंभकर्ण को एक वैज्ञानिक के रूप में दिखलाया गया है। कुंभकर्ण के द्वारा किए गए आविष्कारों को दुनिया से छिपाने के लिए रावण ने यह भ्रम फैला रखा था कि कुंभकर्ण छह महीने सोता तथा छह महीने जगता है। वस्तुतः कुंभकर्ण दुनिया की नजरों से छिपकर रावण के लिए यंत्र बनाता है, जिसका प्रयोग करके रावण अपने बाहुबल का लोहा मनवाता है। राम और कुंभकर्ण के बीच हुए युद्ध के दौरान भी उसे एक रोबोट-सा लौह मानव के भीतर बैठ कर संचालित करता दिखाया गया है।

रामकथाओं में उल्लेखित रावण की नाभि में व्याप्त अमृतकुंड को भी लेखक ने अलग एवं नए ढंग से चित्रित किया है। पुस्तक में श्रीराम और विभीषण के संवाद में लेखक लिखते हैं - **''लंकाधिपति विभीषण, अमृत का अर्थ होता है जिसे धारण करने से हम मरें नहीं। जिन कामनाओं, वासनाओं, इच्छाओं को हम अपनी मृत्यु का कारण मानते हैं, वस्तुतः वे ही हमें जीवित रखती हैं। जब तक लेशमात्र भी इनका अस्तित्व हमारे अंदर वर्तमान रहता है तब तक हम जीवित रहते हैं। हमारी कामनाएं, वासनाएं, इच्छाएं, हमारा पुरुषार्थ, हमारा ध्येय ही है जो हमें मरने नहीं देता। जिसे आप रावण की नाभि में वर्तमान अमृतकुंड कह रहे हैं, वे रावण की वही अतृप्त इच्छाएं, वासनाएं हैं जो तृप्त होना चाहती हैं जिससे रावण स्वयं को रिक्त करते हुए इस संसार से मुक्त हो सके। विगत नौ दिनों से यह वनवासी राम वे सारे उद्यम कर रहा है जिससे रावण अपने अंदर वर्तमान ईर्ष्या, द्वेष, प्रतिहिंसा, काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, माया, मत्सर रूपी सभी वासनाओं से मुक्त हो सके।''** पुस्तक में लेखक ने रावण की अतृप्त इच्छाओं, वासनाओं को उसकी नाभि में व्याप्त अमृतकुंड कहा है, जिसका शमन करके श्रीराम रावण का अंत करके श्रीराम नर से नारायण की प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं।

श्रीराम के द्वारा माता सीता को त्याग किए जाने की घटना की व्याख्या भी **'रामराज्य'** में बिल्कुल अलग ढंग से की गई है। श्रीराम ने अपनी संकल्प शक्ति, अपनी प्राणवायु माता सीता को अपने मन में धारण करते हुए अपनी प्रजा के असंतोष को दूर करने के लिए माता सीता का परित्याग करते हैं। पुस्तक के सीता-परित्याग अध्याय में श्रीराम धोबी से कहते हैं - **''स्वयं के संतोष और संताप के निवारण के लिए किसी को मन, कर्म, वचन से सदा के लिए तजना 'त्याग' कहलाता है, किंतु 'पर' (दूसरे) के असंतोष और असुविधा के निवारण के लिए किसी का त्याग करना 'परित्याग' की श्रेणी में आता है। मैं सम्राट राम, सीता को स्वयं में धारण करते हुए प्रजा के असंतोष को समाप्त करने के लिए उनका त्याग नहीं, परित्याग करता हूं।''**

''साथ ही एक सद्गृहस्थ के नाते संकल्प लेता हूं कि मैं सीताराम जीवनपर्यंत अपना सम्पूर्ण जीवन उसी स्थिति में व्यतीत करूंगा, जिस स्थिति में मेरी धर्मनिष्ठ पत्नी सीता रहेंगी।''

पुस्तक में माता सीता के परित्याग का श्रीराम द्वारा लिए गए निर्णय पर भगवान शंकर कहते हैं - **''आप धनी हैं राम! जैसे मैंने संसार के कल्याण के लिए हलाहल को स्वीकार किया था वैसे ही आपने सीता के कल्याण, उनके गौरव, मान की रक्षा के लिए अपमान, प्रवंचना, तिरस्कार, आरोप, प्रत्यारोप के गर्ल को सहज ही स्वीकार कर लिया।''**

'रामराज्य' पुस्तक का लेखक मूलतः सिनेमा जगत से जुड़ा हुआ बेहतरीन कलाकार तथा प्रखर वक्ता है। संभवत: यही कारण है कि उपन्यास की भाषा शैली में एक प्रकार की गतिशीलता है, जिसे पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि रामकथा के पात्र हमारे आंखों के सामने संवाद कर रहे हैं। संस्कृतनिष्ठ हिंदी का प्रयोग करते समय वर्तमान समय के पाठकों को ध्यान में रखते हुए लेखक ने पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ में कठिन प्रतीत होने वाले शब्दों का प्रचलित अर्थ भी दे दिया है पुस्तक में दिया गया सूक्ति वाक्य इस पुस्तक को और अधिक रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रभावशाली बनाता है। उदाहरण के लिए रावण और मंदोदरी के बीच के संवाद को देखा जा सकता है- **''राम ने मुझे समझा दिया कि सुख धन में नहीं, मन में होता है, तभी तो विपुल धन के बीच रहते हुए रावण असंतोष और दुःख की अग्नि में जलता रहा और राम वन में रहते हुए भी संतोष और सुख से अपनी जीवन यात्रा पूरी कर रहे हैं।''** इसी प्रकार के सूक्ति वाक्यों से उपन्यास भरा पड़ा है, जो पाठकों के ज्ञान में वृद्धि तो करता ही है तथा पाठकों को जीवन के विभिन्न पड़ावों में सही-गलत, उचित-अनुचित का निर्णय लेने हेतु सक्षम बनाता है।

***

चित्र बोलता है।

1

धूप और छांव का बिछौना है
जहां मिला आसमान वहीं सोना है
खानाबदोस है जिंदगी, घूमना फिरना है
आसान होगी राह जीवन की क्यों रोना है

दर्शित पोद्दार, लिपिक
क्षेत्रीय कार्यालय, छत्रपती संभाजीनगर

2

परिवार जब साथ होता है
सब मुश्किलों का हल होता है
गांव नगर शहर सब हमारे हैं
हम कब किसी परेशानी से हारे हैं

दीपिका सिंह, अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी

3

कितने अचिंतित बच्चे नजर आते
माँओं के संरक्षण में मौज मनाते
रूखा सूखा जो भी मिला है उन्हें
माँओं के आंचल में बहुत स्नेह पाते

बुली गोगोई, अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

प्रथम तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रू. 500 की राशि दी जा रही है।

'चित्र बोलता है' के स्थायी स्तंभ के अंतर्गत जुलाई-सितंबर, 2023 अंक में प्रकाशित चित्र पर पाठकों से काफी उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाएं/रचनाएं प्राप्त हुई हैं। पाठकों से अनुरोध है कि इस शृंखला में प्रकाशित इस चित्र पर आधारित अपने विचार पद्य के रूप में हमें अधिकतम चार पंक्तियों में लिख कर भेजें। श्रेष्ठ तीन रचनाओं को पुरस्कृत (प्रत्येक को रू. 500/-) किया जाएगा और उन्हें हम 'अक्षय्यम्' के आगामी अंक में भी प्रकाशित करेंगे। पाठक अपने विचार हमें डाक से या ई-मेल पर अपने व्यक्तिगत विवरण और स्वरचित घोषणा सहित 15 अप्रैल, 2024 तक भेज सकते हैं।

प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में हास्य कवि सम्मेलन आयोजित

दिनांक 18 दिसंबर, 2023 को प्रधान कार्यालय, बड़ौदा में वार्षिक राजभाषा समारोह – 2023 के अवसर पर हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कवि सम्मेलन में प्रसिद्ध हास्य कवि श्री चिराग जैन (दिल्ली), श्री हिमांशु बवंडर (उज्जैन) और श्री अभिसार शुक्ल (दिल्ली) को आमंत्रित किया गया था। मुख्य महाप्रबंधक श्री अजय कुमार खोसला और मुख्य महाप्रबंधक श्री मनमोहन गुप्ता और मुख्य अतिथि प्रोफेसर भरत मेहता द्वारा आमंत्रित कवियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री संजय सिंह, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) और श्री पुनीत कुमार मिश्र, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) उपस्थित रहे।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, वडोदरा का वार्षिक समारोह 2023

दिनांक 21 दिसंबर, 2023 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, वडोदरा का वार्षिक समारोह 2023 का आयोजन किया गया। समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग रहीं समारोह में वडोदरा के सुप्रसिद्ध वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. माणिक मृगेश को भाषा के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु समिति के मंच से मुख्य महाप्रबंधक श्री अजय कुमार खोसला द्वारा 'सयाजी साहित्य सम्मान–2023' प्रदान किया गया। इस अवसर पर समिति के उपाध्यक्ष एवं महाप्रबंधक, बड़ौदा अंचल श्री योगेश कुमार अग्रवाल, प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री संजय सिंह, और बैंक ऑफ़ बड़ौदा के वरिष्ठ कार्यपालकों के अलावा सदस्य बैंकों के वरिष्ठ कार्यपालक भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सदस्य सचिव, नराकास (बैंक), वडोदरा एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने किया।

नूतन वर्षाभिनंदन

नूतन का अभिनंदन हो
प्रेम-पुलकमय जन-जन हो!
नव-स्फूर्ति भर दे नव-चेतन
टूट पड़ें जड़ता के बंधन;
शुद्ध, स्वतंत्र वायुमंडल में
निर्मल तन, निर्भय मन हो!
प्रेम-पुलकमय जन-जन हो,
नूतन का अभिनंदन हो!
प्रति अंतर हो पुलकित-हुलसित
प्रेम-दिये जल उठें सुवासित
जीवन का क्षण-क्षण हो ज्योतित,
शिवता का आराधन हो!
प्रेम-पुलकमय प्रति जन हो,
नूतन का अभिनंदन हो!

फणीश्वरनाथ रेणु